स्वाध्याय-स्तवन माला
भगवान महावीर

वैराग्यपूर्ण उपदेशों का विविध कवियों द्वारा

रचित

पुरानी तथा नई तर्जों में चार सौ तेईस काव्यों का

अनुपम संग्रह

संग्राहक :
सम्पतराज डोसी
संयोजक
स्वाध्याय संघ

स्वाध्याय-स्तवन माला

भगवान महावीर

वैराग्यपूर्ण उपदेशों का विविध कवियों द्वारा

रचित

पुरानी तथा नई तर्जों में चार सौ तेईस काव्यों का

अनुपम संग्रह

संग्राहक :
सम्पतराज डोसी
संयोजक
स्वाध्याय संघ

प्रकाशकीय–

स्वाध्याय स्तवन माला का पंचम परिवर्द्धित संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मंडल को हार्दिक प्रसन्नता आभासित हो रही है।

थोड़े ही समय में छः हजार प्रतियों का समाप्त हो जाना पुस्तक की रोचकता, आवश्यकता एवं उपयोगिता स्वतः स्पष्ट प्रमाणित होती है। स्तवनों की बीसों पुस्तकों का कार्य इस स्तवन माला में सन्निहित है। धार्मिक पाठशालाओं, संगीत प्रेमियों, स्वाध्यायियों आदि के लिये तो यह संग्रह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

प्रत्येक संस्करण में नये एवं अच्छे २ स्तवनों, संवादों आदि सामग्री की अभिवृद्धि करते करते इस पंचम आवृत्ति तक स्तवनों की संख्या ४२३ तक और पृष्ठ संख्या लगभग ४८० तक पहुँच गई। इस प्रकार पुस्तक के पृष्ठों की संख्या निरन्तर बढ़ने के साथ साथ कागज, छपाई आदि की लगातार मंहगाई को देखते हुए भी इस आवृत्ति में लगभग ५० और नये स्तवनों, आदि बढ़ाने पर भी पुस्तक की कीमत में परिवर्तन नहीं किया गया है। पक्की बाइंडिग

स्वाध्याय स्तवनमाला : प्राप्ति स्थान :

1. सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003

2. स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001

3. स्वाध्याय संघ, शाखा-महावीर भवन, सवाई माधोपुर

प्रबन्ध-सम्पादन

पार्श्व कुमार मेहता

'साहित्य रत्न, धर्मरत्न'

संग्राहक :

सम्पतराज डोसी

मूल्य 11.00

पंचम संस्करण : 2000

विक्रम संवत् 2040

अक्टूबर, 1983

ग्रौर प्लास्टिक कवर ग्रादि से पुस्तक ग्रनेकों वर्षों तक पाठकों के उपयोग में ग्रायेगी।

पुस्तक में संग्रहित सामग्री के भावों को जीवन में उतार कर पाठकगण स्व पर के कल्याण के भागी बनेंगे तो सामग्री के रचनाकारों, संग्रहकर्त्ता एवं मंडल का यह प्रयास विशेष सफल समझा जायगा।

मण्डल परिवार श्री सम्पतराज जी डोसी, संयोजक, स्वाध्याय संघ, का बहुत ग्राभारी है जिन्होंने उक्त स्तवनों का मार्मिक संग्रह किया है। साथ ही श्री पार्श्व कुमारजी मेहता का भी ग्राभारी है जिन्होंने प्रबन्ध सम्पादन करने में ग्रपना योगदान प्रदान किया है। हम भविष्य में भी इसी प्रकार सबके सहयोग की कामना करते हैं।

निवेदक

उमरावमल ढढ्ढा ग्रध्यक्ष	टीकमचन्द हीरावत मन्त्री

सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू बाजार
जयपुर—302 003 (राजस्थान)

अनुक्रमणिका

स्तवन (अकारादिक्रमानुसार)

(अ)

(आ)

(ख)

(ग, घ)

(च)

(थ)

(द)

(थ)

(द)

(म)

(य)

(र)

(ल)

(व)

(श)

(स)

प्रमुख २ विषयों के स्तवनों की पृष्ठ संख्याएं

।। मंगलाचरण ।।

(१)

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजलि नमं संति।
तं देव-देव महियं, सिरसा वंदे महावीरम् ।।

अर्थ :—जो देवों के भी देव है। जिनको देवगण अन्जलि जोड़े नमस्कार करते हैं, उन देव-देवों से पूजित भगवान महावीर स्वामी को सिर झुकाकर वंदन करता हूं।

(२)

एगो वि नमुक्कारो, जिणवर व सहस्स वद्धमाणस्स।
संसार–सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा।।

अर्थ :—जिनवर श्रेष्ठ श्री वर्द्धमान प्रभु को किया गया एक भी नमस्कार भक्त नर एवं नारी को भवसागर से पार कर देता है।

(३)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः ।।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।

अर्थ :—अरिहंत भगवान इन्द्र से पूजित और सिद्ध मोक्ष में स्थित हैं। जिन-शासन की उन्नति करने वाले आचार्य और सिद्धान्त ग्रन्थों को पढ़ने व पढ़ाने वाले पूज्य उपाध्याय तथा सम्यग्ज्ञान दर्शन चारित्र रूप रत्नत्रय के आराधक श्री संत मुनिराज ये पांचों परमेष्ठी प्रतिदिन हमारा मंगल करें।

(४)

वीरः सर्व-सुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्म-निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥
वीरा-त्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं-वीरस्य घोरं तपो ।
वीरे श्री धृति-कान्ति-कीर्ति-निचयो,-हे वीर ! भद्रं दिश ॥

अर्थ :—श्री वीर सब सुरेन्द्र एवं असुरेन्द्र से पूजित है। श्री वीर प्रभु को विद्वान सेवन करते हैं। श्री वीर ने अपने कर्म समूह का नाश किया है। उस श्री वीर को हमारा नमस्कार हो। श्री वीर भगवान से चतुर्विध तीर्थ की प्रवृत्ति हुई। श्री वीर का कठोर तप है। वीर भगवान में श्री, धृति, कान्ति और कीर्ति का समूह विद्यमान है। ऐसे हे वीर भगवान ! हमें भद्र कल्याण प्रदान करें। अर्थात् सन्मार्ग दिखलावें।

(५)

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ।
मंगलं स्थूलिभद्राद्याः, जैनधर्मो ऽस्तु मंगलम् ॥

अर्थ :—भगवान श्री वीर मंगल रूप है, श्री गौतम प्रभु मंगल हैं। स्थूलिभद्र आदि मुनीश्वर मंगल रूप है, जैन धर्म मंगल रूप हो।

(६)

तुभ्यं नमस्त्रि भुवनार्तिहराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिनः भवोदधिशोषणाय॥

अर्थ :—हे नाथ! त्रिभुवन की पीड़ा हरण करने वाले आपको नमस्कार हो। पृथ्वीतल के निर्मल भूषण आपको नमस्कार हो। त्रिभुवन के परमेश्वर, आपको नमस्कार हो। भवसागर को सुखाने वाले हे जिनेन्द्र, आपको नमस्कार हो।

(७)

अविनाशी अविकार, परमरस धाम है।
समाधान सर्वज्ञ, सहज अभिराम है॥
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, अनादि अनंत है।
जगत शिरोमणि सिद्ध, सदा जयवन्त है॥

(८)

चौवीसमा महावीर शूरवीर महाधीर,
वाणी मीठी खाँड खीर सिद्धारथ नन्द है।

नागणी सी नारी जाण, घट में वैराग आण,

जोग लियो जग भाण छोड्या मोह फंद है।

चवदह हजार संत, तार दिया भगवंत,

कर्मों का किया अन्त पाम्या सुख कंद है।

भणे कवि 'चन्द्रभाण' सुणो हो विवेकवान्,

महावीर धरियां ध्यान उपजे आनन्द है॥

(६)

॥ वीर हिमाचल से निकसी ॥

वीर हिमाचल से निकसी,

गुरु गौतम के मुख-कुण्ड ढरी है।

मोह महाचल भेद चली,

जग की जड़ता सब दूर करी है॥

ज्ञान-पयोनिधि मांहि रली,

बहु भंग तरंगनतें उछरी है।

ता शुचि शारद गंग नदी,

प्रणमी अंजली निज शीश धरी है॥१॥

ज्ञान सुनीर भरी सरिता,

सुरधेनु प्रमोद सुखीर निधानी।

कर्मज व्याधि हरंत सुधा,

अघमैल हरंतशिवा कर मानी॥

वीर जिनागम ज्योति बड़ी,

सुरवृक्ष समान महा सुख दानी।

लोक अलोक प्रकाश भयो,

मुनिराज बखानत है जिनवाणी ॥२॥

शोभित देव विषे मघवा

उडुवृन्द विषे शशि मंगल कारी।

भूप समूह विषे भरतेश्वर,

केशव जोध विषै अनुहारी ॥

नागन में धरणेन्द्र बड़ो,

चमरेन्द्र असुरन में अधिकारी।

त्यों जिनशासन संघ विषे,

मुनिराज दिपे श्रुतज्ञान भंडारी ॥३॥

॥ छन्द ॥

(१०)

कैसे करि केतकी कनेर एक कह्यो जाय,
आक-दूध गाय दूध अन्तर घनेर है।
रीरी होत पीरी पर हूंस करे कंचन की,
कहां काग-वानी कहां कोयल की टेर है।
कहां भानु तेज कहां आगियो विचारो कहां,
पूनम को उजारो कहां अमावस अन्धेर है।
पक्ष छोड़ि पारखी निहारो नेक नीके करि,
जैनवैन और वैन अन्तर घनेर है ॥४॥
वीतराग वाणी सांची मुक्ति की निशानी जानी,
सुकृत की खानी ज्ञानी आप मुख बखानी है।

परेशानी न हैरानी, दशा बन जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता, तो बेड़ा पार हो जाता....अगर। ३।

जमीं का विस्तरा होता, व चादर आसमा बनता।
मोक्ष गद्दी पे फिर प्यारे, तेरा अधिकार हो जाता""अगर। ४।

चढ़ाते देवता तेरे, चरण की धूल मस्तक पर।
अगर जिन देव की भक्ति में, मन इकतार हो जाता....अगर। ५।

"राम" जपता अगर माला का, मनका एक भक्ति से।
तो तेरा घर ही भक्तों के, लिये दरबार हो जाता""अगर। ६।

(१५)

॥ अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय ॥

अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय।
साधु जीवन जय जय, जिन धर्म जय जय। १।

अरिहन्त मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल।
साधु जीवन मंगल, जिन धर्म मंगल। २।

अरिहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम।
साधु जीवन उत्तम, जिन धर्म उत्तम। ३।

अरिहन्त शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं।
साधु जीवन शरणं, जिन धर्म शरणं। ४।

चार शरण दुख हरण जगत में, और न शरणा कोई होगा।
जो भव्य प्राणी करे आराधन, उसका अजर अमर पद होगा। ५।

॥ अगर पत्ते के हिलने से ॥

[–कव्वाली–]

अगर पत्ते के हिलने से, पता ईश्वर का मिलता है।
उसी के हुकम से बागों में, इक-इक फूल खिलता है।
तो जब जालिम का नश्तर. बेकसों के दिल पे चलता है।
बता यह भी तेरे परमात्मा का, हुकम चलता है।
गलत है अगर तू परमात्मा, को यों समझताहै। १।

अगर परमात्मा सब काम दुनिया के चलाता है।
वही दुनिया रचाता है इसे खुद ही सजाता है।
तो क्यों हमको सुलाता और, चोरों को बुलाता है।
भयानक आंधियां तूफान, और भूंचाल लाता है।
मुझे ये भेद न परमात्मा, का समझ आता है। २।

हर इक इनसान और हैवान, अगर उसका बनाया है।
गरज चींटी से हाथी तक, सभी में उसकी माया है।
तो क्यों इक दूसरे के हाथों से, उनको सताया है।
कोई रहजन बनाया है, किसी का घर लुटाया है।
तू ही बतला कि इसमें भेद, क्या उसने छिपाया है। ३।

अजब हाकम है पहले चोर, से चोरी कराता है।
न चोरों को हटाता है, न मालिक को जगाता है।
मगर जब चोर चोरी करके, घर में पहुंच जाता है।
तो फिर क्यों बाद में पोलीस, को हरकत में वो लाता है।
कहीं रिश्वत दिलाता है, कहीं कैदें कराता है। ४।

कसाई को छुरा देकर क्यों, नाहक खूं बहाता है।
ये क्यों हैवान को इनसान, का खाना बनाता है।

किसी की जान जाती है, किसी को लुत्फ आता है।
कोई आंसू बहाता है, कोई खुशियां मनाता है।
मेरे परमात्मा को खेल ये, हरगिज न भाता है। ५।

तेरा कहना कि हर इक फल, किए कर्मों का पाता है।
सही है पर इसे क्यों मुफ्त, का जालिम बनाता है।

मुझे ये फिलसफा तेरा, न हरगिज समझ आता है।
क्योंकि फल बद खुद ही, फिर इसका रूल बखाना है।
तेरा परमात्मा पहले ही क्यों न रोक पाता है। ६।

मगर परमात्मा को मैंने, निराकार समझा है।
उसे निर्दोष और निरपक्ष, निर आहार समझा है।

अमर आनन्द, सत चित, जलवाए अनवार समझा है।
तू क्यों दुनियां के धंधों में, उसे गिरफ्तार समझा है।
हकीकत ये है तू परमात्मा, को गलत समझा है। ७।

(१८)

॥ अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर ॥

अरिहन्त प्रभु का शरणा लेकर, क्रोध भाव को दूर करें।
क्षमा भाव से शान्ति धरकर, मीठा ही व्यवहार करें। १।

सिद्ध प्रभु का शरणा लेकर, मान बड़ाई दूर करें।
विनीत भाव से छोटे बनकर, लघुतम का व्यवहार करें। २।

आचार्य का शरणा लेकर, झूठ कपट का त्याग करें।
सीधा सादा रहना अच्छा, जीवन सारा सरल करें। ३।

उपाध्याय का शरणा लेकर, खोटी तृष्णा दूर करें।
जरूरत से जो ज्यादा लक्ष्मी, अपना क्या कल्याण करें। ४।

मुनियों के चरणों में गिरकर, अपना कुछ उद्धार करें।
मूल कषायों को क्षय करके, वीतराग पद प्राप्त करें। ५।

॥ अरे करले रे करणी ॥

[तर्ज—तेरे द्वार खड़ा भगवान् भगत]

मेरा मान न बन नादान, अरे करले रे करणी,
अरे करले रे करणी,
तेरा होगा बड़ा रे कल्याण कि, एक दिन पायेगा तू निर्वाण ।टेर।

लाख चोरासी योनि भंवर में, समय अनन्त गंवाया ।
प्रबल पुण्य से दुःख उठाते, यह मानव तन पाया रे ।
अब चेत जरा रे इन्सान, थोड़ा तो करले धरम और ध्यान ।अरे।१।

भाई बहन मां बाप देख रे, तेरे ये नाति अठारा ।
मृत्यु आयेगी जब तेरे सिर, कोई न बचावन हारा रे ।
है काल बड़ा रे बलवान, घड़ी भर भजले जरा भगवान् ।अरे।२।

देह महल धन धान्य बाग में, मस्त बना मतवारा ।
मान जिसे रे कहे तूं मेरा, वह झूठा जगत पसारा रे ।
ओ चार दिनों के मेहमान, झोली में भरले जरा सामान ।अरे।३।

छोड़ मरे जंजाल जगत का, ले ले जिनन्द सहारा ।
तीन लोक में "पारस" कहता, धर्म ही तारणहारा रे ।
कर भाव शील तप दान, सुनले रे गुरु केवल फरमान ।अरे ।४।

(२१)

॥ अरे सत्संग करने में ॥

[तर्ज : विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है]

अरे सत्संग करने में, तुझे क्यों शर्म आती है।
विना सत्संग के आयु, पशु मानिंद जाती है। टेर।

तमाशा देखने रंडी का, महफिल बीच जाते हो।
धर्म के स्थान के अन्दर, तुझे क्यों नींद आती है। अरे। १।

करे लुच्चे की तूं संगत, पिलावे वो तमाखु भंग।
फेर परनारी का परसंग, यही इज्जत घटाती है। अरे। २।

अरे सत्संग वड़ा जा में, चश्म को खोल करके देख।
तिरे सत्संग से पापी, जिसकी गिनती न आती है। अरे। ३।

अगर लाखों, करोड़ों का, करे पुण्य दान कोई है।
मगर लवमात्र की सत्संग, खास मुक्ति दिलाती है। अरे। ४।
कहे यों चोथमल पुकार, सभी है झूंठा ये संसार।
एक सत्संग जग में सार, भव सागर तिराती है। अरे। ५।

(२२)

॥ अहो कृष्ण पियारा, वचन हमारा ॥

(तर्ज : माण्ड-म्हारी आंखडल्यारो प्यारो दुलारो)
प्यारो है मरुधर देश)

अहो ! कृष्ण पियारा, वचन हमारा, सुनले कान लगाय। टेर।

सदा सरीखी ना रही रे, गेंद ज्यों पलटा खाय।
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र को भी, देवे कर्म रुलाय। अहो। १।

मदिरा योग से राज्य तुम्हारा, पल में होसी ख्वार।
नगरी सारी देखत क्षण में, बल जल होसी छार। अहो। २।

तेरा खाड़ा से तेरा मरना, जरद कुमार के हाथ।
मरेंगे जा कोशाम्बी वन में, सुन गोपीयन का नाथ। अहो। ३।

हाथी घोड़ा सब ही बलसी, जलसी भवन भण्डार।
महल महिलायत पुत्र मित्रगण, एक न चलसी लार। अहो। ४।

सुनके कृष्णजी चिन्तातुर हो, पाया दुःख अपार।
नगर हमारा नहीं जले प्रभु, ऐसा कहो उपचार। अहो। ५।

प्रभु फरमावे तप अखण्डित रहे, जब तक नहिं जलाय।
तपस्या क्षति सुर देखसी तब, नगर देसी जलाय। अहो। ६।

धर्म दलाली करले जिनसे, हो जासी कल्याण।
नरभव पाकर करणी करसी, भावी अम्मम पहिचान। अहो। ७।

(२३)

॥ अरे सबसे खमाले रे ॥

(तर्ज : तेरे द्वार खड़ा भगवान्)

यह वैर विरोध विसार, अरे सबसे खमाले रे।
अरे दिल से खमाले रे।
है आज बड़ा त्यौहार, करले रे भाई भाई से प्यार, अरे सबसे। ध्रुव।

प्राणी मात्र है मेरे भाई, यह भाव न मन में लाया,
किन्तु सबसे नित्य झगड़ कर, उल्टा वैर जगाया रे।
उल्टा वैर जगाया रे।

रे यों करत व्यवहार, थोड़ा भी मन में किया न विचार।अरे।१

दीन दुःखी इन छह कायों की, पीड़ा नहीं मिटाई,
किन्तु उनका अव्रत रखाकर पीड़ा अधिक बढ़ाई रे।
पीड़ा अधिक बढ़ाई रे।

रे समझ मूरख सरदार, कि इसका फल है नरक दरबार।अरे।२।

मात-पिता और संत सती की, सेवा नहीं बजाई,
किन्तु उनका हृदय दुखाकर, करली करम कमाई रे।
करली करम कमाई रे।

अब एक यही आधार, विनय से करले क्षमा स्वीकार।अरे।३।

आज पुण्य से नगर जयपुर, में संवत्सरी आई।
केवल कहते "पारस" सुन रे, जीवन में ला नरमाई रे।
जीवन में ला नरमाई।

अरे सफल बना त्यौहार, करले रे शत्रु मित्र से प्यार।अरे।४।

(२४)

॥ अवसर मत चूको ॥

(तर्ज—ऐवन्ता मनिवर नाव तिराई)

अवसर मत चूको मुक्ति रो मेलो, करलो प्रेम सूं। टेर।
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, चार तीर्थ गुणधारी।

इनकी सेवा करो निरो, भव सिन्धु रहो हुशियारी रे। १।

॥ अवसर मन० ॥

आगम वाणी सुण हो प्राणी, मिट जावे सब सांसा।

चारों गति में आवागमन का, हो रया अजब तमासा रे। २।

॥ अवसर मन० ॥

दया धर्म की गोठ करो नित, भाग भजन की पीवो।

नियम नशा की लाली लाकर, इण विध जुग जुग जीवो रे। ३।

॥ अवसर मन० ॥

होगा जो पुण्यवान जिन्हीं को, यह मेला मन भावे।

दूजा मेला मांय जायने, गांठ का दाम गमावे रे। ४।

॥ अवसर मन० ॥

कहे 'मुनि नन्दलाल' तणा शिष्य, सुण लेना सब भाया।

करी जोड़ अजमेर शहर में, सांवण महीने गाया रे। ५।

॥ अवसर मन० ॥

(२५)

॥ अविद्या प्रेतनी तेने द्वन्द्व कैसा मचाया है ॥

(तर्ज : अगर जिनदेव के चरणों में)

अविद्या प्रेतनी तेने, द्वन्द्व कैसा मचाया है।

सच्चिदानन्द प्रभु तज के, उपल पूजन चलायाहै ।

गोरि-गोबर गधा धूरा, पेड़ पानी पुजाया है । अ० । १ ।

पुत्र के काज बलि देना, महिष मेंढ़ा मुरग अज की ।

पति को छोड़ पर पति से, पुत्र लाना बताया है । अ० । २ ।

भोग भोगी बने जोगी, दया की रीत जाने ना ।

भंग गाँजा चरस पी के, कहे आनन्द आया है । अ० । ३ ।

पुजाये कुगुरु ऐसे, जिन्होंके धाम धन दारा ।

तिन्हों का मूढ़ लोगों को, प्रगट झूठा खवाया है । अ० । ४ ।

पुत्र के पठन पाठन में, खरच कौड़ी नहीं करना ।

ब्याह में बेअरथ धन को, लुटाना तो सिखाया है । अ० । ५ ।

दया में धर्म जग जाने, मूढ़ से मूढ़ भी माने ।

धरम के हेत हिंसा भी, करो ये तो सुनाया है । अ० । ६ ।

धर्म जो होय हिंसा से, फेर क्यों कर दया कीजे ।

ध्यान दे के लखो बुधजन, घोर अंधेर छाया है । अ० । ७ ।

सुगुरु श्री मगनमुनि ध्याई, कहे माधव अविद्या ने ।

धर्म का नाम ले लेकर, कर्म बंधन बढाया है । अ० । ८ ।

रहा मादा, बना ईश्वर, कभी उसको नहीं सकना।
असत को सत् से उत्पत्ति, बना जग क्यों हंसाया है। ८।

बनाया आस्मां तक जब, बनाते हो उसी का तुम।
रहा फिर खुद कहां कोई, ठिकाना न बचाया है। ९।

अरे भाइयों! जरा देखो, ये अपनी खोल कर आँखें।
अन्धेरा आज तक, हो-हो, जन्म यूं ही गंवाया है। १०।

नहीं है हाथ-मुख उसके, बनाया किस तरह जग को।
यूं ही कहने से क्या हासिल, रचायाहै—रचाया है। ११।

नफा जिद में नही कोई, बने हो किस लिए जिद्दी।
कि मानो त्यागकर हठ को, जो चन्दन ने सुनाया है। १२।

(२८)

अरे धार्मिकों किस प्रवाह में

अरे धार्मिकों किस प्रवाह में, अब भी बहते जाते हो।
सत्य धर्म की सही शान को, खोते या रख पाते हो। टेर।

मन्दिर में जा भक्त बने, प्रह्लाद भक्त से भी बढकर।
हिरण्यांकुश से क्रूर कर्मकारी, बन जाते घर पर आकर।
तो होगा यह प्रभु से धोखा, केवल मन बहलाते हो। अरे॥ १।

कीर्त्तन सत्संग में मीरा, सूर तुल्य रस लेते हो।
पर आचरणा में तो सूर्पण खां, का परिचय देते हो।
सत्संग में जो पाते क्या, वहीं छोडकर आते हो। अरे॥२॥

गुरुद्वारे में ग्रंथ साहब का, पाठ प्रेम से खूब किया।
बाहर आकर पी, शराब यदि भाई का भी खून किया।
सो बोलो गुरु वाणी को, कितना जीवन में लाते हो। अरे ।।३।।

मसजिद में जाते नवाज की, रखते पूरी पावन्दी।
लेकिन यदि ना पाक रहा दिल, और वृत्तियां भी गन्दी।
जो बोलो तुम हुकुम खुदा का, अदा कहाँ कर पाते हो। अरे-।।४।।

सदा चर्च में जाम सुक्राइस्ट, प्रार्थना जो करते।
पर एकांकी कट्टरता संकीर्ण, भावना जो भरते।
बने विलासी वाइबल की, शिक्षाएं कहाँ अपनाते हो। अरे-।।५।।

सामायिक स्वाध्याय संत, दर्शन तो धर्म स्थानक में।
जाल साजियाँ धोखे बाजी, करते बैठ दुकानों मे।
दर्शन सेवा शास्त्र श्रवण का, क्या यही लाभ उठाते हो। अरे-।।६

सेवा पूजा उपासना मम, क्रिया काण्ड ही धर्म नहीं।
दैनिक व्यवहारों में तुलसी हो इसका अनुसरण सही।
इसका मूल स्वरूप अणुव्रत, क्यों तुम भूले जाते हो। अरे-।।७।।

(२९)

।। अरज सुनले रे मेरी ।।

(तर्ज : तेरे द्वार खड़ा भगवान)

हे वीर प्रभु भगवान, अरज सुनले रे मेरी-२।
मैं भटक फिरा संसार, अनादि पाया नहीं रे पार।

इस जीवन के विकट मार्ग में कांटे भरे पड़े हैं।
मिथ्या दर्शन निदान माया, रास्ता रोके खड़े हैं।
रे मैं हूं बडा नादान, न जाने कैसा है अज्ञान । १ ।

पथ भी भूला राही अकेला, ज्ञान नजर पथराई ।
काम, स्नेह और दृष्टि राग के दृग भ्रम में उलझाई।
नही रहा सत्य का ज्ञान, स्वपर की नहीं रही पहचान । २ ।

मैं चेतन यह नश्वर सेना, अपने हाथ सजायी ।
आज सबल बन मुझे लूटने की रणभेरी बजायी रे ।
दो कोई 'विचक्षण' तान, अमर का दूर करो अज्ञान ॥३॥

(३०)

आ चन्दा वाली चांदनी में

तर्ज—आ बाबासा री लाड़ली..........

आ चंदा वाली चांदणी में क्यूं ललचायो रे।
मीठी मीठी लहरां में, क्यूं भान भुलायो रे।। टेर ।।

दिन बीते पखवाड़ा बीते, बीते महिना साल।
साल–साल में उमर बीते, नेड़ो आवें काल ।।
अंतर खातो खोल देख, कांई लाभ कमायो रे ।। १ ।।

मुलक-मुलक हंसे सूरज हो पूरब में परभात ।
चटक-मटक तो मझ दोपहरी, सांझ पड्या ढ़ल जाता ।:
यूं थारी गत मिनख देख, कांई मद में छायो रे ॥२॥

फूलों री कलियां ने देखो, मुरझावे हर सांझ ।
चंदे रो चांदणियों ढल जा, ज्यू आवे परभात ।।
पंच रंग धनुष तणायो नभ में, वो विरलायो रे ।।३।।

जहां तक जोर जवानी रो है, कर मन रो वहलाव ।
उमड्यो नीर नदी में भोला, कतरो व्हे ठहराव ।।
ढलक गयो उमर रो पाणी, फिर पछतायो रे ।।४।।

लाखीणी हर वड़ी मिनख मत, कोड़ी साठे हार ।
अमृत पीले सत्यधर्म रो, वेड़ों हो जावे पार ।।
'कुमुद' हिया में हेत धार, यो भजन वणायोरे ।।५।।

(३१)

आओ मेरे शिरमोर

। मुनि स्थूलिभद्र और कोशा ।

(तर्ज : मेरी छोटी सी है नांव तीरे ......)

कोशा—साथी मेरे शिर मौड़, मेरे कलेजे की कोर,
आज हर्ष हिलोर, स्वागत करु' दिल खोल के....

स्थूलिभद्र—तजो मोह के विचार, कर आतम उद्धार
तेरा होवे वेड़ा पार, जीवन मिलाओ क्यों धूल में....

कोशा—प्रीत पहले की क्यों छिटकाई,
क्यों यह निःरसता अपनाई ।

सब पा जाते हैं इस भव में ॥

झूठादि से धन नहीं मिलता,

इस भ्रम को दूर भगायेंगे। प्रिय। २।

भौतिक—प्रत्यक्ष दीखता जहां तहां,

पापी भी पैसा पाता है।

छल. फरेब, प्रपंच, ठगी करके,

पैसा वाला बन जाता है॥

धार्मिक शिक्षा पढ़ना छोड़ो,

वर्ना सुख नहीं पा सकते हो। क्या। २॥

धार्मिक—है जबर उदय मोह कर्म तुम्हें,

जो ऐसी बातें करते हो।

कुछ पुण्य किया पहले उनने

चाहे यहां पाप ही करते हो॥

है उसी पुण्य का फल पाया,

यह रहस्य तुम्हें समझायेंगे। प्रिय। ३।

भौतिक—ऐसी बातें जो तुम कहते क्या?

धार्मिक शिक्षा से जानी।

इतना सुन्दर गर ज्ञान वहां,

मिलता होवेगी मनमानी॥

मैं भी चाहता वहां पर पढ़ना,

क्या? भरती करवा सकते हो। क्या।३।

उभयपक्ष सद्प्रयत्न प्रेरणा आज फली हैं,

(धा+भी)　　　　　　　सखा सत्य को स्वीकारा।

(अ) धार्मिक शाला में पढ़ने का,
पावन व्रत हैं तुमने धारा॥
जीवन धन्य अपना होवेगा,
हम आगे बढ़ते जायेंगे। प्रिय।

(ब) धार्मिक शाला है तीर्थ धाम,
मानव को सत्पथ मिल जाता।
सिद्धान्त नियम के पालन से,
मानव मानवता पा जाता॥
तत्त्वादि ज्ञानाभ्यास सीख,
आत्मानुभव विकसायेंगे। प्रिय। ५

(स) ज्यों ज्यों नित्य नव ज्ञान सीख,
कर गहन अर्थ को जानेंगे।
अज्ञान तिमिर आवरण हटे,
ज्ञानादिक गुण प्रगटायेंगे॥
हेय ज्ञेय और उपादेय का,
भेद समझ तब पायेंगे। प्रिय। ६

(द) पापाश्रव बंध को तज कर के,
संवर शुद्ध करणी कर लेंगे।
संचित कर्मों का द्वादश तप से,
उन्मूलन तब कर देंगे॥
शुद्ध आत्म स्वरूप में रम करके,
शाश्वत सुख को हम पायेंगे। प्रिय। ७

गढ़ भोपाल के जैन रत्न,

शिक्षा मन्दिर के हम बालक।

धार्मिक शिक्षा के ही द्वारा,

होवेंगें कल के संचालक ॥

"राजेश" परिश्रम फले तभी,

सब का हित करते जायेंगे। प्रिय। ८।

(३३)

आओ भाइयों तुम्हें सुनायें

तर्ज—आओ बच्चों तुम्हें दिखायें, झाँकी हिन्दुस्तान की।

आओ भाइयों तुम्हें सुनायें, बातें हम कुछ ज्ञान की।
चिन्तामणी से भी बढ़कर, यह देही है इन्सान की ॥ टेर ॥
इस देही को पाने खातिर, सुरगण भी ललचाते हैं।
पर कर्मों में बन्धे हुए, न वह यहां पर आते हैं ॥
इस देही को धारण करके, जीव मोक्ष में जाते हैं।
तीर्थंकर आदि की पदवी ,इसी देह से पाते हैं ॥
देही मिलती उसको, जो भक्ति करता भगवान की ॥ १ ॥
तुमको भी यह देह मिली है, इसको व्यर्थ गंवाना ना।
विषयों के कीचड की इस पर, जरा भी छींट लगाना ना ॥
मदिरा अण्डे मांस आदि को, कभी भी पीना खाना ना।
सत्पुरुषों की संगत करना, कुसंगत में जाना ना ॥
और कभी न आने देना, मन में वू अभिमान की ॥ २ ॥
दीन दुःखी जो दर पर आए, उसका ना अपमान करो।

जैसा तुमसे वन पाये, वैसा श्रद्धा से दान करो ।।
अपने अडोसी पडोसी का, ना सुपने में नुकसान करो ।
सन्त पुरुष जहां पर मिल जाए, नमन करो सम्मान करो ।।
निन्दा चुगली छोड़ो गर, चाहते हो जिन्दगी शानकी ।। ३ ।।
पक्षपात को छोड़ छाड़ के साम्यभाव अपनाओ तुम ।
नास्तिकता के भाव न अपने, मन मन्दिर में लाओ तुम ।।
गुरुदेव और आत्म धर्म पर, दृढ़ विश्वास जमाओ तुम ।
पंकज के मानिन्द जगत में, अपनी उमर विताओ तुम ।।
सत्यधर्म पर कदम वढ़ाना, वाजी लाकर जान की ।। ४
अच्छा और बुरा जग अन्दर, सिर्फ नाम रह जायेगा ।
आया था यहां वान्ध के मुट्ठी, खाली हाथों जायेगा ।।
धन दौलत यह कुटुम्व कवीला, कोई काम न आयेगा ।
अपना नेक ए माल तुझे, परलोक में सुख पहुंचायेगा ।।
मान मान अय मानी वन्दे, शिक्षा यह कल्याण की ।। ५

(३४)

आओ जैनों तुम्हें वताएं झांकी जैनिस्तान की ।

(तर्ज : आओ वच्चों तुम्हें दिखाएं....)

आओ, जैनों ! तुम्हें वताएं, झांकी जैनिस्तान की,
भाव सहित सब मिल गुण गाओ, गाथा ये महान की ।

वन्दे शासनम्, वन्दे शासनम् ।। टेर

कौशिक नाग डसा पग में, फिर भी प्रभु वांवी से न टले ।
केवल करूणा खातिर नेमी, तोरण से मुह मोड़ चले ।।

कुटुम्ब कबीलो नारी कारणे रे, मूरख संचे बहुला पाप रे।
चोर तणी परे छंडी जूरसी रे,सहसी इह लोक परलोक संताप रे॥
धन गडियो रे लेणो लोक में रे,जाणे पीता लगहु बताय रे।
जीभ थी नथो आवे बोलणो रे,रहि हुंस मन री मन मांय रे॥
ऊंचा चुणाया मन्दिर मालीया रे,दे दे धरती में ऊंडी नींव रे।
एक दिन ऊबा छोड़ी चालसो रे,सुख दुःख सहसी अपणो जीव रे॥
चक्रवती हलधर राणा केशवा रे, इम बलि इन्द्र सुरां रो नाथ रे।
उगी उगी ने सगला आथम्या रे,जोयजो आ अचरज वाली बात रे॥

जुगल्या रो तीन पल्ल रो आउखो रे,
लम्बी ज्यारी तीन कोस की काय रे।
कल्पवृक्ष पूरे दस जात रा रे,
बादल जिम गया विरलाय रे।

भगवंत चौवीसमा वर्धमानजी रे शक्रेन्द्र बोल्यो इसड़ी बात रे।
स्वामी दो घड़ी तो बढ़ावजो रे जिम यह भस्म ग्रह टल जाय रे॥
वलता श्री वीर जिनंद ऐसी कहे रे, सुन रे शक्रेन्द्र म्हारी बात रे।
तीन काल में बात हुई नहीं रे, आउखो बधायो नहीं जाय रे॥
अथिर संसार तजि मुनि निसर्या रे करता मुनि नवकल्पी बिहार रे
भारण्ड पंखी की जेने ओपमा रे, न धरे ममता नेह लिगार रे।
चारित्र पाले रुढ़ी रीत सूं रे देवे वली अपनी छंदो रोक रे।
तुरन्त विराजे मुनि मुक्ति में रे, यश लहे इह लोक परलोक रे॥

शब्द रुपादि में समता करो रे, मत करो कोई अहंकार रे।
चौथ ऋषिजी कहे जालोर में रे, सूत्र थी होज्यो मुझ निस्तार रे॥

(३६)

॥ आ चादर थारे कर्मों री ॥

(तर्ज :—आ बाबासा री लाडली, कठीने चाली रे......)

आ चादर थारे कर्मां री, काली पड़ जासी रे।
हँस हँस ने क्यों बांधे पाप, थाने कठे छुड़ासी रे। ध्रुव।
ब्रह्मचर्य ने छोड़ आज क्यों, व्यभिचार में डोले रे।
असल रतन ने छोड अरे तू, पत्थर ने क्यों मोले रे।१।
हिवड़े री खिड़की खोल, नहीं तो दुखड़ा पासी रे।१।
सब सुं मीठो बोल जगत में, कड़वो क्यों तू बोले रे,
इमरत रे प्याले में तू क्यों, बून्द जहर री घोले रे।
भलो बुरो करियोड़ा थारे, आडो आसी रे।२।
धर्म कर्म रो भरो खजानो, खर्च कियाँ नहीं खूटे रे,
मिटे कर्म जंजाल झगड़ा, जनम मरण रो छूटे रे।
सुण 'वीर मण्डल' री बात, त्याग सुं मुक्ति पासी रे।३।

(३७)

॥ आछो आनन्द रंग बरसायो ॥

(तर्ज—अवधु सो जोगी गुरु मेरा)

आछो आनन्द रंग बरसायो, मैं तो देख सभा हुलसायो ।टेर।

अरिहंत नमूं पद पहले, भव्य जीवां ने शिवपुर मेले।
लोकालोक को रूप बतायो। १।

दूजे पद श्री सिद्ध ध्याऊं, कर जोड़ी ने शीश नमाऊं।
जनम मरण को दुःख मिटायो। २।

आचारज पद तीजे सोहे, चारों तीरथ के मन मोहे।
ज्ञान ध्यान में चित्त रमायो। ३।

उपाध्याय मेरे मन भावे, कई सन्तों को ज्ञान भणावे।
जां की बुद्धि को पार न पायो। ४।

सर्व साधुजी गुण का दरिया, जाने पाप सहु पर हरिया।
मोंकु मुक्ति को पंथ बतायो। ५।

ये तो पांचों ही पद भज भाई, नित एक चित्त ध्यान लगाई।
कारज सिद्ध हुये मन चायो। ६।

'नन्दलाल' मुनि गुण धारी, तस शिष्य कहे हितकारी।
मैं तो मांगलिक आज मनायो। ७।

(३८)

(तर्ज—आगे जाणो रे चेतनिया)

आगे जाणो चेतनिया, साथे खर्ची ले लीजो।
खर्ची लिया पेला हो मनड़ो, वश में करलीजो॥

साथ चाले धर्म या सूं प्रीति कर लीजो।
शुभ कर्म कमाई चेतन, थैली भर लीजो॥ १॥

आत्म शुद्धि रे खातिर थे तो, तपस्या कर लीजो।
थे तो क्षमा करीने, माया मदने हर लीजो॥ २॥
पायो मनुष्य जन्म रुड़ो, मारी सुण लीजो।
थे तो करणो करवा में चेतन, देरी मत कीजो॥ ३॥
शिक्षा नाथ मुनि री थारे, हृदय धर लीजो।
प्रभु भक्ति करी ने, मुक्ति वेगी ले लीजो॥ ४॥

(३६)

॥ आता आता ही श्वास रुक जाएगा ॥

(तर्ज--जरा सामने तो आओ छलिया....)

जरा धर्म की गठरी बांधो, मौत मस्तक पे हो रही सवार है।
आता २ ही श्वास रुक जाएगा, इसका न कुछ एतवार है। टेर।
आने के बाद मौत कुछ भी न होगा, यों ही तड़फ मर जावोगे।
मन की मुरादें मन में रहेगी, पूरी न करने पावोगे।
बांधो पानी से पहले पाल है, सुखी बनने का यदि ख्याल है। १।
कल पर धरम को बिलकुल न छोडो, कल क्या पता क्या हो जाये।
बदले में राज्य के बनवास हो गया, रघु भी समझने नहीं पाये।
औरों का फिर क्या सवाल है, प्रभु भक्ति ही जग में सार है। २।
जीवन की जो पल है बीत जाती, वापिस न फिर वह आ सकती,
आती को पकडो जाने लगेगी, फिर तो न पकडी जा सकती।
धर्म करने का अवसर उदार हैं, प्यारे प्रभुजी ही तारनहार है। ३।

माता के तुल्य पर नारी को समझो, मिट्टी सा समझो तुम पर धन।
आतमा के तुल्य सब जीवों को समझो, शिक्षा सुनाता है मुनि धन।
ज्ञान सुनने का फिर यही सार है, कुछ ले लो तो बेड़ा पार है। ४।

(४०)

॥ आतमा रे दाग लगाइजे मती ॥

आतमा रे दाग लगाइजे मती, उजली ने मैली बनाइजे मती। टेर।
आतमा है थारी असली सोनो, सोने में खोट मिलाइजे मती। १।
आतमा है थारी अमृत कूंपी, अमृत में जहर मिलाइजे मती। २।
आतमा है थारी ज्ञान री दीवडी, फूंक मार इनने बुझाइजे मती। ३
आतमा है थारी ज्ञानरी गुदड़ी, पापरी खोली तूं चढ़ाइजे मती। ४।
आतमा है थारी ज्ञानरो पावड़ी, मुक्ति चढी पाछो आइजे मती। ५

(४१)

॥ आतम दमवो रे प्राणियां ॥

आतम दमवो रे प्राणियाँ, आतम दमियां सुख थाय।
परने दमियां दुखड़ो हुवे, या छे वीरनी वाय। १।
स्ववश जो आत्म ना दमे, परवश निश्चय दमाय।
देखो जगना रे जीवड़ा, किण किण विध से दुःख पाय। २।
सुखनी रे आशा करी करी, हरतो परना तूं प्राण।
सुख निश्चय इम ना मिले, भाखे त्रिजग भाण। ३।
जीमे भोजन जिमे जहेर नो, धरी मूढ जीवणरी आश।
तिम हीज मोह हिंसा थकी, वंछे सुखनी रे राश। ४।

कर्ता हर्ता सुख दुःख तणो, आतम मित्र अमित्र।
भला भूंडा आचार ने, वर्त्या होवे रे मित्र।५।
दुःख वैतरणी नदी तणां, वली कूड सामली नो जोय।
आपे निश्चै दुरआतमा, जो पाये प्रवृत्ति होय।६।
नन्दन वन सम सुख सही, वली कामधेनु सम जोय।
तेह आपे सु आतमा, रुड़ी रीते जो होय।७।
दुर्दम दमवी निज आतमा, अति उत्तम वलि जोय।
संयम तप से रे वश किया, बेहु लोके सुख होय।८।
आप्त वाणी उर आण ने, धारे मनि धर्म जेह।
तेह निश्चै शिव गति लहे, हूं पिण वंछू प्रभु एह।९।

(४२)

॥ आनन्द मंगल करूं आरती ॥

आनन्द मंगल करूं आरती, सन्त चरण की सेवा।
शिव सुख कारण विघ्न निवारण, पंच परमेष्टी देवा। टेर।
प्रथम आरती अरिहन्त देवा, कर्म खपे तत् खेवा।
चौसठ इन्द्र करे तस सेवा, वाणी अमृत मेवा।१।
बीजी आरती सिद्ध निरन्जन, भंजन भव-भव फेरा।
चिदानन्द चिद् रूप अखंडित, मिटे भवो भव फेरा।२।
तीजी आरती श्री आचार्यजी, छत्तीस गुण गम्भीरा।
संघ शिरोमणि सोहे दिनमणि, दे हित बोध अनेरा।३।

चौथी आरती उपाध्यायजी, भरो भणावे एहवा ।
सूत्र अर्थ करे तत् खेवा, सेवा करे तस देवा । ४ ।
पंचम आरती सर्व साधुजी, भारण्ड पंखी जेवा ।
महाव्रत पाले दूषण टाले, अविचल शिव सुख मेवा । ५ ।
भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्टी देवा ।
विनयचन्द मुनि गुण गावे, लेवा शिव सुख मेवा । ६ ।
गावे सीखे ने सुणे आरती, भविजन भाखे एहवा ।
तेह तणा पातिक टल जावे, नित उठ मंगल मेवा । ७ ।

(४३)

॥ आंसूडा ढलकावे मारी आंखडली ॥

(तर्ज—घूमर रमवा मैं जांसा ...)

म्हांरे आंगण आया, मत जावो महावीर ।
आसूडा ढलकावे, म्हारी आंखडली । टेर ।

चंपा लुट गई मैं बिकियोड़ी, पग बन्धन बंधियोड़ा ।
म्हारी कौन सुणेला, दुनियां माये महावीर । १ ।

मात पिता सब सखियां छूटी, छूट्यो सब परिवार ।
थे तो दुखियां ने मत, ठुकरावो महावीर । २ ।

आप पधारिया मनड़ो हरख्यो, पण कांई पड़ गई चूक ।
म्हारे पगल्या धरता ही, पाछा फिरिया महावीर । ३ ।

उड़द बाकला देख आप क्यों, पाछा फिर गया नाथ ।
मैं तो दुखियारी और, कांई लाउं महावीर । ४ ।

थां विन दुखियां की सुणवाई, कौन करेला नाथ।
मैं तो पलकां सूं पूजूं, भगवान महावीर ।५।

जोधाणे में कियो चौमासो, कुमुद मुनि गुण गावे।
सती चन्दना रा कारज, थे तो सार्या महावीर।६,

जेन्टिलमेन एक घूमन को, वक्त शाम के जाता था।
पांच सात थे मित्र साथ में, बातें बड़ी बनाता था।।
ठोकर लगी पड़े बाबूजी, बांधी हाथ में घड़ी रही। ५।

एक राजा का इलाज करने, डाक्टरजी तैयार हुए।
विविध दवा औजार इन्जेक्शन, मोटर कार सवार हुए।।
आया काल उलट गई मोटर, बक्स दवा से भरी रही। ६।

मिट्टी गूंधी मिट्टी रौंदी, सुन्दर बर्तन बना रहा।
इस कुम्हार की अजब हालत है, मिट्टी से धन कमा रहा।
अन्त चली एक फूटी हंडिया, नई मटकियां धरी रहीं। ७।

हा हा! कितनी और सुनाऊं, दुनिया की है अजब गति।
'चन्दन' आना ही जाना है, फर्क नहीं है पाव रत्ती।।
नेक कमाई की है जिसने, उसकी ही बस खरी रही। ८।

(४५)

।। इजाजत दे माता ।।

जम्बू-इजाजत दे माता, लेसूं संजम भार।। टेर।।
माता-इस्यों कांई दुख व्याप्यो, जम्बू राजकुंवार।। टेर।।

जम्बू-भगवान सुधर्मा स्वामी, आया बाग मांय जी।।
माता-धन्य अहो भाग्य जो, कीनो पावन आय जी।
जम्बू-सुन के शुभागमन, गयो दरश तायजी।
माता-धन्य ऐसे लाल को जो, धर्म को दिपायजी।
जम्बू-सुना वहां धर्म प्रचार।। इजाजत।। १।

माता-चित्त क्यों उदास, जम्बू ! कहो समझाय जी।
जम्बू-सुनके उपदेश माता ! वैराग्य मन भायजी।
माता-ऐसो कांई वोले, क्यों ? चित्त को दुखायजी।
जम्बू-झूठा है संसार माता ! संगी कोई नांयजी।
माता-ओ कांई करियो, विचार ? ॥ इसो कांई २ ॥

जम्बू-ममता को छोड़ के, आज्ञा देवो मायजी।
माता-इस्यो कांई दियो ज्ञान, गयो भरमांयजी।
जम्बू-वीतराग वाणी, सुनी संजम मन भायजी।
माता-छोटा सूं मोटो कियो, क्यों अब, छिटकायजी ॥
जम्बू-है मतलब का, संसार ॥ इजाजत ॥ ३ ॥

माता-राज पाट धन धाम, कभी कोई नांयजी।
जम्बू-है सब बेकार, माता संग चले नांयजी।
माता-संग आठ नार थारे, महलां के मांयजी।
जम्बू-दियो ज्ञान एक रात, दीनी समझायजी।
माता-संजम को छोड़, विचार ॥ इसो कांई....! ॥ ४ ॥

जम्बू-निश्चय लीनी धार, माता ! संजम की मन मांयजी।
माता-एकाएकी, लाल, बेटा ! छोड़ कठे जायजी।
जम्बू-छोड़ मोह जाल, किणरा बेटा किणरी मायजी !
माता-राज सुख भोग पीछे, लीजो संजम जायजी।
जम्बू-नहीं इण वातों में सार ॥ इजाजत ! ॥ ५ ॥

माता-संजम खांडे की धार, कहूं समझायजी
जम्बू-आज्ञा देवो प्रेम से, तो मुश्किल कुछ नायजी
माता-पंच महाव्रत पालणो, चलणो जीव बचायजी
जम्बू-पांचों सुख समान, माता लेस्युं निभायजी
माता-मैं भी हूं तैयार ॥ इसो कांई ! ॥ ६ ॥

जम्बू-पांच सौ अरु सत्ताईस, संग लागे आय जी।
माता-पिता पुत्र माय संग, आठों नार धायजी।
जम्बू-संसार असार जाण, लीनी दीक्षा जायजी।
माता-"जीतमल" धन्य जम्बू, धन्य थांरी मांयजी।
जम्बू-समझ झूठा संसार, लीनो संयम भार ॥ ७ ॥

(४६)

॥ **इण कालरो भरोसो भाई रे** ॥

इण काल रो भरोसो भाई रे कोई नहीं,
ओ किण विरिया मांहे आवे रे।
बाल जवान गिणे नहीं,
ओ सर्व भणी गटकावे रे ॥ १ ॥

बाप दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावे रे।
तो पिण घेटा जीव ने, धर्म री बात न सुहावे रे ॥ २ ॥

महेल मन्दिर ने मालिया, नदीय निवाण ने नालो रे।
स्वर्ग ने मृत्यु पाताल में, कठियन छोड़े कालो रे ॥ ३ ॥

॥ इण शीलव्रत रो लावो जग में ॥
(तर्ज—कांगसिया री····)

इण शील व्रत रो लावो जग में, सतियां ले गई रे ॥ टेर ॥

ब्राह्मी सुन्दरी दोनु वहना, दोनों ही अखंड कुंवारी रे।
आदिनाथ घर संयम लीनो, पहुँची मोक्ष मंझारी रे ॥ इण०॥१॥

चंदन वाला चोहटे बिकती, धन्ना सेठ घर लायो रे।
महावीर ने आहार बेरायो, फिर वेरागण बनगई रे ॥ इण० ॥२॥

गुफा माहे सिंह घडुक्यो, वन में हनुमत जायो रे।
सती अंजना कष्ट सह्यो, पर शील अखंड निभायो रे ॥ इण०॥३॥

रामचन्द्र वनवास सिधाया, सीता ने रावण ले गयो रे।
धीज करी सति संयम लीनो, अग्नि पानी हो गयो रे ॥ इण०॥४॥

सती सुभद्रा कांटो काढ्यो, सासू कलंक लगायो रे।

काचा ताणा नीर निकाल्यो, खुल गई चंपा पोला रे ॥ इण०॥५॥

धात्री खण्ड का राय पद्मोत्तर, ले गया द्रौपदी नारी रे।
रंग में राची शील में सांची, पांच पांडव की नारी रे ॥ इण० ॥६॥

नेम कुंवर तोरण पर आया, राजुल लारे ले गया रे।
पशुओं की पुकार सुणी ने, चढ़ गया मोक्ष मंझारी रे ॥ इण० ॥७॥

कष्ट पड्या सती शीलजो राख्यो, नाम अमर वो कर गई रे।
रसिक होय गुण गातां रंग से, आतम पावन वन गई रे ॥ इण ॥८॥

॥ इम झूरे देवकी राणी ॥

(तर्ज—धीरे चालो बीरज का वास)

इम झूरे देवकी राणी, या तो पुत्र विना विलखाणी रे ॥ टेर ॥
मैं तो सातों नन्दन जाया, पिण एक न गोद खिलाया रे ॥ १ ॥
घर पालणों नहीं बंधायो, नहीं मधुर हालरियो गायो रे ॥ २ ॥
घुघरा चूखनी न वसाई, झूमर पिण नाहीं बंधाई रे ॥ ३ ॥
नही गहणा कपड़ा पहिराया, नहीं झगल्या टोपी सिवाया रे ॥ ४ ॥
नहीं काजल आंख लगायो, नहीं स्नान करी ने जीमायो रे ॥ ५ ॥
नहीं गले दामणा दीधा, वलि चांद सूरज नहीं कीधा रे ॥ ६ ॥
नहीं स्तन पय पान करायो, रुठा ने नहीं मनायो रे ॥ ७ ॥
मैं तो कड़िया नाहीं उठायो, नहीं अंगुली पकड़ चलायो रे ॥ ८ ॥
घू घू कही नाहि डरायो, नहीं गुद गुल्या से हंसायो रे ॥ ९ ॥
नहीं मुख पे चूम्बा दीधा, नहीं हरप वारणा लीधा रे ॥ १० ॥
नहीं चकरी भंवरा मंगाया, नहीं गुलिया गेंद वसाया रे ॥ ११ ॥
मैं जन्म तणा दुःख देख्या, गया निर्फल जन्म अलेख्या रे ॥ १२ ॥
मैं अभागण पुण्य न कीधा, तिण थी सुत विछड़ा लीधा रे ॥ १३ ॥

गले बे हाथ नजर है धरती, आँखे आँसू भर झूरती रे ॥ १४ ॥
पग वन्दन कृष्ण पधारे, माजी ने उदास निहारे रे ॥ १५ ॥
कहे अमीरिख किम दुख पावो, माताजी मुझ फरमावो रे ॥ १६ ॥

(४९)

॥ इस जन्म में ना मिले ॥

तर्ज—

इस जन्म में ना मिले, परभव में मिलता है।
अपने पुण्य और पाप का फल, सबको मिलता है ॥ टेर ॥

है वह भाई दोनों ही, दुनियां के मेले में।
एक दर-दर का भिखारो, दूजा महलों में।
होते पैदा एक से नहीं, भाग्य मिलता है ॥ १ ॥

एक पत्थर की है मूरत, पूजा करते हैं।
दूजा फर्शों में जड़ा, जिस पर हम चलते हैं।
पर्वत और चट्टान से, एक निकलता है ॥ २ ॥

सीप दो है एक से, किस्मत निराली है।
एक में मोती भरे, दूजा खाली है।
समुद्र के पानी में, इनको जन्म मिलता है ॥ ३ ॥
फूल एक मन्दिर में प्रभु के, चरणों में चढ़ता है।
दूसरा गिर कर पड़ा है, खाक में मिलता है।
फूल वो एक ही चमन में, खिलता है ॥ ४ ॥

जैसी करणी वैसी भरणी, कर्म शुभ करले।
लगता न कुछ मोल, खजाने के पुण्य भरले॥
युवक मंडल अर्ज ये, सौभाग करता है॥ ५॥

(५०)

॥ उठ भोर भई टुक जाग सही ॥

(तर्ज—प्रभाती)

उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु।
अब नींद अविद्या त्याग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु॥ १॥

जग जाग उठा तूं सोता है, अनमोल समय यह खोता है।
तूं काहे प्रमादी होता है, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु॥ २॥

ये समय नहीं है सोने का, है वक्त पाप मल धोने का।
अरु सावधान चित्त होने का, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु॥ ३॥

तूं कौन कहां से आया है, अब गमन कहां मन लाया है।
टुक सोच ये अवसर पाया है, भज वीरप्रभ भज वीरप्रभु॥ ४॥

रे चेतन चतुर हिसाव लगा, क्या खाया खरचा लाभ हुआ।
निज ज्ञान जमा तूं सम्भाल हिया, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु॥५॥

गति चार चौरासी लाख रूला, ये कठिन २ शिव राह मिला।
अब भूल कुमार्ग विषे मत जा, भज वीरप्रभु भज वीरप्रभु॥ ६॥

(५१)

॥ उठ परदेशी प्रभात हो गई ॥

(तर्ज—इक परदेशी मेरा दिल)

उठ परदेशी ! प्रभात हो गई ।
सोते-सोते मुझे, सारी रात हो गई ॥ १ ॥

सोया क्यों तू निन्दिया में, पांव को पसार के।
देख जरा एक बार, अखियां उघाड़ के ।
विदा तेरे साथ की, जमात हो गई ॥ २ ॥

झूमते हैं फूल ये जो, खिली गुलजार है ।
चन्द रोज दुनियां की, रौनक—बहार है ।
कहके ये रवाना, बरसात हो गई ॥ ३ ॥

रात को ईशारों में ही, कहा यों सितारों ने ।
मिटना है फौरन ही, सुन्दर नजारों ने ।
होते ही उजाला, सच्ची बात हो गई ॥ ४ ॥

दूर तू हटा के झूठे, मोह-अभियान को ।
जपा कर दिन रात, प्यारे भगवान को ।
'चन्दन' से तेरी मुलाकात, हो गई ॥ ५ ॥

(५२)

॥ उत्तम समकित धारोजी ॥

(तर्ज—साहिब भले विराजोजी ......)

उत्तम समकित धारोजी, निर्मल समकित धारोजी।
इण धारया से निश्चे होवे, जीव सुधारो जी । टेर।

मोक्ष तणो प्रथम ही साधन, समकित श्रीजिन भाखे।
उत्तम प्राणी शुद्ध समकित ने, जतन करी ने राखे ॥ १ ॥

ज्ञान चरण इण ही ने पाछे, इण विन ज्ञान अज्ञान।
चरण नहीं गिणती में इण विन, नहीं छे रूड़ो ध्यान ॥ २ ॥

पुद्गल सुखनी दाता जाणो, विन समकित सुहु किरिया।
लाभ अनुपम समकित केरो, धार अनन्त ही तिरीया ॥ ३ ॥

यथा तथ्य वीज नो ज्ञाता, सो समदृष्टि जोय।
इण ही सेती भवाणवि, रो पार उतरवो होय ॥ ४ ॥

यथा तथ्य वस्तु ने जाणे, सो ही होवे भव पार।
वीतरागनी वाणी ने तू, हिरदा में ले धार ॥ ५ ॥

(५३)

॥ उम्र छोटी सी ॥

उम्र छोटी सी क्यूं, मोटा-मोटा पाप कमावे रे।
वाह-वाह उम्र छोटी सी। टेर।

तीसां भयो चले चालीसो पचासो, पिण लारे रे।
साठी वे वृद्ध नाठी केवे, क्यूं नहीं विचारो रे।
उम्र छोटी सी ...... ॥ १ ॥

बेटा पोता प्रपोतां री, तूं क्यों चिन्ता लावे रे।
थांरो भी तो नहीं भरोसो, कद मर जावे रे।
उम्र छोटी सी ...... ॥ २ ॥

आगे आपणा बड़ा बडेरा, लाखों वर्षों जीता रे।
अब सौ वर्ष री, उम्र रा, तो होवे फजीता रे।
उम्र छोटी सी ॥ ३ ॥

दोय पैसा भर घी ने रोटी, खावण रो थारे सरतन रे।
अब तो खोटा धंधा रो, थूं करले सबर रे।
उम्र छोटी सी .... ॥ ४ ॥

मिनख जमारो मुश्किल मीलियो, केई भवा सु फिरतो रे।
चार गति रा फेरा सूं थूं, क्यूं नही डरतो रे।
उम्र छोटी सी ...... ॥ ५ ॥

जैन धर्म ने आरज क्षेत्र, मौको मीलियो आछो रे।
इण भव में नहीं करसी तो, रूल जासी पाछो रे।
उम्र छोटी सी....... ॥ ६ ॥

कर्मो ने काटण रे कारण, ने से तपस्या धारो रे।
सगा सम्बन्धी कुटुम्ब कबीलो, कोई नही थारो रे।
उम्र छोटी सी....... ॥ ७ ॥

किया कर्म तो भुगत लीजिये, नहीं होवे छुटकारो रे।
पाप कर्म छोड़ी ने अब तो, संवर धारो रे।
उम्र छोटी सी.......॥ ८ ॥

पाप कर्म सूं धन कमायो, खावण वाला खासी रे।
सुकृत नही करसी तो पड़सी, जम की फांसी रे।
उम्र छोटी सी·······॥ ९ ॥

लालचन्द कर जोड़ कहे छे, दो हजार बाकी से ओ।
धर्मध्यान कर सो तो, भायां मोक्ष मिल से ओ।
उम्र छोटी सी·······॥ १० ॥

(५४)

॥ उसी को मिलता है निर्वाण ॥

(तर्ज—कितना बदल गया इन्सान)

सम्यग् ज्ञानी, सम्यग् दर्शी सम्यग् संयमवान,
उसी को मिलता है निर्वाण।

शास्त्र-शास्त्र में, स्थान-स्थान पर बोल गये भगवान्,
उसी को मिलता है निर्वाण। टेर।

जैसी शक्ति वैसा धारे, पर प्रमाद को दूर निवारे।
सिद्ध साक्षी से निरतिचार जो, पाले प्रत्याख्यान। उसी को। ३।

केवल कहते 'पारस' सुन रे, सच्ची सीख हृदय में धर-रे।
ज्ञाता दृष्टा व्रतधर बन रे, जिससे तेरा नर भव सुधरे।
पूर्व पुण्य से तुझे मिला यह, मानव जन्म महान। उसी को। ४।

(५५)

॥ एक तो मन वैरी जीव है ॥

एक तो मन वैरी जीव है, दूजो है शैतान,
तीजो वैरन भूख है, काम करे नहीं लाग।
चौथो वैरी कुटुम्ब है, नित उठ लागो लार,
पांचवों वैरी धन है, नित को करे गुमान। १।

छट्ठो वैरन नींद है, नहीं भजन दे राम,
सातवों वैरी काल है, नित उठ लागे लार।
ये सातों ही वैरी जीव ने, कीम करोला पार,
दया पालो रे प्राणियां, तिम छूटोला पार।
साधु तणी वाणी सुनी, चित्त राख जो ठाण,
घरे जाय मत वीसरजो, वीसर मत करजो काज। २।

जिम सुनो तिमही करो, तो पहुँचो निरवाण,
थोड़ो हिरदा में राखजो, थाणे सुणिया रो परमाण।
करो दलाली धर्म की, दीपे अधिकी की जोत,

कृष्ण महाबल जानजो, बांधिया तीर्थंकर गोत । ३ ।

नीचो जोया गुण गणा, जीव जन्त टल जाय,
ठोकर री लागे नहीं, पड़ी वस्तु मिल जाय ।
दुखमो आरो पंचमो, स्थिर राखजो मन,
थोड़ा में नफो घणो, कुन्डा मांई रत्न । ४ ।

साधु चन्दन बावना, सीतल ज्यां रो अंग,
लेहर उतारे भुजंग की, देवे ज्ञान को रंग ।
साधु बड़े परमार्थी, मोटो ज्यांको मन,
भर-भर मुष्टि देत है, धर्म रूपीयो धन ।
सुणी हलु कर्मी जीव ने, रुचे है उपदेश,
खरो मारग वीतरागनो, जिसमें कूड़ नहीं लवलेश । ५ ।

(५६)

॥ एक सौ आठ वार परमेष्ठी ॥

(तर्ज : काहे मचावे शोर)

एक सौ आठ वार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार । टेर ।

अरिहन्त कर्म शत्रु विजेता, त्रिजग पूजित तीर्थ प्रणेता ।
न राग-द्वेष विकार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार । १ ।

सिद्धों के सब कर्म खपे हैं, सारे कारज सिद्ध हुए हैं ।
ज्योति में ज्योति अपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार । २ ।

आचार्य पंचाचार पलाते, संघ शिरोमणि संघ दिपाते।
सकल संघ रखवार परमेष्ठी, करते है नमस्कार। ३।

उपाध्याय अध्ययन कराते, भ्रांति मिटाते ज्ञान बढ़ाते।
द्वादशांग आधार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार। ४।

साधु आत्मा अपनी साधे, महाव्रत समिति गुप्ति आराधे।
त्याग दिया संसार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार। ५।

पांच नमन सब पाप प्रणाशक, उत्तम मंगल विघ्न विनाशक।
भव-भव शांति अपार परमेष्ठी, करते है नमस्कार। ६।

हममें भी तुमसे गुण जागे, हम भी परमेष्ठी पद पावें।
'पारस' हो भवपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार। ७।

(५७)

॥ एक हाथ जीत है ॥

(तर्ज : चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है…)

नर तन पाया, खुले शिव सुख द्वार है।
एक हाथ जीत है, एक हाथ हार है। टेर।

ममता बढ़ायेगा, मैल बढ़ता जायगा,
समता धारेगा त्यों ही, सच्चा सुख पायेगा-२
विषय नरक है, शील स्वर्ग सार है। एक। १।

क्रोध जगावेगा, जन्म बढ़ावेगा,

क्षमा को धारेगा त्यों ही, शीघ्र घटावेगा-२
सरलता में सार है, अभिमान भार है। एक। २।

हिंसा से तो जन्म, मरण दुःख पायेगा,
अहिंसा से आत्मा को, अमर बनायेगा-२
सत्य ही में सदा सुख, असत्य में ख्वार है। एक। ३।

राग और द्वेष, दो ही शत्रु कठोर है,
समभाव प्रेम पर तो, इनका न जोर है-२
कलह में खार है, संप मांही सार है। एक। ४।

'जीत' अब तो जीत, केवल नाम से क्या जीत है,
तन, धन, जन, सब, स्वार्थ के मीत है-२
धर्म से प्रीत कर, निश्चय बेड़ा पार है। एक। ५।

(५८)

॥ एक भूपाल है, एक कंगाल है ॥

तर्ज—

एक भूपाल है एक कंगाल है, क्या बतायें,
अपनी करनी के फल सब पावें।
एक फूलों की सैया पर सोता, एक टाट बिछाकर सोता।
एक मौज करे, एक आह भरे ॥ क्या बतायें ॥ १ ॥

एक खाता मिठाई बंगाली, एक खाता है दर-दर पे गाली।
जैसी करनी करे, वैसी भरनी भरे ॥ २ ॥

एक राजा की रानी बनी है, एक बन मेहतरानी खड़ी है।
झाड़ू देती फिरे, गलियां साफ करे ॥ ३ ॥

एक मोटर पे करता सवारी, एक दर-दर पर फिरता भिखारी।
जैसा कर्म करे, वैसा जीव भरे ॥ ४ ॥

एक सेठानी बनकर बोले, एक मंगती घर-घर पे डोले।
टुकड़ा दे दो मुझे, नैंना नीर बहे ॥ ५ ॥

संत जन तुम्हें समझाये, धर्म किया सदा सुख पावे।
जैसी करनी करे, वैसी भरनी भरे ॥ ६ ॥

(५६)

॥ ऐवंता मुनिवर नाव तिराई ॥

(तर्ज : मुक्ति जाने की डिग्री दीजिये—मारवाड़ी)

ऐवंता मुनिवर, नाव तिराई बहता नीर में। टेर।

पोलासपुरी नगरी के राजा, विजय सेन भूपाल।
श्री देवी के अंग ऊपना, ऐवंता कुमार। १।

बेले बेले करे पारणो, गणधर पदवी पाया।
महावीरजी की आज्ञा लेकर, गौतम गोचरी आयाजी। २।

खेल रहे थे खेल कुंवरजी, देखा गौतम आता।
घर-घर मांहि फिरो हिंडता, पूछे इसरी बातांजी। ३।

असनादिक लेने के काजे, निर्दोपन हम बहरां।
उंगली पकड़ी कुवर ऐवंता, लायो गौतम लारजी। ४।

माता देवी कहे पुण्यवंता, भली जहाज घर आणी।
हर्ष भाव धर निज हाथन से, वहराया अन्न पाणीजी। ५।

लारे-लारे चल्या कुंवरजी, भेट्या मोटा भाग।
भगवंता की वाणी सुनने, उपना मन वैरागजी। ६।

घर आवी माता सूं बोले, अनुमति की अरदास।
बात सुनी माता पुत्र की, मन में आई हांसजी। ७।

तूं क्या जाने साधुपना में, बाल अवस्था थारी।
ऐसो उत्तर दियो कंवरजी, मात कहे बलिहारी। ८।

मोछव करीने संजम लीनो, हुआ बाल अणगार।
भगवंता का चरण भेटिया, धन ज्यांरा अवतारजी। ९।

वरसा काल वरस्या पीछे, मुनिवर ठंडिल जावे।
पाल बांध पानी में पातरा, नाव जान तिरावेजी। १०।

नाव तिरे म्हारी नाव तिरे यों, मुख से शब्द उच्चारे।
साधां के मन शंका उपनो, किरिया लागे थांरेजी। ११।

भगवंत भाखे सब साधां से, भक्ति करो तंहे दिल।
हीला निन्दा मती करो कोई, चरम शरीरी जीवजी। १२।

शासन पति का वचन सुनी ने, सबही शीश चढ़ाया।
ऐवंता की हुण्डी सिकरी, आगम माहिं गायाजी। १३।

सवत् उन्नीसे साल छियालिस, भीलवाड़ा सेखे काल।
'रतनचन्द्रजी' गुरु प्रसादे, गाई हीरालालजी। १४।

(६०)

॥ ओ मिनख जमारो पाय ॥

ओ मिनख जमारो पाय, लावो मैं लेसांजी मैं लेसां। टेर।
मैं भी आवां थे भी आवो, धर्म ध्यान का झुण्ड जमावो।
धर्म जगत में सार, लावो मैं लेसांजी। १।

या तो है म्हारी पुन्यवानी,
सत् गुरु मिलिया कैसा ज्ञानी,
यारी आज्ञा ने सिर धार, लावो मैं लेसांजी। २।

अनुकम्पा दिल में लावांला,
दुखियांने सुखी वनावांला,
धनपाया को यो सार, लावो मैं लेसांजी। ३।

निंदा विकथा चुगली चोरी,
करणी है जग में आ फोरी,
दुरगुण ने दूर निवार, लावो मैं लेसांजी। ४।

दौलत दिल आनन्द आवेला,
संसार सुखी वन जावेला,
वरतेला जै जै कार, लावो मैं लेसांजी, मैं लेसां। ५।

है आज दिन क्षमा का, मुझको क्षमा करोनी २। टेर।

भव भव में संग भटके, नाते हुए अनंते।
सुत तात मात भ्राता, नारी भी वन सलोनी। १।

फस काम क्रोध मद में, बांधा जो वैर तुमसे।
छल छिद्र कीनो भारी, बोली कठोर वानी। २।

उन सारो त्रुटियों का, वदला चुकालो मुझसे २।

भूलो पुराणी वातें, अब हो चुकी जो होनी २। ३।

कर जोड़ के क्षमा मैं, चाहता हूं शुद्ध तन से २।
कर दो क्षमा हृदय से, इतनी दया धरोनी २। ४।

मैंने स्वरूप जाना गुरुदेव की कृपा से।
तुम भी तो जीत जाओ, हिल मिल गले मिलोनी। ५।

(६३)

॥ ओ प्यारे मानव मानवता से ॥

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर·······)

ओ प्यारे मानव मानवता से, तुमने कितना प्यार किया।
इस जीवन में तुमने औरों का, कितना कहो उपकार किया॥

इन पशुओं की हड्डी चमड़ी, जग में कई काम आती है।
पर मानव तेरा कुछ भी नहीं, यों ही काया जल जाती है॥
यदि जन-सेवा कर नहीं पाया तो, व्यर्थ में तूने जन्म लिया ···।

कितने रोतों को हास्य दिया, कितनों को तेने रुलाये हैं।
कितनों के तूने आंसू पोंछे, कितनों के हृदय जलाये हैं॥
असहाय जीवन की नौकाओं को, कितना तूने प्यार किया·······।

कितने बिछुड़े हृदय मिलाये, कितने दीनों से प्रेम किया।
कितने मानस में ज्योति जगाई, कितनों को तुमने साथ दिया॥
जीवन में कितना दान दिया, और कितनों का उद्धार किया ··।

कर लेना ओ प्राणी भलाई, तेरी कीर्ति छा जाएगी।
युग-युग तक तेरे जीवन की, सौरभ दुनिया ले पाएगी॥
मुनि 'गणेश' उसने आनन्द पाया, जिसने पर-उपकार किया ।

(६४)

॥ ओ वीतराग भगवान ॥
(तर्ज—ओ दूर जाने वाले)

ओ वीतराग भगवान, यह प्रार्थना हमारी।
हम निज स्वरूप पायें, पायें दशा तुम्हारी॥ १॥

तन मन वचन क्रियाएं, अपवित्र पुद्गलों का।
इनका ममत्व छोड़े, बन कर समत्व धारी॥ २॥

फिर रहे अनादि से हम, मिथ्यात्व वश जगत में।
स्थिर आत्म वृति धारें, तज वृत्तियां विकारी॥ ३॥

सब वृत्तियों से ऊपर, निवृत्ति धर्म अपना।
हम सूर्य चन्द्र उसमें, बन जायें स्थिर विहारी॥ ४॥

॥ क्या तन मांजता रे ॥

(तर्ज—साता कीजो जी)

क्या तन मांजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना। टेर।

माटी ओढ़न माटी पेरन, माटी का सिरहाना।
माटी का तो महल बनाया, जिसमें भमर लुभाना। १।

माटी मांही जीव लुभाया, ज्यों दीवा में बाती।
बसती नगरी छोड़ चलेगा, कोई न होगा साथी। २।

बन भी जायगा तन भी जायगा, जावे मुल मुल खासा।
लाख मोहर की सूरत जायगी, जंगल होगा वासा। ३।

दस भी जीना, वीस भी जीना, जीना वरस पचासा।
अंत काल का क्या विश्वासा, पण मरने की आसा। ४।

दस भी जोड़िया वीस भी जोड़िया, जोड़िया लाख पचासा।
अरब खरब बहुतेरा जोड़िया, संग चले नहीं मासा। ५।

दमड़ी सेती महल बनाया, तूं जाने घर मेरा।
पकड़ काल जब झपट देयगा, होगा वन में डेरा। ६।

कंठी डोरा मोती पेर्या, पेरी रेशम चोली।
कंदोरो सोना को पेरचो, लेगा अन्त में खोली। ७।

कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य, कपट बुरो जग मांही रे।
उगणीसे अस्सी में जोड़, अजमेर बनाई रे। ६।

(७०)

॥ करणी रा फल न्यारा २ ॥

निंद्रा ने परी रे निवार, निंद्रासु पावे नारकी।
लीजो-लीजो रे अरिहन्तों का नाम, स ःगों सु आवे पालकी। टेर।

एक सेठजी रे बेटा हुता चार, चारों री करणी न्यारी २।
पेलोड़ो राजा रो दीवान, दूजोड़ो हीरां पारकू।
तीजोड़ो हाट बाजार, चौथोड़ो चारे वाछड़ा।
मति दीजो सेठजी ने दोष, करणी रा फल न्यारा २।
निंद्रा ने परी रे ॥ १ ॥

एक गावत्तरी रे बछिया हुता चार, चारों री करणी न्यारी २।
पेलोड़ो सूरजी रो सांड, दूजो रो शिवजी रो नांदियो।
तीजोड़ो हाके हल, चौथोड़ा लावे पेटियर।
मति दीजो गावत्तरी ने दोष, करणी रा फल न्यारा २।
निंद्रा ने परी रे ॥ २ ॥

एक कुम्हार तो बर्तन घड़िया चार, चारों री करणी न्यारी २।
पेलोड़ो पावे ठंडो नीर, दूजोड़ो दही री जावणी।
तीजोड़ो भीरत साव, चौथोड़ो जावे भोमका।
मति दीजो कुम्हार ने दोष, करणी रा फल न्यारा २।
निंद्रा ने परी रे ॥ ३ ॥

शीलवती थी सीता माता, जनक राज दुलारी रे ॥
कर्मो नें वनवास दिया, फिरी मारी मारी रे । ३ ॥

सत्यधारी हरिशचन्द्र राजा ने, बेची तारा नारी रे ॥
आप रहे भंगी के घर पर, भरे नित वारी रे । ४ ॥

सती अंजना को पीहर में, राखी नहीं लिगारी रे ॥
हनुमान सा पुत्र हुवा, जिनके बलकारी रे । ५ ।

खंदक जैसे मुनिराज की, देखो खाल उतारी रे ।
गज सुखमाल सिर झाल सही, समता उर धारी रे । ६ ॥

सम्वत् उन्नीसे अस्सी साल, धम्मोत्तर सेखे कारी रे ।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, दया सुखकारी रे । ७ ।

(७३)

॥ करलो सामायिक रो साधन ॥

(तर्ज—जाको २ ए प्यारी बेटी)

करलो सामायिक रो साधन, जीवन उज्जवल होवेला । टेर ॥
तन का मैल हटाने खातिर, नितप्रति न्हावेला ।
मन पर मल चहुँ ओर जमा है, कैसे धोवेला । १ ।

बाल्यकाल में जीवन देखो, दोष न पावेला ।
मोह माया का संग कियां से, दाग लगावेला । २ ।

ज्ञान गंग ने क्रिया धुलाई, जो कोई धोवेला ।
काम क्रोध मद लोभ दाग को, दूर हटावेला । ३ ।

सत्संगत और शान्त स्थान में, दोष वचावेला ।
फिर सामायिक साधन करने, शुद्धि मिलावेला । ४ ।

दोय घड़ी निज-रूप रमणकर, जग विसरावेला ।
धर्म–ध्यान में लीन होय, चेतन सुख पावेला । ५ ।

सामायिक से जीवन सुधरे, जो अपनावेला ।
निज सुधार से देश जाति, सुधरी हो जावेला । ६ ।

गिरत गिरत प्रतिदिन रस्सी भी, शिला घिसावेला ।
करत करत अभ्यास मोह का, जोर मिटावेला । ७ ।

(७४)

॥ करलो २ ए प्यारे ॥

(तर्ज—जावो २ ऐ मेरे साधु रहो गुरु के संग)

करलो करलो ए प्यारे सजनो, जिनवाणी का ज्ञान । टेर।

जिसके पढ़ने से मति निर्मल, जगे त्याग तप भाव ।
क्षमा दया मृदु भाव विश्व में, फैल करे कल्याण । १ ।

मिथ्या-रीति अनीति घटे जग, पावे सच्चा ज्ञान ।
देव गुरु के भक्त बने सब, हट जावे अज्ञान । २ ।

पाप पुण्य का भेद समझ कर, विधियुत देवो दान ।
कर्मबन्ध का मार्ग घटाकर, कर लेओ उत्थान । ३ ।

गुरुवाणी में रमने वाला, पावे निज गुण भान ।
रायप्रदेशी क्षमाशील बन, पाया देव विमान । ४ ।

घर घर में स्वाध्याय वढ़ाओ, तजकर आरत ध्यान।
जन जन की आचार शुद्धि हो, वना रहे शुभ ध्यान। ५।

मातृ-दिवस में जोड़ वनाई, धर आदेश्वर ध्यान।
दो हजार अष्टादश के दिन 'गजमुनि' करता गान। ६।

॥ करिये रात्रि-भोजन त्याग ॥

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत.......)

जैन धर्म से जैन तत्त्व से, यदि होवे अनुराग,
करिये रात्रि भोजन त्याग ॥

रात्रि भोजन त्याग भी तप है, कह गये हैं वीतराग,
करिये रात्रि भोजन त्याग ॥

साधु का कहना नहीं माना, खाने वैठा रात में खाना।
पत्नि से वोला यहां आना, पूरे आम का अचार लाना ॥
मरे चूहे की पूंछ देख, फिर देखी उसने टांग

एक समय रात्रि में भाई, गिरी छिपकली भिंडी मांही।
एक ने वड़े की कढ़ी वनाई, मेंढक गिरा न दिया दिखाई
खाने वैठे देख कांप गये, वच गये लगा न दाग

जलोदर जुआं से होवे, मकड़ी से कुष्टि हो रोवे।
केश खावे वो सुस्वर खोवे, जंतु भक्ष से कई दुःख ढोवे।
सड़े कपाल विच्छू खाने से, जिसके फूटे भाग

चिड़िया कव्वे पक्षी कहाये, रात्रि में वे भी नहीं खाये।
भूखे हों तो भी उड़ जायें, मानव तू तो श्रेष्ठ कहाये॥
बुद्धिमान है 'केवल मुनि' तो जाग जाग रे जाग····

(७६)

॥ करो प्यारे प्रभु भक्ति ॥

(तर्ज : कभी सुख है कभी दुख है·······)

करो प्यारे। प्रभु भक्ति, अगर संसार तरना है।
तुम्हें संसार तिरने को, धरम दिन रात करना है। ध्रुव।

हुआ पैदा यहां पर जो, नहीं बैठा रहेगा वो।
उसे सब छोड़ कर पगले, अरे, इक रोज मरना है। १।

श्री जिन देव की भक्ति, करो सारी लगा शक्ति।
बिना इसके किसी को भी, न कोई और शरणा है। २।

तजो झूठे वचन कहना, तजो तुम क्रोध में रहना।
पड़े दुःख को सदा सहना, अगर कुछ काम करना है। ३।

भलाई में भलाई है, बुराई में बुराई है।
यही है स्वर्ग का मन्त्र, सुखों का ये ही झरना है। ४।

किया जिसने सफल जीवन, जगत में आके अय 'चन्दन'।
जो टूटे कर्म के बन्धन, तो क्या मरने से डरना है। ५।

॥ कष्ट से मिनखा देह पाई ॥

(तर्ज : दया पालो बुधजन प्राणी····)

कष्ट से मिनखा देह पाई, बेग प्रभु सुमरो रे भाई । टेर ।

दुःख चौरासी में पायो, गति चारों ही भटकायो ।
भटक के गर्भ मांय आयो, जीव अति ही दुःख पायो ॥

। दोहा । ऊपर पग तले शीश है, रयो अंग लपटाय ।
तामे दुख अपार है, कैसे वरणवे जाय ।
शीश को चुटयो ही खाई । कष्ट । १ ।

पवन तिहां लेस नहीं आवे, पीड़ा तस अगनी समथावे ।
अरज करतां से बतलावे, जीव प्रभु अति ही दुःख पावे ॥

। दोहा । अब के अवसर जीवतो, निकलूं गर्भ के बार ।
अष्ट पहर तुमही को सुमरु, विसरु नहीं लगार ।
बेग तुम काड़ीसो सांई । २ ।

कोल कर बाहर तूं आयो, आवतां प्रभुजी विसरायो ।
भयो जननी के मन भायो, तात सुणताई सुख पायो ॥

। दोहा । मात पिता परिवार ने, बहुत भयो आनन्द ।
गाजा बाजा बजे बहुत सा, नेकी नेक चूकंत ।
ढूंढ ले भुवा चल आई । ३ ।

बांध सांकल में ले जाई, चोर हाजिर रहे घर मांहीं।
धरमराय बोले दुःख पाई, दुष्ट को नांखो नरक मांहीं॥

। दोहा। नाखो कुम्भीपाक में, उपर मुद्‌गर मार।
डंड ही डंड मूढ़ सिर कूटो, यही देत है त्रास॥
साय कोई करने को नाहीं।

जीव फिर चौरासी जावे, देह धर धर के दुःख पावे।
भजन से सब दुःख टल जावे, संत जन सारा ही गावे॥

। दोहा। संवत उगनीसो तीस मां, पोष वदी शुभ मास।
शहर जावरे करी लावणी, पामे हरस हुलास॥
श्रावकों सुणजो सब भाई।

(७८)

॥ काली श्रो राणी सफल कियो॥

(तर्ज : भजन बिना कई होसी रे तोरी सूल)

काली श्रो राणी, सफल कियो अवतार।
ये तो पामी छै, भवोदधि पार हो। टेर।

कोणिक राय नी छोटी हो माता,
श्रेणिक नृप की नार।
वीर जिनन्द की वाणी सुनी ने,
लीनो संयम धार हो। १।

"मुनि नन्दलाल" तणा शिष्य गायो,
शहर विलाड़ा मंझार ।
ऐसी सती का सुमिरत सेंती,
मुझ वरते मंगलाचार हो। ७।

(७९)

॥ कांई रे गुमान करे अपणो ॥

(तर्ज : कांई रे मिजाज करे रसिया)

कांई रे गुमान करे अपणो, मान करेगो गुमान करेगो,
तो नीची गति माये जाय पड़ेगो । कां। टेर।

जोवन वय में तूं आंधो चाले,
तो दोय दोय छोगा उपर राले । कां। १।

जोवन देखि ने जोम करे छै,
तो रूप देखि ने गर्व धरे छै। कां। २।

धन देखीने मन में फूले छै,
तो मोह नदी रे मांहे भूले छै । कां। ३।

इन्द्र नरेन्द्र ने चकरवर्ती,
ते पिण छोड़ चल्या सहु धरती । कां। ४।

छप्पन क्रोड़ को नाथ कहातो,
ते पिण मूवो कौशांबी जातो । कां। ५।

कितना बदल गया इन्सान।

सूरज न बदला चांद न बदला, ना बदला रे आसमान।
कितना बदल गया इन्सान। टेर।

आया समय बड़ा बेढंगा, आज आदमी बना लफंगा।
कहीं पे झगड़ा कहीं पे दंगा, नाच रहा नर होकर नंगा।
छल और कपट के हाथों अपना, बेच रहा ईमान ॥ १ ॥

राम के भक्त रहीम के बन्दे, रचते आज फरेब के फंदे।
कितने हैं मक्कार ये अन्धे, देख लिये इनके भी धन्धे।
इन्हीं की काली करतूतों से, हुआ यह मुल्क मसान ॥ २ ॥

जो हम आपस में न झगड़ते, क्यों बने ये खेल बिगड़ते।
काहे लाखों घर ये उजड़ते, क्यों ये बच्चे मां से बिछुड़ते।
फूट फूट क्यों रोते प्यारे, बापू के ये प्राण ॥ ३ ॥

(८२)

॥ किसको आता है ॥

(तर्ज : यहां दिल का लगाना ……)

यहां लेकर जनम जीवन, बिताना किस को आता है।
पुजारी सत्य का बनकर, दिखाना किस को आता है।

कमाने के लिए धन तो, कमाता देखो हर जन है।
मगर ईमानदारी से, कमाना किसको आता है।

मिटाले गैर की हस्ती, हजारों हमने देखे हैं।
अहिंसा-सत्य पर खुद को, मिटाना किसको आता है।

अरे! मनके पे मनका तो, गिराते हैं बहुत बन्दे।
महा चञ्चल मगर मन का, टिकाना किसको आता है।

हजारों हमने देखे हैं, मुहब्बत करते मतलब से।
बिना मतलब मुहब्बत का, लगाना किसको आता है।

खिलाने के लिए छत्ती, पदार्थ भी खिला देते।
विदुर बन प्रेम से किन्तु, खिलाना किसको आता है।

गिरा करके गिरी दुख के, गरीबों को रुलाते हैं।
मिटा कर कष्ट पर 'चन्दन', हंसाना किसको आता है।

(८३)

॥ किसी के काम जो आये ॥

(तर्ज—बहारों फूल बरसाओ)

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दुःख दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किलों से न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं ॥ १ ॥

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।

कोई हंस हंस के जीता है, कोई जीता है रो रो कर।
जो गिर कर भी संभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं॥ २॥

अगर गलती रुलाती है तो, यह राह भी दिखाती है।
बशर गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है,
जो गल्ती करके पछताएं, उसे इन्सान कहते हैं॥ ३॥

अकेले ही जो खा खा कर, सदा गुजारा करते हैं।
यों भरने को तो दुनियां में, पशु भी पेट भरते हैं,
पथिक जो बांट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं॥ ४॥

॥ कुव्यसन सात दुःखदाई ॥

कुव्यसन सात दुखदाई, सब त्यागो जी। नर नार........
जो जुआ खेल रचावें, नल-पाण्डव सम पछतावें।
जब जावे सब कुछ हार.......

जो चोरी के दीवाने, हैं जाते बन्दीखाने।
दे चमड़ी पुलिस उतार.......

चेतरस मांस जो खावें, खा-खा के पेट फुलावें।
मर, जाते यम के द्वार.......

क्यों नर्क गति न पावे, क्यों मार न यम की खावें।
है जिनका शौक शिकार.......

वन मदिरा के मतवाले, जो भर-भर पीते प्याले।
हो नर्कों में सत्कार ...

पर पुरुष, पराई नारी, जो तकते दुष्टाचारी।
फिट लानत दे संसार......

घर गणिका के जो जावें, नर नर्कगति वे पावें।
सिर पड़ती यम की मार......

इन सातों से अय प्यारे! जब तक न रहो किनारे।
हैं जप-तप सब बेकार......

जो प्राणी हो बड़भागी, वही बनता इनका त्यागी।
ओ स्वर्ग–मुक्त हकदार......

जो इन से करे क़िनारा, हो उनका ही निस्तारा।
यों 'चन्दन' कहे पुकार......

(८५)

॥ कुमति संग छोड़ो ॥

(तर्ज : हो थांने जाणो २ जाणो जरूरी)

कुमति संग छोड़ो, छोड़ो छोड़ो छोड़ो छोड़ो रे।
सुमति संग जोड़ो, जोड़ो जोड़ो जोड़ो जोड़ो रे॥

मानुष को भव दुर्लभ पायो, देव करे तेहनी आश।
मांग्यो मिले नहीं, मोल मिले नहीं, मिलिये तो करिये तलाश हो। १

रतन जड़ित की सुवर्ण चर्वी, चूल्हे दीनी चढ़ाय ।
चन्दन वाले, मांही खल रांधे, एहवो तू मत थाय हो । २ ।

करजदार पहले होई बैठो, फिर लावे करज उधार ।
चुकाया बिन सूद सम्भालो, नहीं होगा छुटकार हो । ३ ।

जन जन सेती वैर बसावे, होय रह्यो अल मस्त ।
पीपल पान ज्यों भान संध्या को, आखिर होवे अस्त हो । ४ ।

अब के जोग मिल्यो मत चूको, याद करोला फेर ।
मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे, जोड़ करी अजमेर हो । ५ ।

(८६)

॥ कुन्दन पुरी में घर घर यशगान है ॥

(तर्ज : चुप चुप खड़े हो जरूर)

कुण्डनपुरी में, घर घर यशगान है,
जन्म कल्याण प्रभु, जन्म कल्याण है ।

होते ही जन्म सारी, पाप नीति सो गई,
सारे ही संसार में शांति हो गई ।
महापुरुषों की यही पक्की पहिचान है । १ ।

जन्म कल्याण की, कीर्त्ति जो छा गई,
देखने हजारों देव देवियां भी आ गई ।
देख तेज देव फीके हो गये विमान है । २ ।

(८७)

शंका ने घर देव दिल में जमा लिया,
सारा सुमेरू अंगूठे से ही हिला दिया।
बल देख नाम दिया वीर भगवान है। ३।

साधकों में साधु, कहलाये संसार में,
बाधकों को बन्ध किये अहिंसा के तार में।
पार कर पर घर पाये निर्वाण है। ४।

(८७)

॥ कैसे कैसे श्री महावीर जिनके मुनिवर ॥

(तर्ज : जाओ जाओ ऐ साधु मेरे)

कैसे कैसे श्री महावीर जिनके, मुनिवर हुए महान्। ध्रुव।

स्कंदक ने मिथ्या भव भ्रामक, सन्यासी पन डारा।
जैन मार्ग में रंग गये ऐसे, फिर पीछे न निहारा। कैसे २...। १।

हितशिक्षा पर गोशालक ने, तेजू लेश्या डाली।
धन्य क्षमा दोनों मुनियों की, मृत्यु तक भी निभाली। कैसे २। २।

हाथी भव की करुणा सुनकर, बह गई आंसू धारा।
तज दो नयन मेघ ने सारा, देह विनय पर वारा। कैसे २...। ३।

घातक अनपढ़ अर्जुन मन में, ऐसी समता लाए।
छह महिनों में कर्म क्षय कर, अविचल शिव पद पाए। कैसे २ ।४।

(८८)

बालक एवन्ता ने मुनि बन, ऐसी करणी ठाई।
द्रव्य भाव दोनों ही नैय्या, अपनी पार लगाई। धीरे....२। ४।

भोगी धन्ना ने दीक्षित बन, देह सुखाया सारा।
स्वयं वीर ने करी प्रशंसा, सर्व श्रेष्ठ अणगारा। धीरे....२। ५।

सुपात्र दान दे मुनि सुबाहु ने, सुख विपाक फल पाया।
'पारस' ने यों अणगारों का, स्तुति मंगल गाया। धीरे.... । ७।

(८८)

॥ कैसे २ हे पूज्य हमारो ॥

(गुरु : शिष्य का संवाद)

नहीं होगा भुगतान, हुण्डी जाली है। ध्रुव।

तू तनका काला बब्बा, धोता ले फौरन पानी।
तेरे मन पर कितने काले, बब्बों की पड़ी निशानी।
क्यों न निहाली है? नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है। १।

तेरा बिगड़ रहा है इंजिन, गाड़ी किस तरह चलेगी।
दीपक में तेल खतम है, बत्ती किस तरह जलेगी।
बुझने वाली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है। २।

तेरे अन्दर जान नहीं है, कैसे फिर देह चलेगी।
तेरी नैया फूट रही है, कैसे फिर पार लगेगी।
डूबने वाली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है। ३।

जाली हुण्डी को जलादे, इस मन को शुद्ध बनाले।
घन ज्ञानामृत है हाजिर, क्यों मरता प्यास बुझाले।
सगुरु गुणवाली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है। ४।

(९०)

॥ क्रोध मत कीजो रे ॥

(तर्ज : वाह रे बूंबो बाजे रे)

क्रोध मत कीजो रे, रे इण न्याय सुजान क्षमा कर लीजो रे।

परदेशी नृप को रानी विष, मिश्रित आहार जिमायो रे।
तदपि करी सम भाव पणे, सुर लोक सिधायो रे। १।

(९१)

गज सुखमाल मुनि शमशाने, नेम ध्यान को लीनो रे।
सिर पर आग सही, सोमिल पर कोप न कीनो रे। २।

खन्दक मुनि की खाल उतारन, भूप हुक्म फरमायो रे।
सञ्चित वैर चुकाय आप, मुक्ति पद पायो रे। ३।

कामदेवजी श्रावक अण, उपसर्ग से चलिया नांही रे।
दृढ़ताई सुर देख गयो, अपराध खमाई रे। ४।

मेतारज मुनि गुणीं आप, शुद्ध संजम में चित्त राल्यो रे।
दया काज मर मिट्या, कुकट को नाम न दाख्यो रे। ५।

वीर प्रभु सुर नर तिर्यञ्च का, सह्या परिषह भारी रे।
मेरु जिम रह्या अचल आप, समता दिलधारी रे। ६।

मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की, यही सिखामण खासा रे।
उगणीसे अस्सी के साल, अजमेर चौमासा रे। ७।

(९१ क)

॥ कोई नही है जग में थारो ॥

तर्ज—

कोई नहीं है जग में थारो जाण ले, कियो रो फल पासी।
भोला केणो मारो मान ले-२ ॥

पांच तत्त्व नी काया थारी, एक दिन तो मिट जावेली।
पड्यो-पड्यो पछतावेला, जद मौत सिरहाने आवेली ॥
सुणरे भाई अबे अकल सूं काम ले ॥ १ ॥

मिनख जमारो मिल्यो बावरा, बार-बार नहीं पावेला।
थारो मारो छोड़ एक दिन, हंसो तो उड़ जावेला॥
खरो नाम अरिहंत रो, पहचान ले॥ २॥

गर्भकाल में कवल कियो थो, अब क्यूं बेने भूले है।
दुनियां रे धन्धे में पड़, ममता रो भूलो भूले है॥
वीर मण्डल तो वीरप्रभु रो नाम ले॥ ३॥

(६१ ख)

॥ कहा मेरा मान रे॥

तर्ज—

दृश्य जगत के रंग रंगीले, जाल बिछाये प्यारे छैल छबीले।
रेगिस्तानी भूमि में, मृगजल वितान रे ॥ ५ ॥

आशा और अरमान धतूरे, स्वप्न जीवन के तेरे रहेंगे अधूरे।
मिथ्या है कल्पना की ऊंची उड़ान रे ॥ ६ ॥

क्रोड़पति भी श्मशान जाते, अन्त समय कुछ साथ न जाते।
दुनिया का नियम यही है, दो दिन मेहमान रे ॥ ७ ॥

धरा ढका धन सब परिजन न्यारे, एक दिन जीवन में ऐसा आवेगा प्यारे।
अपनी करनी के फल पावेगा, सुजान रे ॥ ८ ॥

सूरज तारे नभ का ये चंदा, दुनियां का काम यों ही चलेगा रे बंदे।
तुम को तो जाना होगा, तज के सयान रे ॥ ९ ॥

तू रहेगा तो भी दुनियां चलेगी, तू चला जाय पर यह न टलेगी।
तज दे रे मूरख, कर्त्तापन का अभिमान रे ॥ १० ॥

तू नहीं कर्त्ता, तू नहीं भर्त्ता, तू नहीं पगले सुख दुःख हर्त्ता।
नियति के नियम रहते, अटल अभान रे ॥ ११ ॥

समझ विचक्षण ज्ञानी सुनावें, कंचन में मोही मनवा तू क्यों भरमाये।
मोह भ्रमर डाला जीवन जलयान रे ॥ १२ ॥

(९२)

॥ खबर नहीं या जग में पल की रे ॥

खबर नहीं या जग में पल की रे, खबर नहीं या जग में पल की।

अनुभव ज्ञान आतमा खूबी, कर वातां घर की। कर।
अमर पद अरिहंत कूं ध्याया, पदवी अविचल की। १०।

दया धरम जिनेश्वर समरण, ए वातां सत की। ए वातां।
राग द्वेष उपजे नहीं जिनकूं, विनती अखपत की। ११।

(९३)

। खम्मा खम्मा खम्मा माता त्रिशला रा।

खम्मा खम्मा खम्मा माता त्रिशला रा जाय,
थांरी आज जयन्ती मनावांजी ओ।

चरण में ले लो मांने पार लगा दो,
मैं थांरा ही गुण गावां जी ओ। १।

कुन्डलपुर में जन्मिया प्रभुजी,
मात तात हुलसाया जी ओं। २।

चेत सुदि तेरस ने प्रभुजी,
सब जग खुशियाँ मनावे जी ओ। ३।

तीस वर्ष आयु में प्रभुजी,
राज पाट सब त्याग्या जी ओ। ४।

खुदरा करम काटण ने प्रभुजी,
जंगल में ध्यान लगाया जी ओ। ५।

बारे बरस बाद केवल ज्ञानी हुआ,
तीन लोक पहचानिया जी ओ । ६ ।

तीस बरस लग घूम घूम कर,
जिनवाणी वरसाई जी ओ । ७ ।

पावापुरी तो हो गई पवित्र,
प्रभुजी मोक्ष सिधाया जी ओ । ८ ।

'पुष्कर' पुकारे आपरे आगे,
मानेई पार लगाईजो जी ओ । खम्मा । ९ ।

(९४)

॥ ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना ॥

(तर्ज : लावणी·······)

ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना, करो तुम अच्छी तरह निरना ।

ज्ञान दया का मूल रूप यह, फरमाया वीतराग ।
ज्ञान बिना सोहे नहीं ज्यूं, हंस सभा में काग । १ ।

गृहस्थ धर्म और मुनि धर्म ये, दोनों ज्ञान आधार ।
ज्ञान बिना संसार का सरे, चले नहीं व्यवहार । २ ।

पहिले सीखते ज्ञान गुरु से, देखो सूत्र का न्याय ।
फिर शक्ति अनुसार तपस्या, करते वो मुनिराय । ३ ।

विद्या है धन मित्र सभा में, आदर देवे भूप ।

विद्या बिन नर पशु सरीखा, फक्त मनुष्य का रूप। ४।

ज्ञानी रहे पाप से बच कर, ज्ञान पढ़ो दिन रैन।
मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की, यही हमेशा केन। ५।

(६५)

॥ ज्ञानी हुए तो क्या हुए ॥

जाना नहीं निज आत्मा, ज्ञानी हुए तो क्या हुए।
ध्याया नहीं सिद्धात्मा, ध्यानी हुए तो क्या हुए।

श्रुत सिद्धान्त पढ़ लिये, शास्त्रवान भी बन गये।
आत्म रहा बहिरात्मा, पंडित हुए तो क्या हुए॥ १॥

पंच महाव्रत आदरें, घोर तपस्या भी करे।
मन की कषायें ना गई, साधु हुए तो क्या हुए॥ २॥

माला के दाने फेरते, मनुवा फिरे बाजार में।
मनका न मनमें फेरते, जपिया हुए तो क्या हुए॥ ३॥

गा के बजा के नाच के, पूजा भजन सदा किये।
भगवान हृदय में ना बसे, पुजारी हुए तो क्या हुए॥ ४॥

करते न जिनवर दर्श को, खाते सदा अभक्ष्य को।
दिल में दया जरा नहीं, मानव हुए तो क्या हुए॥ ५॥

मान बढाई के लिये, द्रव्य हजारों खर्चते।
घर के तो भाई भूखे मरे, दानी हुए तो क्या हुए॥ ६॥

तूने मुक्ति का मार्ग बताया, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ १ ॥

तूने त्यागी दुनियां सारी, जोगी बनकर उमर गुजारी।
तूने मारी ममता सारी, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ २ ॥

वन में जाकर ध्यान लगाया, ना तू शेरों से घबराया।
मन अपना बलवान बनाया, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ ३ ॥

संगमदेव डिगाने आया, उसकी चली न कोई माया।
आखिर मस्तक आन झुकाया, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ ४ ॥

जग में घोर अन्धेरा छाया, तूने ज्ञान का दीप जलाया।
नारा अहिंसा का लगाया, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ ५ ॥

तू है जिनवर केवल ज्ञानी, तेरी अमृत जैसी वाणी।
सुन २ तरते हैं भव प्राणी, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ ६ ॥

तू है मेरे मन को भाया, मैंने दिल में तुझे बसाया।
अब मैं शरण तिहारी आया, गीत हम तेरे गाते हैं ॥ ७ ॥

(९८)

॥ गुरु देव तुम्हें नमस्कार बार बार है ॥

(तर्ज : घर घर में दिवाली है……)

गुरुदेव तुम्हें नमस्कार वार बार है।
श्री चरण शरण से हुआ जीवन सुधार है। टेर

अज्ञानतम हटाके, ज्ञान ज्योति जगादी ।
आत्मज्ञान में, अखण्ड दृष्टि लगादी ।
उपदेश सदाचार सकल, शास्त्र सार है । १ ।

विधियुक्त सिर झुका के, कर रहे हैं वंदना ।
अब हो रही मंगल मयी, सद्भाव स्पंदना ।
माधुर्य से मिटा रही, मन का विकार है । २ ।

यह मनोरथ नित्य रहे, संत चरण में ।
अन्तिम समय समाधि मरण, चार शरण में ।
यह "सूर्य चन्द्र" मोक्ष मार्ग में विहार है । ३ ।

(९९)

॥ गुरु देव मेरे सच्चे ॥

गुरु देव मेरे सच्चे, क्रिया में सबसे ऊंचे ।
ज्ञान ध्यान में रत रहते हैं, करते नहीं प्रपंचे । १ ।

मेरे गुरु स्थानक वासी, जैन मुनि अरु सतियां ।
पंच महाव्रत को शुद्ध पाले, पाले सुमति गुप्तियां । २ ।

जैन मुनि हिंसा नहीं करते, बोल बोलते सच्चे ।
बिना दिया ये कभी न लेते, ब्रह्मचर्य के पक्के । ३ ।

पैसा कोड़ी को नहीं रखते, हैं ममता के कच्चे ।
अपना बोझा खुद उठाते, पैदल ही ये चलते । ४ ।

क्रोध तो ये कभी न करते, मान के बहुत ही कच्चे।

सरल तरल व निर्लोभी, ये महावीर के बच्चे। ५।

ज्ञान दान देते रहते हैं, अभयदानी ये पक्के।

इनके सम दानी नहीं जग में, ये दानी हैं सच्चे। ६।

जड़ पूजा को ये नहीं माने, गुण पूजा बतलाते।

जीवादि नव तत्त्वों का, सच्चा स्वरूप बतलाते। ७।

धर्माचरण के लिये कभी, नहीं मिथ्या रास रचाते।

नर नारी सब को ही ये, मुक्ति गामी बतलाते। ८।

'भंवरलाल' के गुरु बचाने, में ही धर्म बताते।

जो मरते प्राणी को बचाते, वे ही सद्गति पाते। ९।

(१००)

॥ घणो पछतावेला ॥

(तर्ज : आज रंग बरसे रे·······)

घणो पछतावेला, जो धर्म ध्यान में मन न लगावेला। टेर।

रम्मत गम्मत काम कुतूहल, में जो चित लुभावेला।
सत्संगत बिन मूरख निष्फल, जन्म गमावेला। १।

वीतराग की हितमय वाणी, सुणतां नींद घुलावेला।
रंग राग नाटक में सारी, रात बितावेला। २।

मात पिता गुरुजन की आज्ञा, हिय में नहीं जमावेला।

इच्छाचारी बन कर हित की, सीख भुलावेला। ३।

यो तन पायो चिन्तामणि सम, गया हाथ नहीं आवेला।
दया दान सद्गुण संचय कर, सद्गति पावेला। ४।

निज आतम ने वश कर पर की, आतम ने पहचानेला।
परमातम भजने से चेतन, शिवपुर जावेला। ५।

महापुरुषों की सीख यही है, गजमुनि आज सुनावेला।
गोगोलाव में माह वदि को, जोड़ सुनावेला। ६।

(१०१)

॥ चांदी और सोने में उलझा ॥

चांदी और सोने में उलझा, प्रभु का रास्ता छूट गया।
माया के मृगजाल में फंसकर, प्रभू से रिस्ता टूट गया॥

चंद रुपये की मौज शौक में, तू जीवन सुख ढूंढ रहा।
स्वजन कुटुम्ब परिवार, पति पत्नि में तू बन मूढ़ रहा।
काम-कामना माया तृष्णा, वैतरणी में गूढ़ रहा।
पूर्व पुण्य खजाना तेरा, देख अरे नर खूट गया। चांदी। १।

दया गरीबों पर ना आयी, मा भाई पर प्रीत धरी।
नहीं सुनी तूने दुर्बल की, करुण कहानी पीर भरी।
दान दिया न खुले हाथों, न भूखों की भूख हरी।
अब पछताता मरण खाट पर, जब तेरा सब लूट गया। २।

राह में राही तेरी मिल्कत, मिल अपने सब लूट रहे।
मन की मन में रह गई पगले, अब क्यूं माथा कूट रहे।
यह श्वांसों के दुर्बल धागे, अब टूटे तब टूट रहे।
घड़ा पाप का भरा जीवन भर, आज अंत में फूट गया। ३।

तेरी करनी देख के तेरा, मालिक तुझ से रुठ गया।
हाथ बांध कर आया था पर, अब खाली कर मूंठ गया।
हाय हाय करता जीवन, बगिया का माली उठ गया।
मरण खाट पर खड़े स्नेही, लूल कलेजा चूट गया। ४।

नादानी मत कर रे मूरख, धन वैभव नहीं तेरा है।
चार दिनों की चकाचौंध, आखिर जंगल में डेरा है।
दान शियल तप भाव भावना, स्वर्णिम ज्ञान उजेरा है।
वही 'विचक्षण' जो जीवन में, पी अमृत की घूंट गहा। ५।

(१०२)

॥ चालो शिवपुर रेल खड़ी ॥

चालो शिवपुरी रेल खड़ी रे तैयारी, हां हां हाजर रे तैयारी। टेर।

सीधी सड़क चाली शिवपुर को, देव मनुष्य दो आड़ा।
जहां जावे वहां हो ले जावे, पवन पतंग चली रेल गाड़ी। १।

सत्तावन संवर का डिब्बा, बोलो अमृत वाणी।
सतरह संयम माल भरियो है, बारह व्रत की झड़ी रे किवाड़ी। २।

तीन योग का चौकी पहरा, चार कषाय कटारी।

अठारा स्टेशन लगिया, श्वासों की मील लगाई । ३ ।

रात दिवस दोय इंजन जुतिया, उमर अग्नि लगाई ।
कर्म कोयला मांही झोंको, चरण करण की कुंजी लगाई । ४ ।

ब्रह्म ज्योति की आग लगाई, वहां पवन संचाना ।
केवल ज्ञान केवल दर्शन, क्षायिक समकित ज्योति उजवारी । ५ ।

दया धर्म का टिकट कटाया, सतगुरु जी उपकारी ।
कोई एक उत्तम पास कटावे, मोक्ष मार्ग की ऐश है भारी । ६ ।

शील संयम की सीटी लगाई, आगे होत हुशियारी ।
पंच महाव्रत चोखा पालो, खर्ची ले लोनी खर्च विचारी । ७ ।

राग द्वेष दोय चोर लुटेरा, करत बिखेरा भारी ।
सरकारी में धाड़ो पाड़े, चेतन बाबू खड़ा अगाड़ी पिछाड़ी । ८ ।

(१०३)

॥ चार दिनों की जिन्दगानी ॥

(तर्ज : घर आया मेरा परदेशी)

जीवन सफल बना प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी । टेर ।

भटकते भटकत आया है, मुश्किल नर तन पाया है।
कुछ तो सोच समझ प्राणी; चार दिनों की जिन्दगानी । १ ।

जग ये मुसाफिर खाना है, सब कुछ छोड़ के जाना है।
गफलत मतकर नादानी, चार दिनों की जिन्दगानी । २ ।

मुट्ठी बांध के आया है, सुकृत का फल पाया है।
खाली हाथ न जा प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी । ३ ।

माता-पिता भगनि भ्राता, मरते को नहीं रख पाता।
मूरख मन अपना जानी, चार दिनों की जिन्दगानी । ४ ।

धन दौलत सब सपना है, किया धर्म जो अपना है ।
कर कर कर कुछ तो प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी । ५ ।

चार कोष जब जाता है, खर्ची ख्याल में लाता है ।
पर भव दूर घणा प्राणी, चार दिनों की जिन्दगानी । ६ ।

करना करना बस करता हैं, काम भोग चित्त धरता है।
अजब लगन तेरी जानी, चार दिनों की जिन्दगानी । ७ ।

सुनकर के मत रह जाना, कुछ निश्चय करके जाना।
'धर्म' वक्त फिर नहीं आनी, चार दिनों की जिन्दगानी । ८ ।

(१०४)

। चेतन रे तूं ले जग बीच भलाई ।

(तर्ज : पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो)

चेतन रे तूं ले जग बीच भलाई, एहवो जोग मिले कब आई । टेर ।

पुण्य प्रभावे सब ही संपत्ति, पायो नर भव माँहीं ।
कुछ सुकरत का काम बने तो, कर तेरी समर्थाई । चे० । १ ।

कृष्ण नरेशर पड़ो बजायो, नगरी द्वारका माँहीं ।
उत्तम जन सुण संयम लीनो, देखो ज्ञाता माँहीं । चे० । २ ।

चरण तले सुसल्या ने राख्यो, हस्ती का भव माँहीं ।
शुभ परिणाम संसार घटायो, किनी जबर कमाई । चे० । ३ ।

नेम प्रभु ने वंदन जातां, गोविन्द मारग मांहीं ।
ईंटा को पुंज देख बुढ़ा को, फेरा दिया मिटाई । चे० । ४ ।

भव सागर तिर जारे भोला, सतगुरु देत चेताई ।
मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे, पारसोली के मांहीं । चे० । ५ ।

(१०५)

। चेतन चिदानन्द चरणा में ।

चेतन चिदानन्द चरणां में, सब कुछ अर्पण कर थारो ।
सफल बना तू सत्संगत में, मूंघा मोलो मिनख जमारो ।
खाली हाथां आयो है तूं, जासी खाली हाथां रे ।

लारे रहसी इण दुनियां में, जस अपजस री बातां रे ।।
थोड़े जीणे रे खातिर क्यों, बान्धे सिर पापांरो भारो । चे० ।

कोड्यां साथे अहल हार मत, ओ हीरो लाखीणो रे।
विष मत घोल वासना रो तूं, शान्त सुधारस पीणों रे ।
अति झीणो परमारथ रो पथ, तूं हैं नश्वर तनशु न्यारो । चे० ।

भर्यो अनंत अखूट खजानो, गाफिल थारा घर में रे ।
क्यूं थूं वारे वारे जोवे, क्यूं भटके दर दर में रे।
आग छिपी अरणी में ढूंढे, काट काट मूरख कठिया रे । चे० ।

एक नयो पैसो भी थारे, नहीं चालसी साथे रे ।
कर्या आपरा कर्मों सुं ही, सुख दुःख मिलसी आगे रे ।
संयम रे मारग पर चाल्यां 'तुलसी' निश्चित हो निस्तारो । चे० ।

(१०६)

।। चेतन रे तूं ध्यान आरत क्यूं ध्यावे ।।

चेतन रे तूं ध्यान आरत क्यूं ध्यावे, तू तो नाहक कर्म बंधावे । टेर।

जो जो भगवंत भाव देखिया, सो सो ही वरतावे ।
घटे बढ़े नही रंच मात्र जामें, काहे कूं मन डुलावे । १ ।

चिन्ता अग्नि जलत शरीरा, बुद्धि बल विणसावे !
शोकातुर बीते दिन रैणी, धर्म ध्यान घट जावे । २ ।

सुख से निन्द्रा रात न आवे, अन्न उदक नहीं भावे ।
पहरण ओढ़न चित नहीं चावे, तो राग रंग नहीं सुहावे । ३ ।

सुख नहीं रयो तो दुख किम रेसी, ये भी तो गुजरावे।
कर्म बांध्या सो तो भुगत्याई सरसी, क्यों आतम नेदंडावे। ४।

विन भुगत्या कबहूं नहीं छूटे, अशुभ उदय जब आवे।
साहूकार सिरोमणी सोही, हँस हँस करज चुकावे। ५।

प्रभु सुमरण और तपस्या करता, दुष्कृत रज झड़ जावे।
'जेठ' कहे समतारस पीता, तुरत ही आनन्द आवे। ६।

(१०७)

॥ चेतन रे या कर्मन की गत॥

चेतन रे या कर्मन की गति न्यारी, कर सुकृत एम विचारी।
रावण राय त्रिखंड को नायक, ले गयो राम की नारी।
लक्ष्मण हाथे परभव पहुँचो, जाने दुनिया सारी। १।

अयोध्या नगरीं को हरिश्चन्द्र राजा, तारादे तस नारी।
माथे पुरी लेय हाट में विकियो, कुंवर रोहित दास लारी। २।

कृष्ण नरेश्वर त्रिखंड भुगता, यादव कुल अवतारी।
अन्त समय जाय मुआ अकेला, वन कोशम्बी मंझारी। ३।

कुण्डरीक राय वैराग्य धरीने, लीनो संजम भारी।
कायर होय पीछा घर आया, पहुँचे नरक मंझारी। ४।

चन्दनराय मलयागिरी रानी, पुत्र सायर नीर भारी।
कर्म जोगे बिछुड़ों पड्यो जाके, पुण्य से सम्पत्ति पाया सारी। ५।

(१०६)

'खूबचन्द' कहे कर्मों की रचना, सुण लीजो नर नारी।
इम जाणी ने धर्म अराधो, सुख मिले आगे त्यारी। ६।

(१०८)

चेतन राम चेतन राम ॥

(तर्ज : भव से तार)

चेतन राम, चेतन राम, जागो प्यारे चेतन राम।

भोर हुई सब प्राणी जागे, अपने २ धन्धे लागे।
तुम भी बढ़ो, चलो अब आगे, दूर प्रभु का धाम। चे०। १।

सुस्त हुए क्यों कदम तुम्हारे, लगते हो क्यों हारे २।
अभी दूर है मंजिल प्यारे, अधबिच कहां मुकाम। चे०। २।

उठो संभालो अपनी गठड़ी, संग में ले लो भक्ति गगरी।
कूच करो पहुँचो शिवनगरी, प्रभु पद लो विश्राम। चे०। ३।

सुख सागर जीवन सर्वोदय, भेद ज्ञान विज्ञान महोदय।
मानव जीवन मिला पुण्योदय, करो "विचक्षण" काम। चे०। ४

(१०९)

॥ चेतन चेतो रे ॥

(तर्ज : पनजी मूंडे बोल)

चेतन चेतो रे, दस बोल जीव ने दुर्लभ मिलिया रे। टेर।

चार गति में गेंद दड़ी ज्यूं, गोता बहला खाया रे।

दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, गुरु समझाया रे। चे०।१।

स्वार्थ केरी यारी प्यारी, सब ही के मन भावे रे।
निज करतब तेरे कर्म कमाई, संगज आवे रे। चे०।२।

आरम्भ परिग्रह मांहि सूतो, सुध निज गुण की भूल्यो रे।
तन-धन जीवन मांहि राच्यो, गर्व में भूल्यो रे। चे०।३।

घेवर चोरिया घर का खाया, कुटाणो कंदोई रे।
आपरा बांध्या आप भोगवे, इम त्यों जोई रे। चे०।४।

धर्म जहाज निरजाम गुरु चढ़, आया सुकरत जोगे रे।
अविचल सुख की सेल करावे, फिर क्यों चूके रे। चे०।५।

जंबूजी तो विश्व वंदिता, छती रिद्ध छिटकाई रे।
करणी कर गजसुकमाल, मुनिश्वर मुक्ति पाई रे। चे०।६।

काम भोग पुद्गल विनाशी, महता भाव मिटावे रे।
मगन कहे धन महंत पुरुष ने, महिमा गावे रे। चे०।७।

(११०)

॥ चंचल चित्त म्हारो ॥

(तर्ज : देशी ख्याल की····)

चंचल चित्त म्हारो, वरज्यो नहिं माने मोटी खोड़ छे। टेर।

छिन में राजा छिन में जोगी, बनकर ध्यान लगावे।
छिन में छेल छबीलो होकर, दौड़ दिसावर जावे रे। चं०।१।

(१११)

पल में बाग बगीचा जाकर, गोठ गूगरी खावे।
इण पापी ने डर नहीं लागे, जंगल में फिर जावे रे। च०। २।

इणरे खातिर मैं दुख भूगतूं, नागो कांई निचोवे।
और ठिकाणो साथे अलगो-असली में होवे रे। च०। ३।

महादेवरी माया ने फिर, मन भोजारी रासी।
दोनूं तोल्या मन की भोजां, ऊवर जासी रें। च०। ४।

इण मनने को वसकर लेवो, परमेश्वर हुय जावे।
नाथु मुनि नो शिष्य तेहना, 'चौथमल' गुण गावे रे। च०। ५।

(१११)

॥ छोड़ो क्यूं कोनी, क्रोध रो नसो ॥

छोड़ो क्यूं कोनी क्रोध रो नसो। टेर।

थांरी आंख्यां में लोही रो उफान, दूजा ने कालो नाग ज्यु डसे।
थांरी अक बकरा री पड़ गई बाण, इजा ने काले नाग ज्यु डसे।

क्रोध वड़ो दुर्गुण दुनियां में, घट घट में वसनारो।
जिण घर में नहीं क्रोध निवासो, वे नर जगत सीतारो। छोड़ो। १।

पंचेन्द्रीय प्राणी री यदपी, करे नकतल विचारो।
तदपि कसाई नाम कुपति रो, आगम वचन निहारो। छोड़ो। २

प्रेम परस्पर दर पिड्यारो, शिष्टाचार सदारो।
खिण भर में तिनखे ज्यूं तोड़े, एंक वचन कही खारो। छोड़ो। ३

(११२)

गाली सुण्यों न हुवे घुमड़ा, छिदे न अवयव थांरा ।
थे जो सहस्यो सम भावों सु', तो वो पिछतावणां हारे । छोड़ो ।४ ।

गाली वान कठेस्यू' लासी, माग मधुर वच प्यारो ।
ये तो मृदुल मनोहर भासी, अपनो विरुध समालो । छोड़ो । ५ ।

ऊठे क्रोध है अहंकार री, सीमा तजे न लारो ।
सुण द्रष्टान्त संत धोबी रो, मनरी रीष उतारो । छोड़ो । ६ ।

विफल कीयो कुल पुत्र रोष ज्यु', जट वारे बरसां रो ।
साची क्षमा उर धारो "तुलसी" होवे सफल जमारो । छोड़ो । ७ ।

(११२)

॥ छोड़ो कुटुम्ब मोहा जाल ॥

छोड़ो कुटुम्ब मोहा जाल, छोड़ो कुटुम्ब मोहा जाल ।
जीणथी बन्दे कर्म निमाल । छोड़ो । टेर ।

मातादि सहु जाणे तू तोय ।
पण सज्जन थारा नहीं कोय । छोड़ो । १ ।

जो व्याधी से पीड़ित होय ।
तिणथी तुभने मुकावे न कोय । छोड़ो । २ ।

मैं एनो ए मारा न होय ।
इम जाणी जीव मूर्छित होय । छोड़ो । ३ ।

(११३)

॥ जन्म लियो ज्यांने मरणो ही पड़सी ॥

जन्म लियो ज्यांने मरणो ही पड़सी, मौत रा नगाड़ा सिर कुटेला ।

लाख उपाय करो नर कितना, बिना भजन नहीं छूटेला,
जम राजा रो आयो रे झूलड़ो, प्राण पलक में छूटेला ।

हिचकी चाल हचीड़ो लागे, नाड़ियां तड़ तड़ टूटेला,
जीवड़े ने यमराज ले चाल्या, क्रोध कर कर कूटेला ।

गरजा री घमासणा मचावे, तुरन्त तालवो कूटेला,
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, प्रभु रुठीया जग रुठेला ।

एक पलक प्रलय होसी, घाल रेती में तब कूटेला,
जीवड़े ने यमराज नरक डाले, काला कागला चूटेला ।

कर्मों का हीरा कीचड़ में फंसियो, बिना भजन नहीं छूटेला,
थारी चतुराई में धूल पड़ेला, थारा कर्मड़ा फूटेला ।

भुगतेला जीव भजन बिना, जमड़ा जुगों जुग कूटेला,
प्रभु सुमरले सुकृत करले, मोह बन्धन तब छूटेला ।

कहत कबीर सुनो भई जीव, तू प्रभु नाम धन लूटेला ॥

(११४)

॥ जब तेरी डोली निकाली जायेगी ॥

(तर्ज : चन्द रोज)

जब तेरी डोली निकाली जायगी,

बिन मुहूरत के उठाली जायगी। टेर।

उन हकीमों से यों कहदो बोलकर,

करते थे दावा किताबें खोलकर।

यह दवा हरगिज न खाली जायगी। १।

जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया,

मरते दम लुकमान भी यूं कह गया।

यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी। २।

होगा जब परलोक में तेरा हिसाब,

कैसे मुकरोगे वहां पर तुम जनाब।

जब वही तेरी निकाली जायगी। ३।

ए मुसाफिर क्यों पसरता है यहां,

है किराये पर मिला तुझको मकां।

कोठड़ी खाली कराली जायगी। ४।

क्यों गुलों पर हो रही बुल बुल निसां,

है खड़ा पीछे व माली खबरदार।

मार कर गोली गिरादी जायगी। ५।

चेत भय्यालाल अब जिनवर भजो,

मोह रूपी नींद को जल्दी तजो।

तो आत्मा परमात्मा बन जायगी। ६।

॥ जब हम ही छोड़ संसार ॥

(तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश ..)

जब हम ही छोड़ संसार,
सकल परिवार बने अनगारा, वो दिन है धन्य हमारा । टेर ।

आरम्भ परिग्रह है जो इतने,
जिसमें हम फंस रहे हैं कितने ।
जिस दिन पायेंगे, इससे ही छुटकारा । १ ।

दुनियां यह सारी झूठी है,
भ्रमकारक पोली मुट्ठी है ।
तन धन यौवन हैं, इन्द्रजाल अनुहारा । २ ।

ये मात पिता पुनि नन्दन है,
स्त्री का नाम जो मोह बन्धन है ।
जिस दिन टूटेगा, ये ही जाल पसारा । ३ ।

एक लोटो पानी पियो, माता माय ने वाप अनेक ।
सगलांरी दया पालसूं, माता आणी ने चित्त विवेक । माता

ज्यूं आंधा रे लाकड़ी जम्बू, तूं म्हांरे प्राण आधार ।
तुझ विना म्हारे जग सूनो, जाया जननी जीतवं राख । जंवू ।

रतन जड़त रो पींजरो माता, सूओ जाणे सही फंद ।
काम भोग संसारना माता, ज्ञानी जाणे झूठा फंद । माता ।

पंच महाव्रत पालणा जम्बू, पांचूं ही मेरु समान ।
दोष वयालीस टालना जम्बू, लेणो सूझतो आहार । जम्बू ।१

पंच महाव्रत पालसूं माता, पांचूं ही सुख समान ।
दोष वयालीस टालसूं माता, लेसूं सूझतो आहार । माता ।१

संजम मारग दोहिलो जम्बू, चलणो खांडेरी धार ।
नदी किनारे रुंखड़ो जम्बू, जद तद होय विनाश । जम्बू । १

चांद विना किसी चांदणी जम्बू, तारा विना किसी रात ।
वीर विना किसी वेनड़ी जम्बू, झुरसी वार तिवार । जम्बू ।१५

दीपक विना मन्दिर सूनो जम्बू, पुत्र विना परिवार ।
कंत विना किसी कामिनी जम्बू, झूरसी वारुं मास । जम्बू ।१

मात पिता मेलो मिल्यो, माता मिल्यो अनन्ती वार ।
तारण समरथ कोई नहीं माता, पुत्र पिता परिवार । माता ।१

मोह मतकर मोरी मातजी, माता मोह किया वन्धे कर्म ।
हालर हूलर कांई करो माता, करजो जिनजीरो धर्म । माता ।१

मरघट मांही ध्यान लगायो, ज्ञानी गजसुखमाल ।
सोमल ब्राह्मण खीरा उन्दाया, बांधी है मस्तक माटी पाल । ४ ।

चेतो-चेतो प्राणी सब ही, अशुभ करम सु ं डरजो ।
नरक टले और नर भव सुधरे, लीला मुगत मांही करजो । ५ ।

राखो थे विवेक सदा ही, कर्म बन्ध नहीं होय ।
'रसिक' प्रभु जिनराज कहे रे, ज्ञान-दर्पण में लेवो जोय । ६ ।

(११८)

॥ जगत के तारने वाले जगत में ॥

(तर्ज : कभी सुख है कभी दुःख है........)

जगत के तारने वाले, जगत में सन्त-जन ही हैं ।
उन्हें उपमा कहो क्या दें, अपन से वे अपन ही हैं ।

सकल सुख-भोग तज करके, जगत-कल्याण को निकले ।
मनोहर महल जिनके फिर, भयंकर शून्य वन ही हैं ।

अटल संयम-सुमेरु के शिखर पर सन्त बैठे हैं ।
जिधर देखो उधर उनके, अमन के गुल चमन ही हैं ।

सुधा की शोध में दुनियां, बनी फिरती है क्यों पागल ।
सुधा तो सन्त लोगों के, सदा मंगल वचन ही है ।

कुल्हाड़ी से कोई काटे, कोई आ फूल बरसाये ।
खुशी से दें दुआ यकसां, अजब सारे चलन ही हैं ।

(१२०)

स्वयं पर वज्र भी टूटे तो, हँसते ही रहेंगे हाँ।
दुखी को देख रो उठते, दया के तो सदन ही हैं।

हृदय की हूक से हरदम, हजारों वार वन्दन हो।
'अमर' अमरत्वदाता संत के, पावन चरन ही हैं।

(११६)

॥ जय कल्याणी जय सुखदानी ॥

—जिनवाणी—

जय कल्याणी जय सुखदानी जय जिनवाणी जय जय,
जय कल्याणी जय सुखदानी.......... .... । ध्रुव ।

सज्जन मन पंकज-प्रकाशिनी, ज्ञान रश्मि भव तम विनाशिनी।
वन्दन वारम्वार करें हम, सद्गुण खानी जय जय। जय कल्याणी।

तेरे लिए देव गण तरसे, जिन मुख चन्द्र सुधारस वरसे।
मोह कर्म संताप शान्त हो, जिसने ठानी जय जय। जय कल्याणी।

अनेकान्त गल हार विराजे, सप्त भंगि नय भूषण भ्राजे।
ज्ञानभाल पर तिलक अहिंसा, सब जग मानी जय जय। जय क०।

सकल द्रव्य ध्रुव निज भावों में, व्यय उत्पत्ति अवस्थाओं में।
परिवर्तित पर्याय, गुणों की अचल कहानी जय जय। जय क०।

पर पदार्थ संयोग दूर कर, केवल दर्शन ज्ञान भाव भर।
सिखा भेद विज्ञान पुष्ट कर, पद निर्वाणी जय जय। जय क०।

राग द्वेष की सुलगी ज्वाला, हृदय हुआ हिंसा से काला।
तू ही शुद्ध शांति संचारिणी, अब हम पहचानी जय जय। जय क०।

वचन प्ररुपण मनन भक्ति हो, काय स्पर्शना परम शक्ति हो।
पावे सूरज चन्द्र अचल पद, भविजन प्राणी जय जय। जय क०।

(१२०)

॥ जय अरिहंताण ॥

(तर्ज : आरती........)

जय अरिहंताणं, स्वामी जय अरिहंताणं।
भाव भक्ति से नित्य प्रति, प्रणमूं सिद्धाणं॥
जय अरिहंताणं॥ टेर॥

दर्शन ज्ञान अनन्ता, शक्ति के धारी, स्वामी।
यथा ख्यात चारित्र है, कर्म शत्रुहारी। १।

है सर्वज्ञ! सर्वदर्शी! बल, सुख अनन्त पाये, स्वामी।
अगुरु-लघु अमूरत, अव्यय कहलाये। जय। २।

नमो आयरियाणं, छत्तीस गुण पालक, स्वामी।
जैन धर्म के नेता, संघ के संचालक। जय। ३।

नमो उवज्झायाणं, चरण करण ज्ञाता, स्वामी।
अंग-उपांग पढ़ाते, ज्ञान दान दाता। जय। ४।

नमो लोए सव्वसाहूणं, ममता मदहारी, स्वामी।
सत्य–अहिंसा–अस्तेय, ब्रह्मचर्य धारी। जय। ५।

'चौथमल' कहे शुद्ध मन, जो नर ध्यान धरे, स्वामी।
पावन पंच परमेष्ठी, मंगलाचार करे। जय। ६।

(१२१)

॥ जय जय जय भगवान् ॥

जय जय जय भगवान्

अजर अमर अखिलेश निरंजन, जयति सिद्ध भगवान्। टेर।

अगम अगोचर तू अविनाशी, निराकार निर्भय सुख राशी।
निर्विकल्प निर्लेप निरामय, निष्कलंक निष्काम। १।

कर्म न काया मोह न माया, भूख न तिरषा रंक न राया।
एक स्वरूप, अरूप, अगुरु लघु, निर्मल ज्योति महान्। २।

हे अनन्त! हे अन्तर्यामी! अष्ट गुणों के धारक स्वामी।
तुम बिन दूजा देव न पाया, त्रिभुवन में अभिराम। ३।

गुरु निर्ग्रन्थों ने समझाया, सच्चा प्रभु का रूप बताया।
तुझमें मुझमें भेद न पाऊं, ऐसा दो वरदान। ४।

'सूर्यभानु' है शरण तिहारी, प्रभु मेरी करना रखवारी।
अब तुम में ही मिल जाऊं ऐसा हो संधान। ५।

(१२२)

॥ जय-जय नमिराज ऋषि ॥

(तर्ज : आरती.......)

जय नमिराज ऋषि, जय 'कंकण' वुद्ध ऋषि!

अमर तुम्हारे उत्तर, जैसे सूर्य-शशि, जय-जय नमिराज ऋषि। ध्रुव।

जाति स्मरण हुआ जब, राज्य ऋद्धि नारी।
सब छिटका कर तत्क्षण, दीक्षा उर धारी। १। जय जय नमि····

शक्र इन्द्र तब पूछे, विप्र रूप धर कर।
दृढ़ वैरागी नमिऋषि, देते यों उत्तर। २। जय जय नमि····

'दीक्षा' नहीं दुःखकारी, स्वारथ दुःखकारी।
स्वारथ कारण रोती, यह मिथिला सारी। ३। जय जय नमि ···

ममता बन्धन तोड़ा, वह सुख से जीता।
जग के दुःख संकट से, वह न दुःखी होता। ४। जय जय नमि ···

जिनपुरी मुक्ति पाने, हेतु युद्ध करना।
नश्वर जड़ नगरी की, क्या रक्षा करना। ५। जय जय नमि····

आत्मा का घर ऊपर, मुझे वहां जाना।
जो नास्तिक है उसने, यहां पर घर माना। ६। जय जय नमि····

राजनीति है दूषित, कर्म बहुत बंधते।
सच्चे दण्डित होते, झूठे बच जाते। ७। जय जय नमि ···

बाह्य युद्ध का कर्त्ता, झूठा सुख पाता।
आत्म युद्ध कर्त्ता ही, सच्चा सुख पाता। ८। जय जय नमि····

लाख-लाख प्रति मास भी, हो कोई गौ दाता।
उससे भी मुनि श्रेष्ठ है, अभय-दान दाता। ९। जय जय नमि····

नवकार सी जिनमत की, है जैसे पूनम ।
मास खमण परमत का, नहीं अमावस सम । १० । जय जय नमि....

मेरु समान असंख्य भी, स्वर्ण सिद्धि पावे ।
पर नभ सम तृष्णा का, अन्त नहीं आवे । ११ । जय जय नमि....

'नारी' कांटा विष है, और महा-नागिन ।
चाह मात्र भी उसकी, महा दुर्गति कारण । १२ । जय जय नमि....

ऐसे उत्तर सुन कर, 'शक्र' प्रसन्न हुए ।
सच्चा रूप प्रगट कर, नत-मस्तक हुए । १३ । जय जय नमि....

फिर निज मुख से उनकी, करी बहुत कीर्ति ।
धन वैराग्य आपका, पाओगे सिद्धि । १४ । जय जय नमि....

उत्तम करणी करके, उत्तम गति पाए ।
"पारस" तूँ भी यों बन, नीरज हो जाए । १५ । जय जय नमि....

(१२३)

॥ जय बोलो महावीर स्वामी की ॥

जय बोलो महावीर स्वामी की ।
घट घट के अन्तरयामी की । टेर ।

जिस जगती का उद्धार किया ।
जो आया शरण वह पार किया ।
जिस पीड़ सुनी हर प्राणी की । १ ।

जो पाप मिटाने आया था ।
जिस भारत आन जगाया था ।
उस त्रिशला-नंदन ज्ञानी की । २ ।

हो लाख बार प्रणाम तुम्हें ।
हे वीर प्रभु भगवान तुम्हें ।
मुनि दर्शन मुक्ति–गामी की । ३ ।

(१२४)

॥ जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु ॥

(तर्ज : आरती ....)

जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु ।
जग नायक सुख दायक, अति गंभीर प्रभु । जय । टेर ।

कुण्डलपुर में जन्मे, त्रिशला के जाए । स्वामी ।
पिता सिद्धार्थ राजा, सुर नर हर्षाए । जय । १ ।

दीनानाथ दयानिधि, है मंगलकारी । स्वामी ।
जगहित संयम धारा, प्रभु पर उपकारी । जय । २ ।

पापाचार मिटाया, सत्पथ दिखलाया । स्वामी ।
दया धर्म का झण्डा, जग में लहराया । जय । ३ ।

अर्जुन माली, गौतम, श्री चन्दनबाला । स्वामी ।
पार जगत से बेड़ा, इनका कर डाला । जय । ४ ।

पावन नाम तुम्हारा, जग तारण हारा । स्वामी ।

निश दिन जो नर ध्यावे, कष्ट मिटे सारा । जय ।५।

करुणा सागर ! तेरी, महिमा है न्यारी । स्वामी ।
'ज्ञान मनि' गुण गावे, चरणन बलिहारी । जय । ६ ।

(१२५)

॥ जाने जाने यह कौन जगत में ॥

(तर्ज : जाओ जाओ ए मेरे साधु........)

जाने जाने यह कौन जगत में, कल होने की बात । टेर ।

ज्योतिषी ने लग्न देख कर, निज कन्या परनाई ।
जाते सास रे विधवा हो गई, दे भाव कौन मिटाई । १ ।

वशिष्ठ ऋषि कहे लग्न बता, कल राम राज्य हो जावे ।
उसी समय वनवास हुआ है, रामायण बतलावे । २ ।

राजमती हर्ष घर बोली, वरूं नेम पटनार ।
कुंवारी रहकर बनी साध्वी, भावी के अनुसार । ३ ।

खण्ड सातवां साधन धाया, संभूम चक्री राया ।
होनी की क्या उसको मालूम, दरिया बीच समाया । ४ ।

कल यह होगा, कल यह होगा, क्यों तूं मिथ्या तांने ।
कल की होनी को तो वोही, पूरवा ज्ञानी जाने । ५ ।

सोलह वर्षों तक जीऊंगा, वीर स्वयं उच्चारा ।
रखो दृढ़ विश्वास उसी पर, है वह तारण हारा । ६ ।

धर्म काज कल करना चाहो, करो आज ही भाया।
पाव पलक की खबर नहीं है, 'चौथमल' जितलाया। ७।

(१२६)

॥ जायेगा जब यहां से ॥

जाएगा जब यहां से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा॥

मतलब की है ये दुनियां, क्या अपने क्या पराये।
कोई न साथ आया, कोई न साथ जाये॥
दो दिन की जिन्दगी है, करले जो दिल में आये, जाएगा...

यह ठाट बाट तेरा, यह आन बान तेरी।
रह जायगी यहीं पर, यह सारी शान तेरी॥
इतनी-सी है मुसाफिर बस, दास्तान तेरी, जाएगा...

(१२७)

॥ जागो जागो रे हंसला ॥

(तर्ज : ढूंढो २ रे साजना........)

जागो जागो रे हंसला, जागो रे हंसला, ताव चिंतन में लागे।
तेरा नाम है चेतन प्यारा रे, अब तो पाले तू जड़ से किनारा।

मिथ्या रजनी मोहनी , दंगे आतम देव सुलाया।
काल अनादि वीता भ्रम में, जन्म मरण दुःख पाया रे। १।

निजघर भूला पर घर भटका, करता मारा मारी ।
परकी चोरी घर का दिवाला, मिथ्या है सीना जोरी रे । २ ।

मधु मक्खी छत्ते से जड़ सुख, मधु स्वाद ललचाया ।
स्वजन कुटुम्ब परिवार पेड़ की, साख से लपटाया रे । ३ ।

आतम 'विचक्षण' सहज ज्ञानमय, चैतन्य भाव जगाओ ।
उठजा हँसा प्रभु भक्तिमय, तत्त्व मुक्ता फल पावो रे । ४ ।

(१२८)

॥ जागो जागो जी चेतनिया ॥

जागो जागो जी चेतनिया नयना खोल, थारी वारी आवे है ।
मानव जीवन री आ बेला अनमोल, यूं ही बीती जावे है ।

सूतां कांई मोह नींद में, काल नगारा बाजे ।
संत सज्जन सब बढ्या जा रह्या, थारो पाणी लाजे ।
उठो उठो नी अन्तर पट खोल ॥ १ ॥

थारो मारग लांबो बाकी, थे क्यूं भूल्यो भाई ।
यो विश्राम समय नहीं थारो, अन्तिम घड़ियां आई ।
उठो उठो जी विस्तर करो गोल ॥ २ ॥

पायोड़ो अवसर खो देसो, थे मूरख कहलासो ।
सिर धुन धुन कर हाथ मलोला, बार बार पछतासो ।
चालो याद करो गुरु बोल ॥ ३ ॥

संत सुनावे बात ज्ञान री, एक न मानें थानें ।

ढीढाई री ओढ़ गूदड़ी, भटको छाने
थांका काना में आ गई

घर में थारे हानि होसी, लोग तमाश
परभव थारी जांच हुवेला, कर्मराज जं
पाछे हिया में उठेला

उठो उतारो ढीढ गूदड़ी, सद्मार्ग पर
सद्गुरु सेवा जिनवर भक्ति, ज्ञान चेतना
देखो पाया है सम

स्वर्ण समान शुद्ध बन जाओ, ज्ञान 'विच
भवसागर री विकट भमरिया, सद्गुरु स
समझो मिनख जन

(१२६)

॥ जाना नहीं निज आत

जाना नहीं निज आत्मा, ज्ञानी हुए तो
ध्याया नहीं शुद्ध आत्मा, ध्यानी हुए त

श्रुत सिद्धान्त पढ़ लिये, शास्त्र बा
आत्मा रही बहिरात्मा, पंडित हुए त

पंच महाव्रत आदरे, घोर तपस्या
मन की कषायें ना गयी, साधु हुए त

माला के दाने फेरते, मनुवा फिरे

'केवल' प्रभु गुण गा लेना, जीवन सफल बना लेना।
प्रभु भक्ति है सुख दानी । ४ ।

(१३१)

॥ जिनन्द मोहे दीठा हो सुपना सार ॥

दशवां स्वर्ग थकी चव्याजी, चौवीसवां जिनराय।
चवदह सुपना देखियाजी, त्रिशला देवीजी माय ॥
जिनन्द मोहे दीठा हो सुपना सार । टेर ।

पहले गयवर देखियो जी, सुंडा दण्ड प्रचण्ड।
दूजे वृषभज देखियो जी, धवला धोरी सण्ड । १ ।
तीजे सिंह सुलक्षणो जी, करतो मुख बगास ।
चौथे लक्ष्मी देवता जी, कर रह्या लील विलास । २ ।

पंच वरण फूला तणीजी, माला देखि सुवास।
छठे चन्द्र उजासियोजी, अमीय झरे आकाश । ३ ।
दिनकर ऊगो तेज सूंजी, किरणां झांके झमाल।
फरकंती देखी ध्वजा जी, ऊँची अति असराल । ४ ।
कुम्भ कलश रतना जड़योजी, उदक भरयों सुविशाल।
कमल फूलां को ढांकणो जी, नवमें स्वप्न रसाल । ५ ।
पद्म सरोवर जल भरयोजी, कमला करी सुसोभाय।
देवदेवी रंग में रमेजी, देख्यां आवे दाय । ६ ।
क्षीर समुन्द्र चारों दिशा जी, जेनो मीठो नीर।

दूध जैसो पानी भर्योजी, कठिन पावणो तीर। ७।

मोत्यां केरा झूमकाजी, देख्या देव विमान।
देव देवी कौतुक करेजी, आवंता असमान। ८।

रत्ना की राशि निरमली जी, देख्यो स्वप्न उदार।
स्वप्नो देख्यो तेरमो जी, हिवड़े हर्ष अपार। ९।

ज्वाला देखी दीपती जी, अग्नि शिखा बहु तेज।
इतरे जाग्या पदमनी जी, धरतां स्वप्ना से हेज। १०।

गजगति चाल्या मलकताजी, आया राजाजी रे पास।
भद्रासन आसन दिनो जी, राय पूछे हुल्लास। ११।

कहो किन कारण आवियाजी, कहो थांरा मन की बात।
चवदे स्वप्ना देखियाजी, अर्थ कहो साक्षात्। १२।

स्वप्ना सुनी राय हर्षिया जी, कीनो स्वप्न विचार।
तीर्थंकर तुम जनमसीजी, तीन लोक आधार। १३।

प्रभाते पंडित तेड़िया जी, कीनो स्वप्न विचार।
तीर्थंकर चक्रवर्ती हुसीजी, तीन लोक में सार। १४।

पंडितां ने बहु धन दियो जी, वस्तर ने फूल माल।
गर्भ मास पूरा थया जद, जनम्या है पुण्यवंत बाल। १५।

चौसठ इन्द्र आवियाजी, छप्पन दिशा कंवार।
अशुचि कर्म निवारने जी, गावे मंगलाचार। १६।

प्रतिबिम्ब घर में धर्यो जी, माता जी ने विश्वास।

शक्र इन्द्र लीधा हाथ में जी, पंच रूप प्रकाश। १७।

मेरु शिखर न्हवरावियां जी, तेहनो वहु विस्तार।
इन्द्रादिक सुर नाचिया जी, नाची अप्सरा नार। १८।

अठाई महोत्सव सुर करेजी, दीप नन्दीश्वर जाय।
गुण गावे प्रभुजी तणांजी, हिवड़े हर्ष न माय। १९।

परभाते सुपना जो भणेजो, भणतां आनन्द थाय।
रोग शोक दूरा टलेजी, अशुभ कर्म सब जाय। २०।

(१३२)

॥ जिन फरमायो रे २ ॥

(तर्ज : घूसो बाजे रे........)

जिन फरमायो रे २ यह गुपत पाप नहीं, छिपे छिपायो रे। टेर

बोयो बीज खेत में पूछा, नाम नही बतलावे रे।
ऊग बारनें निकले तब, चौड़े दर्शावे रे। १।

घास फूस को ढेर करीने, भीतर आग छिपावे रे।
मशक मशक बलती जलती, वह बाहिर आवे रे। २।

आम पाल में दिया कहां तक, छिपा छिपा कर रखसी रे।
पाक गया तब हाथों हाथ, हटियो पर विकसी रे। ३।

लस्सण आदिक बांट मसाला, स्वाद करन मन ठानी रे।
गुप चुप दियो बघार, रहे नहीं बदबू छानी रे। ४।

या विध जुल्मी जुल्म करीने, खूब किया मन मीठा रे।
गुरु नन्दलाल कहे वह आखिर, पड़सी फीटा रे। ५।

(१३३)

॥ जिनके हृदय में हुआ ॥

जिनके हृदय में हुआ ज्ञान उजाला।
जग में था जीवन जिनका, जग से निराला॥
माया के बन्धन जिनको, बांध न पाया।
ममता की कड़ियां जिनकी, टूट २ जाये।
अप्रीति द्वार पर जिसने जड़ दिया ताला॥ जग से निराला०॥१॥

आश्रय पाकर तेरा, बनी बड़ भागी।
हमसा है कौन बोलो, जग में सौभागी।
जिनका गुरु हो ऐसा, तप त्याग वाला॥ २॥

तन में थी व्याधि, मन में समता की लहरें।
सबमें रह कर भी, सबमें न ठहरें।
माता ने पाया ऐसी सन्तान आला॥ ३॥
आतम स्वभाव समझा, जड़ पहचाना।
शाश्वत नश्वर तूने, सब कुछ जाना।
प्रभु भक्ति का भर २, पिया तूने प्याला॥ ४॥

विचक्षण मण्डल, गुण तेरा गाता।
गुरुवर चरणों में, शीश झुकाता।
आशीष देओ गुरुवर, कटे पाप ज्वाला॥ ५॥

॥ जिन जी पहला ऋषभदेव ॥

जिनजी पहला ऋषभदेक वान्दसांजी,
जिनजी दूजा अजितनाथ देव, पक्खी रा खमत खामणा जी ॥
जिनजी तीजा संभवनाथ वान्दसांजी,
जिनजी चौथा अभिनन्दन देव, पक्खी रा खमत खामणाजी ॥
जिनजी पन्द्रह दिनांरो पाप आलोवियोजी,
श्रावक शुद्ध मन लीजो रे खमाय पक्खीरा। १ ॥

जिनजी पांचमां, सुमतिनाथ वान्दसांजी,
जिनजी छट्ठा पदम प्रभु देव। पक्खी।
जिनजी सातमां सुपार्श्वनाथ वान्दसांजी,
जिनजी आठमां चन्द्रा प्रभु देव। पक्खी। जिनजी। २ ॥

जिनजी नवमां सुविधिनाथ वान्दसांजी,
जिनजी दशमा शीतलनाथ देव। पक्खी।
जिनजी इग्यारमां श्रेयांस नाथ वान्दसांजी,
जिनजी बारमां वासुपुज्य देव। पक्खी। जिनजी। ३।

जिनजी तेरमां विमलनाथ वान्दसांजी,
जिनजी चवदमां अनन्त नाथ देव। पक्खी।
जिनजी पन्द्रमां धरमनाथ वान्दसांजी,
जिनजी सोलमां शान्तिनाथ देव। पक्खी। जिनजी। ४।

जिनजी सतरमां कुंथुनाथ वान्दसांजी,

गौतम सरीखे शिष्य तुम्हारे, गणधर हुए हमारे।
साधु स.ध्वी चारों संघ की गिनती करत न जाये।

देव मनुष्य, पशु आये, वाणी रसमय पाये, समवशरण मंडाये।
हे सर्वज्ञ ज्ञान गुण दाता, इन्द्र नरेन्द्र महाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे। तीन। २।

जन जन के जीवन में प्रभुवर, स्नेह की ज्योति जगाओ।
वसुन्धरा की प्यास बुझाकर, नव सन्देश सुनाओ।

अब तो अवसर आया, 'गणेश' कच्चा पाया, पक्का जिसे बनाओ।
हे दुर्जन के त्राता, तुमको हम नत करते माथा।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे। तीन। ३।

(१३६)

॥ जिनेश्वर वीर और उनके ॥

(तर्ज : कभी सुख है कभी दुःख है ....)

जिनेश्वर वीर और उनके, शिष्य अब याद आते हैं।
हरष करते भजन गाते, बड़ों को सर झुकाते हैं। टेर।

जिनेश्वर—डसा कौशिक अंगूठे में, वहाई दूध की धारा।
क्षमा का वोध दे तारा, प्रभू वे याद आते हैं। १।

श्रमण - गये आनन्द श्रावक घर, भूल तत्क्षण क्षमाने को।
जो चोदह पूर्वी होकर भी, वे 'गौतम' याद आते हैं। २।

श्रमणी—पिता बिछड़े सिधाई मां, विकी और भोय रे डाली।

न फिर भी धैर्य त्यागा वह, 'चन्दना' याद आती है ।३।

श्रावक—देव मिथ्यात्व धारी के, कठिन परिषह सहे तीनो ।
तथापि व्रत न खांडा वे, 'कामदेव' याद आते हैं । ४ ।

श्राविका—जो स्त्री जाति की होकर भी, विलक्षण प्रश्न करती थी ।
ज्ञान चर्चा की रसिका वे, जयन्ती याद आती हैं । ५ ।

कहे केवल अरे 'पारस', बना अपना जीवन इनसा ।
यही है सार सुनने का, कि हम भी याद बनते हैं । ६ ।

(१३७)

॥ जिसने रागद्वेष कामादिक जीते ॥

जिसने रागद्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो । १ ।

विषयों की आशा नहीं जिनको, साम्य-भाव धन रखते हैं ।
निज-पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं ।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं । २ ।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।
नहीं सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूं ।
परधन वनिता पर न लुभाऊं, संतोषामृत पिया करूं । ३ ।

अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूं।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं। ४।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा-स्रोत बहे।
दुर्जन-क्रूर कुमार्ग-रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य-भाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।। ५।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे। ६।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे। ७।

होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे। ८।

धधक रहा है द्वेष दावानल,

प्रेम पयोधि बहाना, बहाना प्रभु ।

बीच भंवर में नैया फंसी है,

झट पट पार लगाना, लगाना प्रभु

न्याय मार्ग का पक्ष न छोड़ूं,

चाहे दुश्मन हो सारा जमाना, जमाना प्रभु ।

प्राणी मात्र को सुख उपजाऊं,

चाहूं न चित्त दुखाना, दुखाना प्रभु ।

मैं भी तुमसा जिन बन पाऊं,

परदा दुई का हटाना, हटाना प्रभु । ६

अमर निरन्तर आगे बढ़ूं मैं,

कर्त्तव्य वीर बनाना, बनाना प्रभु । ७

(१४१)

॥ जीवन उच्च बनाये ॥

हम जीवन उच्च बनायें २

दुर्गुण दुर्व्यसनों को तजकर, पावन हम बन जायें ॥

वैष्णव हो या बौद्ध शैव, चाहे जैनी भी कहलायें ।

पर अपनें आराध्य देव को, आज्ञा यदि ठुकरायें,

कैसे पार करेंगे इस पर, चिंतन तो कर पायें ॥ १ ॥

बातों के बंगले रहने में, कहो कैसे कुछ पायें ।

वातों के पकवान, पेट भरने ही क्या पावें,
वातों के वाहन सागर से, कैसे पार लगायें ॥ २ ॥

कीमती वातें हर शास्त्रों में, भरी पड़ी अनमोल।
पर जीवन में आ न सके तो, क्या है उनका मोल,
नहीं चलने वाली वातों से, इच्छित स्थान न पावें ॥ ३ ॥

आठ वर्ष के थे तब से, रट रहे शास्त्रों के वोल।
साधु आ गये फिर भी, मात्र है तांता जोड़,
ऊपर धार्मिक अन्दर तांता, इस अन्तर को मिटायें ॥ ४ ॥

धर्म नाम से लड़ मिट कर, क्यों आत्मा को म्लान बनायें।
राग द्वेष की कर वृद्धि, उल्टा क्यों धर्म लजायें,
जन्म अनन्त गया ये ऐसे, अब तो होश में आयें ॥ ५ ॥

राग द्वेष ईर्ष्या मत्सर, असत्य आदि को छोड़।
सत्यशील अपनायें, विषयों से मन को मोड़,
वन जायें अच्छे या धार्मिक, मुनि पंकज समझायें ॥ ६ ॥

(१४२)

॥ जीवा तूं तो भोलो रे प्राणी ॥

जीवा तूं तो भोलो रे प्राणी, इम रुलियो संसार। टेर।

मोह मिथ्यात्व की नींद में जीवा, सूतो काल अनन्त।
भव भव मांहे तूं भटकियो, जीवा ते साम्भल विरतन्त। १।

ऐसा अनन्ता जिन हुवा जीवा, उत्कृष्टो ज्ञान अगाध।

इण भव थी लेखो लियो जीवा, कुण बतावे थांरी आद

पृथ्वी पाणी अग्नि में जीवा, चौथी वायु काय।
एक एक काया मध्ये जीवा, काल असंख्यातों जाय

पंचमी काय वनस्पती जीवा, साधारण प्रत्येक।
साधारण में तूं वस्यो जीवा, ते सांभल सुविवेक।

सूई अग्र निगोद में जीवा, प्रतर असंख्याता जाण।
असंख्याती श्रेणी एक प्रतर में जीवा, इम गोला असंख्य प्रम

एक एक गोला मध्ये जीवा, शरीर असंख्याता जाण।
एक एक शरीर में जीवा, जीव अनन्ता प्रमाण।

तेमाँ थी अनादि जीवड़ा जीवा, मोक्ष जावे दगचाल।
एक शरीर खाली न हुवे जीवा, न हुवे अनन्त काल। ७

एक एक अभवी संगे जीवा, भवी अनन्ता होय।
वली विशेखे जानिये जीवा, जन्म मरण तू जोय। ८

दोय घड़ी काची मध्ये जीवा, पैसठ सहस सौ पांच।
छत्तीस अधिका जाणिजो जीवा, ए कर्मनी खाच। ६।

छेदन भेदन वेदना जीवा, नरक सही बहुवार।
तिण सेती निगोद में जीवा, अनन्त गुणी विचार। १०।

एकेन्द्री मांहे थी निकल्यो जीवा, इन्द्री पाम्यो दोय।
तव पुण्याई तांहरी जीवा, तेह थी अनन्ती होय। ११।

इम ते चोइन्द्री जीव मां जीवा, वे वे लाख ये जात।
दुःख दीठा संसार में जीवा, सुणतां अचरज वात। १२।

जलचर थलचर खेचरे जीवा, उरपर भुजपर जात।
शीत ताप तृष्णा सही जीवा, दुःख सह्या दिन रात। १३।

इम भमन्तो जीवड़ो जीवा, पाम्यो नर भवसार।
गर्भवास में दुःख सह्या जीवा, ते जाणे करतार। १४।

मस्तक तो हेठो हुवे जीवा, उपर रहे वेहुँ पाय।
आंख्यां आड़ी वेहु मुष्ठी रे जीवा, इम रह्यो भिष्टा घर माँय।१५।

वाप वीर्य माता रुधिर रो जीवा, इसड़ो लियो थें आहार।
भूल गयो जानम्या पछे जीवा, सेव्या करे अतिचार। १६।

कोड़ ऊँट सूई लाल करे जीवा, चांपे रूं रूं माँयं।
अष्ट गुणी हुए वेदना जीवा, गरभा वास रे माँय। १७।

जन्मतां हुवे कोड़ गुणी जीवा, मरता कोड़ा कोड़।
जन्म मरण री जीवड़ा जीवा, जाणजो मोटी खोड़। १८।

देश अनारज उपनो जीवा, इन्द्री हीणी होय।
आऊखो ओछो हुवे जीवा, धर्म किसी विध होय। १९।

कदाचित नरभव पामीयो जीवा, उत्तम कुल अवतार।
देह निरोगी पायने जीवा, यूं ही खोयो जमवार। २०।

ठग फांसीगर चोरटा जीवा, धीवर कसाइ री न्यात।
उपजी ने मुई गयो जीवा, ऐसी न रही कोई जात। २१।

चवदेई राजुलोक में जीवा, जन्म मरण री जोड़।
खाली बालाग्र मात्र ए जीवा, ऐसी न रही कोई ठोड़। २२।

ए ही जीव राजा हुवो जीवा, हस्ती बांध्या बार।
कबहिक करमां वशे जीवा, मिले न अन्न उधार। २३।

इम संसार भमतो थको जीवा, पाम्यो समकित सार।
आदरी ने छिटका दीवी जीवा, गयो जमारो हार। २४।

खोटा देवज सरधिया जीवा, लागो कुगुरु टेर।
खोटो धर्मज आदरी जीवा, कीधा चहुँ गति फेर। २५।

कबहिक तूं नरके गयो जीवा, कबहि हुवो तूं देव।
पुन्य पापना फली थकी जीवा, लागी मिथ्यातनी टेव। २६।

ओघा ने वली मुखपति जीवा, मेरु जेवड़ी लीध।
एक ही समकित विना जीवा, कारज नहीं हुवो सिद्ध। २७।

चार ज्ञान तणा धणी जीवा, नरक सातमी जाय।
चवदे पूरव नो भण्यो जीवा, पड़े निगोद रे मांय। २८।

भगवन्तो नो धर्म पाल्यां पछे जीवा, करणी न जावे फोक।
कदाचित पड़वाई हुवे जीवा, अर्ध पुदगल मांही मोक्ष। २९।

सूक्ष्म ने बादर पणे जीवा, भेली वर्गणा सात।
एक पुद्गल परावर्त नी जीवा, झीणी घणी छे वात। ३०।

अनन्ता जीव मुक्त गया जीवा, टाली आतम दोष।
नहीं गया नहीं जावसी जीवा, एक निगोदना मोक्ष। ३१।

पाप आलोई आपणा जीवा, अव्रत नाला रोक।
तेह थी देवलोक जावसी जीवा, पनरे भव माहि मोक्ष। ३२।

एहवा भाव सुणी करी जीवा, सरधा आणी नाय।
जिम आयो तिमहिज गयो जीवा, लख चौरासी मांय। ३३।

कोई उत्तम नर चिंतवे जीवा, जाणे अथिर संसार।
सांचो मारग सरधी ने जीवा, इण सूं राखो प्रेम।
कोड कल्याण छे तेहनो जीवा, ऋषि जयमल जो कहे एम। ३४।

(१४३)

॥ जैनों सब मिलकर ॥

(तर्ज : वो दिन धन होसी) (कोरो काजलियो)

पालो दृढ़ आचार, जैनों ! सब मिलकर। ध्रुव।

प्रातःकाल सदा उठ जाओ, अपने निज स्थानक में आवो।
आलस दूर निवार, जैनों सब । १

संतों को पंचांग नमाओ, देव धर्म को मन में ध्याओ।
जपो मन्त्र नवकार, जैनों सब । २।

सामायिक का लाभ उठाओ, प्रभु प्रार्थना विधि से गावो।
करो मधुर उच्चार, जैनों सब । ३।

नित नियम चौदह चितारो, व्रत पच्चखाण नया कुछ धारो।
रोको आश्रव द्वार, जैनों सब ...। ४।

करो मनोरथ त्रय का चिन्तन, अरु विश्राम चार का सुमिरन।
भाओ भावना बार, जैनों सब ।५।

सुनो सदा मुनियों का भाषण, पूछो प्रश्न करो हल धारण।
सीखो ज्ञान अपार, जैनों सब ।६।

छाने बिना न पानी पीयो, अशुद्ध भोजन कभी न खाओ।
पालो नित चौविहार, जैनों सब....।७।

अष्टम पाक्षिक पौषध धारो, प्रतिक्रमण कर दोष निवारो।
प्रायश्चित लो धार, जैनों सब....।८।

सोते समय करो संथारा, आयुष्य का रक्खो आगारा।
उठने पर लो पार, जैनों सब ।९।

महा मन्त्र को कभी न भूलो, हर कामों में पहले बोलो।
अथवा लोगस्स चार, जैनों सब....।१०।

जैन धर्म पर रक्खो श्रद्धा, करो न झूठी परमत निन्दा।
रहो सदा हुशियार, जैनों सब....।११।

रहो परस्पर हिलमिल जुलकर, कलंक निन्दा चुगली तजकर।
करो संघ जयकार, जैनों सब....।१२।

जो जिन धर्म लजावे कोई, उनको साथ न देना कोई।
करदो बहिष्कार, जैनों सब....।१३।

सात व्यसन को दूर निवारो, बारह श्रावक व्रत स्वीकारो।
लो इक्कीस गुणधार, जैनों सब....।१४।

जीवन जीवो ऐसा सुन्दर, लगे सभी को प्यारा सुखकर।
'पारस' करे पुकार, जैनों सब ।१५।

(१४४)

॥ जो आनन्द मंगल चावो रे मनावो महावीर ॥

(तर्ज : ना छेड़ो गाली दूंगी रे, भरवादे मोय नीर ....)

जो आनन्द मंगल चावो रे, मनावो महावीर। टेर।

प्रभु त्रिशलाजी के जाया, है कंचन वरणी काया।
जांके चरणां शीश नमावो रे, मनावो महावीर। १।

प्रभु अनन्त ज्ञान गुणधारी, है सूरत मोहन गारी।
जांका दर्शन कर सुख पावो रे ॥ म० ॥ २।

प्रभु जी की मीठी वाणी, है अनन्त सुखों की दाणी।
थे धार धार तिर जावो रे ॥ म० ॥ ३।

जांके शिष्य वड़ा है नामी, सदा सेवो गौतम स्वामी।
जो रिद्ध सिद्ध थें पावो रे ॥ म० ॥ ४।

थांरा सर्व विघन टल जावे, मनवांछित सुख प्रकटावे।
फिर आवागमन मिटावो रे ॥ म० ॥ ५।

ये साल गुण्यासी भाई, देवास शहर के मांही।
कहे "चौथमल" गुण गावो रे ॥ म० ॥ ६।

(१४५)

॥ जो भगवती त्रिशला तनय ॥

जो भगवती त्रिशला तनय, सिद्धार्थ कुल के भान है।
लिया जन्म क्षत्रिय कुण्ड में, प्रियनाम श्री वर्धमान है।

जो स्वर्ण-वर्ण प्रलबभुज सरसिज नयन अभिराम है।
करुणा सदन मर्दन मदन, आनंदमय गुणधाम है।

जो अनन्त ज्ञानी है प्रभु, और अनंत शक्तिमान है।
किस मुख से वर्णन करू', मेरी तो एक जबान है।

योगेन्द्र मुनि चिन्तन निरत, जिनको कि आठों याम है।
उन वर्धमान जिनेश को, मेरे अनेक प्रणाम है।

(१४६)

॥ झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥

(तर्ज : विजयी विश्व तिरंगा प्यारा)

झण्डा ऊंचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नगारा। टेर।

ऋषभदेव ने इसको रोपा, भरत चक्रवर्ती को सौंपा।
उसने इसका किया पसारा। १।

महावीर ने इसे उठाया, भारत को संदेश सुनाया।
धर्म अहिंसा जग हितकारा। २।

गौतम गणधर ने अपनाया, अनेकान्त जग को समझाया।
स्याद्वाद करके विस्तारा। ३।

हुआ कुमार पाल भूपाला, जैन धर्म को जिसने पाला।
इस झण्डे का लिया सहारा। ४।

आज इसे मुनियों ने संभाला, भारत में कर दिया उजाला।
यही करेगा देश सुधारा। ५।

स्याद्वाद और दया धर्म की, दुनियां प्यासी इसी मर्म की।
इसमें तत्त्व भरा है सारा। ६।

हम सब मिल करके सेवेंगे, नहीं जरा नमने देवेंगे।
चाहे हो बलिदान हमारा। ७।

(१४७)

॥ तजो निशि भोजन दुःखदाई ॥

(तर्ज : दया पालो बुधजन प्राणी......)

सुगुरु की सीख सुनो भाई ! तजो निशि भोजन दुःखदाई। टेर।

प्रकट औगुण अनेक यामें, कहां लो कह कर दर्शावें।
तदपि दिग्दर्शन करवावें, श्रवण कर भव्य बोध पावे।

दोहा—लिखा चरक में रात्रि को, हृदय कमल संकुचाय।
अतः रात्रि भोजन करने से, अजीर्णाग्नि बढ़ि जाय।
सहे जासे नर कठिनाई। १।

भक्ष्य में मर्कटिका आवे, खाय सो कोढ़ी हो जावे।
जलोदर जूंवां से थावे, मरणपर्यन्त कष्ट पावे।

दोहा—वमन करावे मक्षिका, केश करे स्वर भंग।
पित्ती निकले सर्व अंग में, कीड़ी के प्रसंग।
नष्ट हो जावे चतुराई। २।

दृष्टि तीखी विन दिन माहीं, जीव सूक्ष्म दीखे नाहीं।
दीखे वह रात्रि में कैसे, करो वुध जन विचार ऐसे।

दोहा—निशि में मत भोजन करो, ऋषि कथन मन लाय।
कर्म पुराण खोल कर मित्रों, मुनि नखी अध्याय।
प्रेम से पढ़लो चित्त लाई। ३।

रात्रि में फिर और खावे, मनुज वे निशिचर कहलावे।
निशाचर रावण के भाई, नहीं रघुवर के अनुयायी।

दोहा—रामायण की उक्ति से, होय सिद्ध यह बात।
यों जानी श्री रामचन्द्र के, बनो भक्त सब भ्रात।
त्याग रावण से मित्राई। ४।

रात्रि का भोजन तज दीजे, मनुज अवतार सफल कीजे।
क्षणिक सुख में न चित्त दीजे, सुगुरु की सीख मान लीजे।

दोहा—मास एक में होय है, पाक्षिक व्रत फल सार।
निशि भोजन के त्याग किये से, यह निश्चय अवधार।
कहे मुनि माधव समझाई। ५।

(१४८)

॥ तन मन तुम पर वारें मेरे प्यारे जिनंद ॥

(तर्ज : काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम

तन मन तुम पर वारें, मेरे प्यारे जिनन्द। टेर।

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपारस चंदन।

दीनों के दुलारे। १। मेरे प्यारे।

सुविधि शीतल श्रेयांस जिनेश्वर, वासपूज्य श्री विमल मुनीश्वर।

अनंतनाथ रखवारे। २। मेरे प्यारे।

धर्म शांति कुंथु अरह स्वामी, मल्लिनाथ मुनिसुव्रत नामी।

नमी नेमि रखवारे। ३। मेरे प्यारे।

पार्श्वनाथ श्री महावीर प्रभु, ग्यारह गणधर विहरमान विभु।

ये सब धर्म सितारे। ४। मेरे प्यारे।

अजर अमर अखिलेश निरंजन, मुनि मन रंजन भव भय भंजन।

सिद्ध सुपद को धारे। ५। मेरे प्यारे।

उपाध्याय आचार्य हमारे, सकल संत जन धर्म दुलारे।

पांचों पद विस्तारे। ६। मेरे प्यारे।

गुरु निर्ग्रन्थों ने समझाया, सार मंत्र नवकार बताया।

सुर्यभानु स्वीकारे। ७। मेरे प्यारे।

(१४९)

॥ तन कोई छूता नहीं ॥

तन कोई छूता नहीं, चेतन निकल जाने के बाद।

फेंक देते फूल को, खुशबू निकल जाने के बाद। १।

आज जो करते किलोलें, खेलते हैं साथ में।

कल डरेंगे देख तन, निर्जीव हो जाने के बाद॥ २॥

बोलते जब तक सगे, हैं चार पैसे पास में।

नाम भी पूछे नहीं, पैसा निकल जाने के बाद ॥ ३ ॥

स्वार्थ प्यारा रह गया, असली मुहब्बत उठ गई ।
भूल जाता मां को बच्चा, पर निकल जाने के बाद ॥४॥

इस अस्थिर संसार में, तूं क्यों घमण्डी हो रहा ।
देख फिर पछतायगा, समय निकल जाने के बाद ॥५॥

कैसे सुखिया होयगा, जो नहीं करता धर्म ।
नरक में जाना पड़ेगा, पुण्य निकल जाने के बाद ॥६॥

(१५०)

॥ तप बड़ो रे संसार में ॥

तप बड़ो रे संसार में, जीवा उज्ज्वल थावे रे ।
कर्म रूप ईंधन जले, शिव रमणी सिधावे रे ॥ टेर ॥

तप सूं रूप पावे घणो, पावे सुर अवतारो रे ।
रिद्ध सिद्ध सुख संपदा, पामे लील भंडारो रे ॥ १ ॥

तप सूं रोग दूरा टले, विघ्न सहू मिट जावे रे ।
तप सूं देवता सेवा करे, वलि लक्ष्मी घर आवे रे ॥२

खरो खजानो तप माल रो, कोइक पुण्यवंत पावे रे ।
दुर्गती जाता ने पाले नहीं, शिव रमणी सिधावे रे ॥३

राजा आदर देवे घणो, ज्यारो सगला नर धीरो रे ।
लोक भाषा ऐसी कहे, स्यारो तपस्या में सीरो रे ॥४

पोते जी तपस्या करे, ज्यारी आन बहु माने रे ।

सेवक आन लोपे नहीं, आवागमन सूं छूटे रे ॥ ५ ॥

अज्ञान पणे जो तपस्या करे, तो भी निष्फल नहीं जावे रे।
ज्ञान सहित तपस्या करे, वे तो शिव रमणी सिधावे रे ॥६॥

करतां एक नवकारसी, सो वरस नरका सूं छूटे रे।
दस पच्चक्खाण में नफो घणो, जन्म मरण सूं छूटे रे ॥७॥

तपस्या कीवी महावीरजी, कर्मा ना दल काटिया रे।
धन्ना मुनिश्वर तप तपियो, सर्वार्थ सिद्ध जाय लागा रे ॥ ८ ॥

बेले बेले कियो पारणो, गणधर गौतम स्वामी रे।
खंदक मुनि तप तपियो, हुआ मुगत का गामी रे ॥९॥

अर्जुन माली तप तपियो, मुनिवर मेघ कुमारो रे।
परदेशी राजा तपस्या करी, पाया अमर विमानो रे ॥१०॥

आठ राणी श्री कृष्ण की, ब्राह्मी चन्दनबाला रे।
तेईस श्रेणिक नी सुन्दरी, काटिया कर्म ना जाला रे ॥११॥

तोड़िया कर्म चण्डाल ने रे, काया सूं तपस्या करी करी रे।
आसोज त्रेपन चौमासो रे, जेठ मुनि कहे तप सारो रे ॥१२॥

(१५१)

॥ तारो तारो तारो निज आत्मा ॥

(तर्ज : तेजा की, लाग्यो-लाग्यो जेठ)

तारो, तारो, तारो निज आत्मा ने तारो रे।
मिनख जमारो आयो हाथ में। टेर।

हिंसा झूठ चोरी जारी लोभ लालच छोड़ो रे।
मनड़ा ने मोड़ो माया मोह सूं ॥ तारो

वैर जहर झगड़ा राड़ आपसी मिटाओ रे।
जिन गुण गावो चित्त चावसूं ॥ तारो

ध्यान जिन राज में थे स्नेह लगाओ रे ।
लाभ कमाओ सर संग सूं ॥ तारो

मीठा मीठा ज्ञान ध्यान आतम में रमावो रे।
सटके सीधावो शिव लोक में ॥ तारो।

ज्ञानी वण मायली आंखियां सूं जोवो रे ।
सोवो मती भव नींद में ॥ तारो।

जागण रो मौको आयो, सुगुरु जगावें रे ।
धर्म सुणावे जिन राजरो ॥ तारो।

(१५२)

॥ तुम समान बन जाऊं मैं भगवान ॥

तुम समान बन जाऊं मैं भगवान ॥
तेरे दर्शन से मैं स्वामी, अन्तर ज्योति जगाऊं।
राग द्वेष अरु माया बन्धन से, छुटकारा पाऊं ॥ १ ॥

सिद्ध समान स्वरूप जो मेरा, उसको मैं पा जाऊं।
आप रूप अपना कर पाकर, अपने में रम जाऊं ॥ २ ॥

चिदानन्द चित्त आलम मेरा, तुम समान बन जाऊं।

अपरिमित है शक्ति तुम्हारी, उसको मैं प्रगटाऊं ॥ ३ ॥

ज्ञायक रूप सरूप हमारा, तुम समान बन पाऊं।
यह चिद पिंड अखण्ड अरूप, अक्षय पद पाऊं ॥ ४ ॥

अपना रूप स्वयं निर्मित, अपने पद में पाऊं।
मैं अविनाशी जगत विनाशी, अविनाशी शिव पाऊं ॥ ५ ॥

मैं नहीं पर का पर नहीं मेरा, भेद ज्ञान को लाऊं।
रत्न त्रयी निधि अपनी पाकर, आतम ज्ञान लगाऊं ॥ ६ ॥

(१५३)

॥ तुम माल खरीदो ॥

(तर्ज : तन मन से फेरो माला, काटे रे जाला जीव का)

त्रिशला नन्दन की खुली दुकानजी, तुम माल खरीदो ॥ टेर ॥

सूत्र रूप भरी बहु पेटी, मुनि वर बने बजाजी।
वजेह २ का माल देखलो, कर अपना मन राजी जी ॥ १ ॥

जिनवाणी को गज हैं सांचो, जरा फरक मतजान।
नाप नाप ने देवे सत गुरु, मत करो खेंचा तानजी ॥ २ ॥

जीव दया की मल मल भारी, शुद्ध मन मशरू लीजे।
डबल जीण समता तणो सरे, चावे सो कह दीजेजी ॥ ३ ॥

तपस्या को बन्दागर भारी, साड़ी ले सन्तोष।
ऐसा कर व्यापार जिनों से, चेतन पावे मोक्ष जी ॥ ४ ॥

खुशी होवे तो सौदा लेना, नहीं जबरी का काम।

मन मानें सो माल ले जावो, मैं नहीं मांगा दामजी ॥ ५ ॥

माल विकेछे थोड़ी जिणसे, खरच पूरो नहीं चाले।
आवेगा कोई उत्तम प्राणी, माल हमारे पल्लेजी ॥ ६ ॥

माल विके तो रहनो होसी, सुनजो भवियन वात।
भरिया खजाना कदियन खूटे, सत गुरु दीना हाथजी ॥ ७ ॥

उन्नीसे छत्तीस साल में, अम्वाले चौमास।
'करण मुनि' उपदेश सुनाया, मोक्ष जाने की आसजी ॥ ८ ॥

(१५४)

॥ तुम समान वन जाऊं मैं गुरुवर ॥

तुम समान वन जाऊं मैं गुरुवर २।
सरल सत्य सौजन्य मूर्ति में, तेरो पथ अपनाऊं।
तुम समान जड़ प्रेम गंवाकर, अपने में रम जाऊं। गुरुवर। १

माया मान मनोज मोह मद, मैं भी मंदा कर पाऊं।
तेरे चरण चिह्न पर अपना, मैं सर्वस्व लुटाऊं। २।

मान अपमान हर्ष शोक में, समरस भाव जगाऊं।
तुम समान अपने पथ पर, सरपट दौड़ लगाऊं। ३।

दीन दुखी पर अनुकम्पा तेरी, मैं करुणा लख पाऊं।
आधि व्याधि संकट में तुमसा, धीरज मैं रख पाऊं। ४।

शील संतोष सुशील सौम्य सम, समता का पद प्रगटाऊं।
शीलवती शुद्ध शांतिमयी, मैं चन्द्रकला खिल जाऊं। ५।

स्वर्ण समान कूचकर चेतन, शिव पद कदम वढ़ाऊं।
ज्ञान विज्ञान 'विचक्षणता' में, चरण भ्रमर वन जाऊं। ६।

(१५५)

॥ तू उड़जा हंस अकेला रे ॥

(तर्ज : चल उड़जा रे पंछी)

तू उड़जा २ हंस अकेला रे, यह है जग जीवन मेला।
पृथ्वी पर दो साधु आये, एक गुरु एक चेला।
गुरु की करनी गुरु जायेगा, चेले की करनी चेला। १।

धरती पर एक महल वनाया, पंच तत्त्व का गारा।
प्रेमी नगर से ज्ञानी वुलाये, महल वना अलवेला। २।

कोडी-कोडी माया जोड़ी, जोड़ जमी में मेला।
सभी छोड़ कर चला है, वन्दे संग चले ना धेला। ३।

(१५६)

॥ तुम हो तीन जगत के स्वामी ॥

(तर्ज : मेरा जूता है जापानी)

तुम हो तीन जगत के स्वामी, तुम हो घट २ के अन्तर्यामी।
अर्हन् ! चौवीसी भगवान, विनय से वार २ वंदामी ॥ टेर ॥

ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, पदम, सुपाशा २।
चन्द्र, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासु, विमल, शिववासा २।
मुझमें वहुत भरी है खामी, करदो मुझको सत्पथगामी। १।

अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, सुव्रत, नमि नेमा २
पारस, महावीर, ग्यारा गणधर, बीस विहर जिन खेमा २
कहता 'पारस' चरणे नामी, करना कृपा कृपानिधानी । २

(१५७)

॥ तूं धन तूं धन तूं धन तूं धन ॥

तूं धन तूं धन तूं धन तूं धन, शांति जिनेश्वर स्वामी ।
मिरगी मार निवार कियो प्रभु, सर्व भणी सुख कामी । १ ।

अवतरीया अचला दे उदरे, माता साता पामी ।
शांति शांति जगत वरताई, सर्व कहे सिर नामी । २ ।

तुम प्रसाद जगत सुख पायो, भूले मूढ़ हरामी ।
कंचन डार कांच चित्त देवे, वांकी बुद्धि में खामी । ३ ।

अलख निरंजन मुनिमन रंजन, भय-भंजन विसरामी ।
शिव-दायक लायक गुण गायक, वायक है शिव-गामी । ४ ।

'रतनचन्द्र' प्रभु यछुअन मांगे, सुन तूं अन्तरयामी ।
तुम रहवन की ठौर बतादो, तो हुँ सहु भर पामी । ५ ।

फेरी जिसने तेरी माला, उसका संकट तूने टाला।
चण्डकोशिया जैसे तारे, बड़े-बड़े शैतान ॥ तेरी.... ॥ २ ॥

यज्ञबलि को दूर हटाया, दया-धर्म का नाद बजाया,
छूआछूत का भूत भगाया, मानवता का मान बढ़ाया।
'ज्ञानमुनि' जिनधर्म का जग में, खिला खूब उद्यान ॥ तेरी....।३।

(१६१)

॥ तेरा ही आधार है ॥

(तर्ज : चुप-चुप खड़े हो ....)

डगमग डगमग नांव मझधार है।
तेरा ही आधार प्रभु, तेरा ही आधार है ॥ ध्रुव ॥

झंझा के झकोरे जैसे, झूलने सी झूलती।
छोटी-बड़ी लहरियों पै, उतराती डूबती।
आशा की किरन तूं ही, तूं ही पतवार है ॥ १ ॥

करुण क्रन्दन सुन, चन्दना को तार दी।
अर्जुन माली की नाथ, बिगड़ी सुधार दी ॥
दया शील देव क्यों, देर मेरी बारी है ॥ २ ॥

माता तूं ही, पिता तूं ही, तूं ही मेरा प्राण है।
तेरे हाथ लाज अब मेरी भगवान है ॥
दीन बन्धु दीन की छोटी सी पुकार है ॥ ३ ॥

मंगल करण तूं ही तारण तरण है।

है यह तिमंजला मकान, मिला तन बंगला आलीशान । १ ।

पांव से लेकर कटि के ताँई, पहिला मंजिल है सुन भाई।
जिसमें है टट्टी का स्थान, मिला तन बंगला आलीशान । २ ।

कटी से ग्रीवा तक पहचानों, इसमें है मशीन एक मानो।
पचता जिसमें भोजन पान, मिला तन बंगला आलीशान। ६ ।

ग्रीवा से तीजा मंजिल सर, जिसमें बावुजी का दफ्तर।
टेलीफोन लगे दो कान, मिला तन बंगला आलीशान । ४ ।

दुर्विन है नैनों का प्यारा, वायु हित है नाक दवारा।
मुख से खाते हैं पकवान, मिला तन बंगला आलीशान । ५ ।

लेकिन तुमको मिला किराये, जिसको पाकर क्यों बोराये।
वैठे इसको अपना मान, मिला तन बंगला आलीशान। ६ ।

जब हुक्म मौत का आवे, बंगला खाली तुरन्त करावे।
'चौथमल' कहे भजो भगवान, मिला तन बंगला आलीशान। ७ ।

(१६४)

। थंने धीरे से समझाऊं ।

थंने धीरे से समझाऊं, थने छाने से समझाऊं ।
थने मीठी मीठी वाणी सुनाऊं रे, चेतनियां बारे२ क्यूं भटके।
आत्म धन से तू भरपूर, फिर भी किसा नशा में चूर।
लाखीणों सो जनम गमायो रे चेतनियां.... । १ ।

बाहर घर में घणो उजालो, आत्मा में घोर अंधेरो ।

ज्ञान दीपक से जगमग, ज्योति जगाले । २ ।

इण शरीर री भूख मिटावें, रकम २ रा भोजन जीमे ।
आत्मा री भूख कियां मिट जासी रे । ३ ।

ठंडा २ जल सू न्हावे, खुशबू ही का तेल लगावे ।
बढ़िया २ कपड़ा पेरावे रे । ४ ।

मोटर गाड़ी चढ़ २ जावे, नाटक सिनेमा में नित जावे ।
झूठी मस्ती में पागल बन जावे रे । ५ ।

मखमल री सेजां पर सोवे, घणों सुख तू तन न देवे ।
झूठी सांची गप्पां लड़ावे रे । ६ ।

आत्मता निर्मलता चाहो, सांचो सपनो प्राणी पावे ।
कंचन सा जीवन चमकाले रे । ७ ।

(१६५)

। थारी छोटी उमरिया पापों में बीतो जाय ।

थारी छोटी उमरिया, बातों में बीती जाय ।
हाँ रमतों में बीती जाय, अब तो चेत रे ।

माता कहे छे पुत्र हमारो, बहिन कहे मारो भीर ।
त्रिया कहे छे पति हमारो, पैसे का सब पीर । १ ।

आयो अकेलो जासी अकेलो, चले कछु नहीं साथ ।
धन दौलत और कुटुम्ब कबीलो, मतलब के सब यार । २ ।

प्रभु नाम रो सुमिरण करलो, जो चावो कल्याण ।
दादोसा कहे सुनो सब भाई, और सभी जंजाल । ३ ।

(१६६)

। थें दीक्षा ले लो ।

(तर्ज : गोपीचन्द राजा ....)

थें दीक्षा ले लो, दीक्षा लेवण में भारी मौज है। टेर।

दीक्षा लीधी आदिनाथ प्रभु, भरताधिप महाराज ।
नेमनाथ राजुल दीक्षा ले, पायो शिवपुर राज जी । १ ।

अर्जुन माली सो हत्यारो, दीक्षा ले शिव पायो ।
वीर प्रभु रा चरण शरण में, जीवन सफल बनायो जी । २ ।

नहीं कमाणो, नहीं कजाणो, नहीं बोरणो ब्याज ।
कोर्ट कचेड़ी में नहीं जाणो, नहीं गमाणो लाज जी । ३ ।

नहीं पोवणो, नहीं पीसणो, नहीं लावणो नाज ।
चिंता शोक न मन में लाणो, कर नहीं देणो राज जी । ४ ।

नहीं रोवणो नहीं धोवणो, नहीं कराणो काज ।
सदा आत्म साधन में रहणो, पाणो निज गुण राज जी ।५ ।

ज्ञान ध्यान रो माल कमाणो, निर्दू षण अन्न लेणो ।
सत्य शील ने मित्र बणाणो, शुद्ध रूप ने पाणो जी । ६ ।

(१६७)

। दयामय ऐसी मति हो जाय ।

दयामय ऐसी मति हो जाय । ध्रुव ।

(१६८)

त्रिभुवन की कल्याण कामना, दिन दिन बढ़ती जाय । १ ।

भूले भटके उल्टी मति के, जो हैं जन समुदाय ।
उन्हें दिखाऊँ सच्चा सत्पथ, निज सर्वस्व लगाय । २ ।

औरों के दुख को दुख, समझूं सुख का करु उपाय ।
अपने सब दुःखों को सहलूं, पर दुःख सहा न जाय । ३ ।

सत्य धर्म हो सत्य कर्म हो, सत्य ध्येय बन जाय ।
सत्यान्वेषण में ही जीवन, प्रेमी यह लग जाय । ४ ।

(१६८)

॥ दया करने में जिया लगाया करो ॥

(तर्ज : तिलंगी दादरा)

दया करने में जिया लगाया करो । टेर ।

चलो तो पहिले भूमि को देखो,
छोटे मोटे जीवों को बचाया करो । दया० । १ ।

बोलो तो पहिले मन मांही सोचो,
नाहि किसी के दिल को दुखाया करो । दया० । २ ।

बेहक का माल न खाओ कभी तुम,
नाहिं पर धन पे ललचाया करो । दया० । ३ ।

चाहे हो गोरी चाहे हो काली,
पर नारी से निगाह न लगाया करो । दया० । ४ ।

पास हो माल खजाना तुम्हारे,

पर जीवों का दुःख मिटाया करो ।दया० । ५ ।

चारों ही आहार न रात में खाओ,

ऐसी बातों को दिल में जमाया करो । दया० । ६ ।

चौथमल कहे आठों ही पहर में,

दो घड़ी प्रभुजी को ध्याया करो । दया० । ७ ।

(१६६)

॥ दया को लेवे दिल में धार ॥

(तर्ज : म्हारो श्याम करेला अवधार, घनश्याम री महिमा अपार)

दया को लेवे दिल में धार, वो भव सिन्धु तिरे । टेर ।

दया धर्म सब में परधान, सब मज़हब करते फरमान ।
देखो सूत्र दरम्यान, वो भव सिन्धु तिरे । १ ।

देखो नेमनाथ भगवान, त्यागी राजुल महा गुणवान ।
पशुओं पे करुणा आन, वो भव सिन्धु तिरे । २ ।

धर्म रुचि तपसी अणगार, कीड़ियां की दया दिल धार ।
कड़वा तुम्बा को कीनो आहार, वो भव सिन्धु तिरे । ३ ।

मेघ रथ राजा हुवा भूपाल, शरण परे वो रख्यो दयाल ।
कीनो है काम कमाल, वो भव सिन्धु तिरे । ४ ।

फेर हुवा शिवी राजन, कबूतर की बचाई जान ।
है विष्णु में लिखा बयान, वो भव सिन्धु तिरे । ५ ।

नबी मुहम्मद हुआ हजूर, तन को देना किया मंजूर।
फाकता पै कीनी दया पूर, वो भव सिन्धु तिरे। ६।

दया हीन मत तजो तमाम, सब मजहब में वही निकाम।
मानो यह सच्चा कलाम, वो भव सिन्धु तिरे। ७।

बैठ दया की जहाज मंझार, भव सिन्धु दे पार उतार।
यही है तप जप सार, वो भव सिन्धु तिरे। ८।

'चौथमल' कहे सुनो सुजान, दया धर्म महा सुख की खान।
यही है वीर फरमान, वो भव सिन्धु तिरे। ९।

(१७०)

॥ दया पालो बुधजन प्राणी ॥

(तर्ज : नेमजी की जान बड़ी भारी)

दया पालो बुधजन प्राणी, स्वर्ग अपवर्ग सुख दानी। टेर।

दया से दुःख- दरिद्र जावे, अचिंती कमला घर आवे।
सुयश कीरति दहु दिशि छावे, इन्द्र अहमिंदर पद पावे।

दोहा—अष्ट सिद्धि नव निधि मिले, बिन उपाय सुख भोग।
टले विघन बिन जतन ही सरे, सफल होय उद्योग।
बात यह गुरु मुख से जानी २। १।

दया में धर्म जगत माने, भेद को बिरला ही जाने।
जीव की जाति न पहिचाने, वृथा ही पक्षपात ठाने।

दोहा—पंचेन्द्रिय अरु तीन बल, आयु सांस उसास।

दीन काय षट कहे, सुनो जगनाथ ! पुकार । टेर ।

प्रभो ! तुम तो मुक्ति सिधारो, अब हमरो कौन सहारो ।
बतावो जगदाधार । १ ।

गति-शक्ति विकल तन पायो, कछु जोर चले न चलायो ।
अपाहिज हम दुःख टार । २ ।

दीसे नहीं कोई सहाई, सब जग हमरो दुःखदाई ।
कहां जावें किरतार । ३ ।

'को' धन 'को' सुख के तांई, 'को' धर्म हेत अन्याई ।
करे हमारो संहार । ४ ।

प्रभु पर्व दिवस जब आवे, तब भी नहीं करुणा लावे ।
करे हम घात अपार । ५ ।

प्रभु तुम भय जरा न लावे, हिंसा में धर्म बतावे ।
कुयुक्ति लगा लबार । ६ ।

सुनी विनय वीर प्रभु बोले, तुम दिये संतन के खोले ।
सरावग साखीदार । ७ ।

जो मुनि श्रावक फिर जावे, तो कहां पे न्याय करावे ।
बतावो नाथ उचार । ८ ।

जो साधु साध कहाई, करे धर्म में तुम वध धाई ।
तिन्हों को नरक तैयार । ९ ।

सुन वीर प्रभु की वाणी, षट काय कहे हर्षानी ।
धन्य तुमरो अवतार । १० ।

दुनियां के बाजार में प्यारे, लाखों लोग ठगाए जी।
ऐसी वस्तु लेना मित्र तूं, यहां वहां सुख पाएजी। १।

लिया किसी ने रत्न जवाहर, किसी ने सोना चांदी जी।
किसी ने मादक वस्तु जहर में, पूंजी सभी गुमा दी जी। २।

राम ने अपना जन्म सफल कर, जग में नाम कमायाजी।
जीवन रत्न के बदले मूरख, रावण अपयश पायाजी। ३।

शेर शिवा राणा प्रताप ने, शौर्य तेज अपनाया जी।
पन्ना ने स्वामी भक्ति में, प्यारा लाल कटाया जी। ४।

शूल भी है फूल भी है, दुनियां एक बगीचा जी।
'केवल' आनन्द पाया जिसने, पुण्य का पौधा सींचा जी। ५।

(१७४)

॥ दुनियां में सबसे न्यारा ॥

दुनियां में सबसे न्यारा, यह आत्मा हमारा।
सब जानन देखन हारा, यह आत्मा हमारा॥

यह जले नहीं अग्नि में, भीगे न कभी पानी में।
सूखे न पवन के द्वारा, यह आत्मा हमारा॥ १॥

शस्त्रों से कटे नहीं काटा, कोई तोड़ सके नहीं भाटा।
मरता न मरी का मारा, यह आत्मा हमारा॥ २॥

मां बाप सुता सुत नारी, सब मतलब के संसारी।
देता नहीं कोई सहारा, यह आत्मा हमारा॥ ३॥

तूं कहता धन घर मेरा, अब हुआ लदावु डेरा।
चले पुण्य पाप संग तेरा रे। दु०। ७।

सब छोड़ी काण मुलाजा, मिली मुख सुख धन सब खाजा।
तेरा करके मृत्यु काजा रे। दु०। ८।

फिर उसी सेज के मांई, पर पुरुष को लेत बुलाई।
फिर तुझको दे बिसराई रे। दु०। ९।

राजा परदेशी की प्यारी, थी सुरीकांता नारी।
दिया पति को मारी रे। दु०। १०।

गुरु प्रसादे, 'चौथमल' गावे, सच्चा उपदेश सुनावे।
कर धर्म ध्यान सुख पावे रे। दु०। ११।

साल गुणयासी खासा, किया उज्जैन चौमासा।
किया लूणमण्डी में वासा रे। दु०। १२।

(१७६)

॥ दुनियां दुःखकारी ॥

(तर्ज : कोरो काजलियो....)

दुनियां दुःखकारी, तूं छोड़ सके तो छोड़, दुनियां दुःखकारी। टेर

पाप अठारह करना पड़ता, भार कर्म का बढ़ता जाता।
कर्म बन्ध की ठौर। १।

पेट पापियो खूब सतावे, देश दिशावर में भटकावे।

कोइक घर में पुत्र कंस सा, कोइक घर में नार कर्कशा ।
निस की माया फोड़ । ३ ।

कोइक घर में सासू लड़ती, नणंद भोजायां झगड़ा करती ।
बोले कड़वा बोल । ४ ।

घर में बेटा, पोता, पोती, दादी, रसोई न्यारी करती ।
दादो चलियो छोड़ । ५ ।

कोइक घर में नौ दस बेटा, परण्या न्यारा हो गया मोटा ।
बूढ़ो कमाने दौड़ । ६ ।

लड़की मोटी वर नहीं मिलियो, कोइक ने वर खोटो मिलियो ।
गयो दिसावर छोड़ । ७ ।

घणी बेटियां दुखड़ो मोटो, इज्जत रखणी धन रो टोटो ।
पुत्र मिलियो दिल तोड़ । ८ ।

मन रो चायो कुछ नहीं होवे, जो नहीं चावो वो झट होवे ।
जग में मोटी खोड़ । ९ ।

तन में, मन में लगी बिमारी, रोग शोक में दुखियो भारी ।
जीव झुरे चहुँ ठोर । १० ।

जन्म मरण का दुःख अनन्ता, दुखड़ा जैसे सुई चुभन्ता ।
साडा तीन करोड़ । ११ ।

गर्भवास में ऊँधो लटक्यो, नौ महिना मलमूत्र में लिपट्यो ।
रेयो अंग सिकोड़ । १२ ।

नरक गति का दुःख अनन्ता, छेदन भेदन खूब करन्ता।
मच रही दौड़ा दौड़। १३।

तिर्यन्च गति का दुःख अपारा, मरता डरता भगे बिचारा।
दुःख री मोटी ठोड़। १४।

जो सुख चाहो दुनियां छोड़ो, संयम से तुम नाता जोड़ो।
पाप कर्म सब छोड़। १५।

(१७७)

॥ दुनियां पइसे री पुजारी ॥

दुनियां पइसे री पुजारी, पूजा करते नर और नारी।
जग में पाप कमावे भारी रे, माया पइसे की। १।

पइसे बिन माता मुख मोड़े, पिता देख कर्म ने फोड़े।
घर में झगड़ो टंटो होवे, माया पइसे की। २।

पइसो मां बापां ने प्यारो, नहीं तो लागे बेटो खारो।
उणने करदे घर सूं न्यारो, माया पइसे की। ३।

पइसो पास में पत्नि राजी, नहीं तो ताना देवे मारी।
केवे पीहर में सुख भारी, माया पइसे की। ४।

पइसो परदेशां ले जावे, नहीं तो गलियां गोता खावे।
उणने पागल के बतलावे, माया पइसे की। ५।

पइसो छप्पन भोग बनावे, नहीं तो भूखा हो सो जावे।
उणने कोई नहीं जगावे, माया पइसे की। ६।

धन्धा में भोली दौड़ रही....

भूख प्यास भी सहन करे रे, ठण्ड सूं भय नहीं खाय।
थर-थर धूजे कोमल काया, धन कमावा ने जाय ।१।

कौड़ी-कौड़ी भेली करने, जोड़े लाख दो लाख ।
करोड़पति री इच्छा राखे, लेख लिख्या ही फल चाख।२।

पैसा ने परमेश्वर माने, भूल जाय भगवान ।
दीन-हीन कोई आवे द्वार पे, देय सके नहीं दान।३।

धर्म-काम करवारी वेला, घर मांही छिप जाय ।
सतगुरु देवे सीख ज्ञान री, लागे न हिरदारे माय।४।

चेतन जासी एकलो रे, धन नहीं आवे लार ।
क्यूं अनरथ कर धन कमावे, डूब मरेला मझधार।५

वाह!वाह! रे धन थारी माया, सब ने नाच नचाय।
'रसिक' प्रभु रा भजन विना रे, परभव में दुःख पाय।६

(१८०)

॥ दुनिया ये आनी जानी है ॥

(तर्ज : जब प्यार किया तो डरना क्या)

दुनिया ये आनी जानी है।
इस दुनिया की हर एक चीज, केवल पगले फानी है

यह भोली सी सुन्दर सूरत, पावन प्यारी मनहर मूरत।
चार कन्धे लकड़ी की डोली, होली सी जल जानी है।

भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, साज सजा सामान छबीला।
धन वैभव की प्यारी ढेरी, पगले यहीं रह जानी है॥

प्यार परस्पर बंध जाता है, स्वार्थ में मन रम जाता है।
चार दिनों की चटकी-मटकी, जीवन भर पछताना है।

झूठे माया मोह लगाए, एक पल चैन न लेने पाए।
खान-पान सुख चैन नहीं, मन में फूला अभिमानी है॥

ज्ञान नयन क्यों मूंदे प्यारे, अमूल्य जीवन यों मत हारे।
चिड़िया खेत चुगेगी पीछे, कुछ भी न आनी जानी है।

शरण "विचक्षण" संत पुरुष की, जावे जननी धन्य है उसकी।
कष्ट की नैया भव सागर के, भ्रमर से पार लगानी है॥

(१८१)

। दुनियां में देखो, कैसे कैसे पापाचार होते ।

(तर्ज : कृष्ण कन्हैया लाला आगरो में रिमझिम खेले)

दुनियां में देखो, कैसे कैसे, पापाचार होते। टेर।

भाई से भाई, बेटा बाप से लड़ाई लड़ते।
देखो जी नालायक लड़के।
कोर्टों में जाकर लाखों, रुपयों को बर्बाद करते। १।

अच्छे घरों के लड़के, बढ़िया सी वो ब्राण्डी पीते।
होकर बेहोश देखो, नालियों में खाते गोते। २।

बूढ़े मां बाप को सताते हैं, नालायक लड़के।
देखो जी नालायक लड़के।
घर की सुशीला नारी छोड़, वे वैश्या को सेते । ३ ।
भूखे, अनाथ विधवा, लाखों फिरते मारे मारे।
सन्डे मुसन्डे पन्डे, हलवा पुड़ी खाकर सोते । ४ ।

भोली विधवाओं को, फुसलाते हैं चालाक बाबू।
शादी का नाम लेकर बीज दुराचार का बोते । ५ ।

(१८२)

। देखो रे आदेश्वर बाबा ।

(तर्ज : प्रभाती)

देखो रे आदेश्वर बाबा, कैसा ध्यान लगाया है। टेर।

कैसा ध्यान लगाया रे बाबा, कैसा मन समझाया है।
नाभी राय के पुत्र कहीजे, मां मरु देवी जाया है। देखो । १ ।

कर ऊपर कर अधिक विराजे, आसन दृढ़ जमाया है।
केवल ज्ञान उपाय जिनेश्वर, शिव रमणी को ध्याया है।देखो ।२

सुरनर जिनकी भक्ति करत है, जिनवर सू लिखवाया है।
सेवा कियां मिले सुख संपत, सब जीवन सुख पाया है। देखो । ३ ।

देवी देव मिले बहुतेरे, भविजन मंगल गाया है ।
तीन लोक में महिमा प्रभु की 'चन्द्रकुशल' गुण गाया है। देखो ।४

(१८३)

। देखो विषयों ने मणिरथ भूप को ।

(तर्ज : छोटा सा बालमा मोरे........)

देखो विषयों ने मणिरथ भूप, को नीचा दिखलाया ।
आया न कुछ भी उसके हाथ, आखिर में पछताया । टेर ।

छोटे भाई की नारी, मेणरया पे नीत बिगाड़ी ।
करने को अपनी रानी, दुष्ट ने प्रपंच रचाया । देखो । १ ।

करके कपट मिलने काज, वह रजनी में आया ।
लीने भाई के प्यारे प्राण, नहीं वह करुणा लाया । देखो । २ ।

महलों में जाते उसको आनकर, विषधर ने खाया ।
मरके पहुंचा है नरक द्वार, करणी का फल पाया । देखो । ३ ।

गुरु प्रसादे मुनि "चौथमल", ऐसा समझाया ।
धन्य पुरुष वही काम के, वश में नहीं आया । देखो । ४ ।

(१८४)

। देखते जाओ ।

दशा इस देश भारत की, निराली देखते जाओ ।
दमक ऊपर की सब अन्दर, से खाली देखते जाओ ।

धनी जो भी कहाते हैं, वे बेटा जब विवाहते हैं ।
बड़ी झोली फैलाते हैं, कंगाली देखते जाओ ।

(१८५)

ये जितने बाबू दिखते हैं, जो खुद को बी.ए. लिखते हैं।
सरे मैदान बिकते हैं, प्रणाली देखते जाओ।

बरातें जितनी आती हैं, शरावें बस उड़ाती है।
नहीं बिल्कुल लजाती है, दीवाली देखते जाओ।

जनम से है तो हिन्दी हर, सभी फैशन फिरंगी पर।
उधर ऊपर से इकदम सर, बंगाली देखते जाओ।

लगे मैया न अब चंगी, लगे गैया न अब चंगी।
दशा क्या हमने बेढंगी, बनाली देखते जाओ।

कभी जो खीर खाते थे, दही-रबड़ी उड़ाते थे।
जरा सी चाय को पीते हैं, प्याली देखते जाओ।

कदर हो त्याग वालों की, गुणीजन बे मिसालों की।
ये हीरे और लालों की, दलाली देखते जाओ।

भरे जो धर्म की उलफत, सिखाए देश की खिदमत।
'मुनि चन्दन' की ये अद्‌भुत, कव्वाली देखते जाओ।

(१८५)

। देव गुरु धर्म तत्त्व ।

(तर्ज : चुप चुप खड़े हो....)

देव गुरु धर्म तत्त्व, तीन ये महान् है।
इन्हें पहिचाने वह, सच्चा बुद्धिमान है।
करुणा के मेघ-वीर, अमृत बहा गये,
सर्व जग जीव हित, देशना सुना गये, जी २।
तू भी मीठा घूंट पीले, जीवन रसाल है। १।

वीर पुत्र महामुनि, करमों से भूंझते,
भौतिक सुखों को छोड़, आत्मसुख ढूंढते जी २
पट्काय प्रतिपाल, गुण के निधान हैं । २ ।

सम्यक्त्व मूल धर्म वीर ने बताया है,
तेरी पुण्यवानी महा, जो कि हाथ आया है जी, २
प्रेम से जो पाले वह, पावे निर्वाण है । ३ ।

तत्त्व क्या हैं ? रत्न हैं ये, मूल्य न अंकात है,
संकट में सुख में ये, जन्म जन्म साथ है जी, २
केवल यों 'पारस' को, देत ज्ञान दान है । ४ ।

(१८६)

। दे मस्त फकीरी वह मुझको ।

(तर्ज : आ जाओ तड़फते हैं अरमाँ)

दे मस्त फकीरी वह मुझको, शाहों की भी परवाह न हो ।
मैं भी न किसी का शाह बनूं, मेरा भी कोई शाह न हो । टेर ।

दुनियां दौलत में मस्त रहे, मैं मस्त रहूं तुझको पाकर ।
मैं रहूं अकिञ्चन सा बनकर, पर कण भर मन में चाह न हो । १ ।

पर पीडा मेटूं जी भर, पर निज पीडा न रुला पाये ।
पर सुख को अपना सुख समझूं, सुखिया से मन में डाह न हो । २ ।

पर घर में पाऊँ पूजा, और स्व घर में अपमान मिले ।
दोनों में ही मुस्कान रहे, मन के भीतर भी आह न हो । ३

सब रंग रहे इस जीवन में, पर पाप न मन में आ पावे।
जीवन वन का वनचर बनकर, घूमें मन में गुमराह न हो। ४।

(१८७)

। दृढ़ वक्षस्थल भुज दण्ड सबल ।

(तर्ज। दिल लूटने वाले जादूगर ....)

दृढ़ वक्षस्थल भुज दण्ड सबल, और कंचन जैसी काया है।
आंखों मैं चमक चेहरे पे दमक, यह ब्रह्मचर्य की माया है।

जो इसके महत्त्व को भूल गया, वो भूल गया सुख की गलियां।
यौवन वसन्त से पहले ही, मुर्झी उसकी जीवन कलियां।
आंखों के नीचे गढ्डे हैं, गढ्डे में काली छाया है। १।

उमंग रहे उल्लास रहे, निर्भयता शान्ति साथ रहे।
प्रातः के सुरभित फूलों सा, मुख खिला खिला दिन रात रहे।
तन मन आनन्द हर्षित उसके, जिसने इसको अपनाया है। २।

हीरा हो लेकिन कांति न हो, दीपक हो लेकिन तेल न हो।
मोती हो लेकिन आब न हो, साथी हो लेकिन मेल न हो।
दो कौड़ी उसकी कीमत है, जिसने यह लाल लुटाया है।

सभ्यता संस्कृति का भूषण, गुण रत्नों का आगर है यह।
अहिंसा और सत्य का साथी है, तप जप का श्रृंगार है यह।
'केवल मुनि' सारे व्रतों में, ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठ बताया है। ४।

दोहा—यों अनुक्रम करतां थकां, आयो वरषा काल ।
घोर घोर घन वरषन लागो, नदी वहे असराल ।
विहग बोले बोली प्यारी । ध० । ४ ।

कान्ह रज्जू कुटार झाली, ओढ़ सिर पे कामल काली ।
चल्यो वन काटन तरु-डाली, धरणि पे हो रही हरियाली ।

दोहा—विषम नदी इकवाट में, पेख विलख मुख कान ।
वैठ तटिनी के तट पर सोचे, व्यर्थ भयो हैरान ।
करम गति टले नहीं टारी । ध० । ५ ।

कान्ह फिर साहस दिल धर के, लियो इक लक्कड़ जल तरके ।
तास के खंड खंड करके, वांध लई मौली मन भरके ।

दोहा—आयो नगर बाजार में, वेचन के हित कान ।
तिन अवसर तिन नगर में, श्रीपति सेठ सुजान ।
वसे शुद्ध बारह व्रत धारी । ध० । ६ ।

सेठ को चंपक अनुचरजी, गयो बाजार हरष धरजी ।
मिल्यो कठियारो कान्हड़जी, मोल ले भार चल्यो घरजी ।

दोहा—चोखो चंदन बामनो, महके गंध महान ।
तदपि काठ के मोल कान्ह नें, वेच्यो विन पहचान ।
सेठ लखि वोल्यो सुविचारी । ध० । ७ ।

कहो तुम चंपक परकासी, मूल्य मौलीनों स्यूं थासी ।
टका दो दीजे सुखरासी, दाम ले परो घरे जासी ।

दोहा—कान्हड़ कठियारा प्रते, सेठ कह्यो समझाय।
दिया सुनैया भार प्रमाणे, कान्हड़ हरषित थाय।
अमित तन छाई हुँसियारी। घ०। ८।

अंग में फूल्यो नहीं मावे, द्रव्य ले निज घर को जावे।
एक वैश्या लखि ललचावे, द्रव्य से अनरथ ही थावे।

दोहा—गणिका वैठी गोख में, नट विट लंपट साथ।
कान्हड़ लखि रसिया हंस बोले, यो आयो तुम नाथ।
करेगी क्यों हमसे यारी। घ.। ९।

श्रवण कर वचन क्रोध खाके, वेग वैश्या के ढिग जाके।
दियो सत्र धन अमरस पाके, गये रसिया मुख बिलखाके॥

दोहा—देख द्रव्य गणिका उठी, आई सनमुख धाय।
आगे आवो प्राणेसरजी, धन तुम तुमरी माय।
विहसी गलवैय्यां डारी। घ०। १०।

नायका नापित तेड़ायो, क्षौर अरु उबटन करवायो।
सुगंधित जल से न्हवरायो, कान्ह मन परमानंद पायो॥

दोहा—पट भूपण पहिरायके, भोजन सरस जिमाय।
दे ताम्बूल प्रेम अति पोख्यो, हाव भाव दरसाय।
चढ़ी ले जाय चित्रसारी। घ०। ११।

सहेली सगरी बुलवाई, आप श्रृंगारित हो आई।
रागिनी नाटक कर गाई, केल कौशलता दिखलाई॥

दोहा—ज्ञानी गुरु समोसरया, चालो वन्दन राज।
प्रमुदित हो राजा गयो, मुनि वन्दन के काज॥
साथ ले सारा सरदारी। ध०। २०।

करे नृप परसन पग लागी, कौन! चारों में सौभागी।
कहे मुनि चारों ही त्यागी, अधिक है कान्ह धरम रागी॥

दोहा—साधरमी लखि कान्ह को, दियो सचिव पद सार।
कान्हड़ राज ऋद्धि सुख भोगी, लीनो संजम भार॥
भयो सुर एका भव तारी। ध०। २१।

एम जानी बुधजन प्राणी, तजो धन दारा दुःखदानी।
शीलव्रत पालो मन आनी, वृथा मत खोवो जिंदगानी॥

दोहा—कान्हड़ मुनिगुण गावतां, सुख सम्पत्ति सरसाय।
सुगुरु मगन पद कज सुपसाये, 'माधव' मुनिगुण गाय॥
कहे त्यागी की बलिहारी। ध०। २२।

(१८६)

॥ धन्ना मुनि धन मानव भव पायो॥

(तर्ज : आसावरी)

धन्ना मुनि धन मानव भव पायो, श्री मुख यूं फरमायो। टेर।
श्रेणिक पूछे वीरजी भाखे, उत्तम मुनिवर सारा।
रज में तज में तरतम जोगे, अधिक धन्ना अणगारो। धन्ना। १

श्रेणिक राजा आतम हित काजा, धन्ना मुनि पे आवे।

शीश नमावे मुख गुण गावे, जीता विपत्ति न थावे । धन्ना । २ ।

नार बत्तीस अप्सरा सरीखी, धन बत्तीसे कोडो ।
संसार ने पूठ दी मुनिवरजी, शिवपुर सामा दौड़ो । धन्ना । ३ ।

निरन्तर तप बेले-बेले, पारणो उछील आहारो ।
स्रमण वणिमग कोई न वंछे, किम तुम कंठ उतारो । धन्ना । ४ ।

वार इक्कीस जल मांही घोई, ते अन्न खाइ जल पीयो ।
ऐसो तप सुणी डर कंपे, धन धन थारो जीयो । धन्ना । ५ ।

चौदह हजार मुनिवर मांही, आपने वीर वखाण्या ।
दर्शन आपको पुन्यवंत पावे, मैं पिण आज पिछाण्या । धन्ना ।६।

नव मांसे शुद्ध संयम पाली, सर्वारथ सिद्ध जावे ।
रामचन्द्र कहे ऐसे मुनिवर, क्यों नहीं मुक्ति सिधावे । धन्ना । ७ ।

(१६०)

॥ धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े वसो ॥

(तर्ज : आज नहेजोरे दीसे नाहलो-ए देशी)

धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े वसो, प्यारो प्राण समान ।
कबहूं न बिसरूं हो चितारूं नहीं, सदा अखण्डित ध्यान । १ ।

ज्यूं पनिहारी कुम्भ न विसरे, नटवी नृत्य निदान ।
पलक न विसरे हो पदमनी पियुभणी, चकवी न विसरे रे भान ।२।

ज्यूं लोभी मन धन की लालसा, भोगी के मन भोग ।
रोगी के मन माने औषधी, जोगी के मन जोग । ३ ।

इण पर लागी हो पूरण प्रीतड़ी, जाव जीव परियन्त।
भव-भव चाहूं हो न पड़े आंतरो, भय भंजन भगवंत। ४।

काम-क्रोध मद मत्सर लोभकी, कपटी कुटिल कठोर।
इत्यादिक अवगुण कर हूं भर्यो, उदय कर्म के जोर। ५।

तेज प्रताप तुम्हारो प्रगटे, मुज हिवड़ा में रे आय।
तो हूं आतम निज गुण सम्भालने, अनन्त बली कहवाय। ६।

'भानु' नृप 'सुव्रता' जननी तणो, अंगजात अभिराम।
'विनयचन्द' ने वल्लभ तूं प्रभु, शुद्ध चेतन गुण धाम। ७।

(१६१)

॥ धन्य अर्जुन मुनिवर ॥

(तर्ज : चम्पक सेठ की)

धन्य अर्जुन मुनिवर, दीक्षा लेई ने चाल्या गोचरी। टेर।

पूछा वीर से कहो करूं क्या, देओ राह बताय।
जिम सुख होवे तिम करो सरे, यों वीर दियो फरमाय। १।

तहत् उच्चारी वन्दन कीनी, मन में सोचे जाय।
वेले वेले करूं तपस्या, देऊं कर्म खपाय। २।

राजगृही नगरी के अन्दर, लोग रहे घबराय।
मुनि वेष में आता देखी, और अचम्भो पाय। ३।

मुखपति मुख पे रजोहरण, कर जोरी घर २ जाय।
लेता देख्या भोजन पारणे, लोग क्रोध में आय। ४।

कियो तेने जगत पसारो रे। धर्म बिना। ३।

लाखों को धन भेलो कियो रे, तो नहीं चाले साथ।
इतो विचार हुयो नहीं रे, छोड़ गयो म्हारो बाप।
कौड़ी नहीं ले गयो लारो रे। धर्म बिना। ४।

कुटुम्ब पोषण कारणे रे, अनर्थ करसी अपार।
यम द्वारे जासी एकलो, कोई नहीं भागीदार।
करे तू क्यों कर्मों को भारी रे। धर्म बिना। ५।

कूड़ कपट करतो सदा रे, पग पग बोलतो झूंठ।
ममता कर कर मर रह्यो रे, पुन्य गयो सब खूट।
प्रकट भयो पाप सितारो रे। धर्म बिना। ६।

नाटक गंजी का ख्याल में रे, आधो रात विताय।
दुर्बुद्धि का गुलाम ने रे, धर्म कर्म नहीं सुहाय।
वृथा गयो जन्म तुमारो रे। धर्म बिना। ७।

साधुजी सूत्र वांचता रे, टालो देवे जाय।
शर्मा शर्मी आ गयो तो, झुक झुक झोला खाय।
छाया तेरे आंख अंधारो रे। धर्म बिना। ८।

भाग्य विना मिलसी नहीं रे, सतगुरु को सहवास।
पुन्य उदय उस क्षेत्र का रे, झड़ियां लगे चारों मास।
समझ हित वात विचारो रे। धर्म बिना। ९।

जनम सुधारण कारणे रे, सतगुरु देवे सीख।

उल्टी जचे थांरे कर्म सूं रे, दुर्गति दिसे नजदीक।
नहीं कोई दोष हमारो रे। धर्म विना। १०।

चौमासो कीवो खेतिये रे, तेरानवे की साल।
मेवाड़ी मुनि कहे वन्धुओं रे, इण पर कियो ख्याल।
तो होवेगा जल्दी सुधारो रे। धर्म विना। ११।

(१६३)

। धीरे धीरे अपने को गुणवान करलो।

अवगुण छोड़ों गुणों का अब ज्ञान करलो।
धीरे धीरे अपने को गुणवान करलो। टेर।

एक दिन में गुणी न बना जाता।
बीज बोते ही फल कब लग जाता।
धीरता का सुधारस पान करलो। धीरे धीरे ....। १।

संग छोड़ो जो दुर्गुण सिखलाते।
सीधे रास्ते से सबको भटकाते।
गुण अवगुण की अब पहिचान करलो। धीरे धीरे........। २।

आप सुधरे तो जग सुधरा करता।
दीप खुद हो प्रकाशित तम हरता।
दीप हो तुम औरों को दीपीमान कर दो। धीर धीरे....। ३।

गहरे उतरोगे, मोती पावोगे।
तट से कंकर उठा घर लावोगे।
बुद्ध हो तुम औरों को बुद्धिमान करलो। धीरे धीरे....। ४।

। नमन श्रमण भगवान ।

(तर्ज : सुनो-सुनो ए दुनियां वालों वापू....)

नमन श्रमण भगवान् ज्ञात-सुत, महावीर स्वामी को ।
त्रिशला जननी सिद्ध जनक, देवाधिदेव नामी को । टेर ।

जिनके जन्म समय में नारक, भी अपना दुख भूले ।
दिव्य सौख्य तज सब सुरपति भी, धर्म भाव में झूले ।
जन्म पूर्व ही वृद्धि कारक, वर्धमान नामी को . . . । नमन. । १ ।

जग ममता तज कर्मक्षय हित, जिनने संयम धारा ।
तोड़ दिये घनघाति बन्धन, दीर्घ उग्र तप द्वारा ।
हुए स्वयं सम्बुद्ध केवली, श्री सन्मति नामी को . . । नमन. । २ ।

नव तत्त्व और द्रव्य आदि, त्रिविधि श्रुत धर्म प्ररूपा ।
अनगार और आगार द्विविध यों, चरित्र धर्म निरूपा ।
करी चतुर्विध संघ प्रतिष्ठा, जैन संघ स्वामी को.... । नमन । ३ ।

द्वितीय देशना में ही लखकर, अतिशय अपरंपारा ।
गौतमादि ने शीश झुका, सर्वज्ञ तुम्हें स्वीकारा ।
हुए सभी ग्यारह ही गणधर, भविजन अभिरामी को.... ।नमन।४।

वैदिक बौद्धादिक धर्मों का, मिथ्यापन समझाया ।
जैनधर्म ही सत्य अनुत्तर, अद्वितीय बतलाया !
गौशालक से सहे परीषह, धन्य क्षमादानी को.... । नमन. । ५ ।

तुच्छ जिन्दगानी के अन्दर, तूं धर्म ध्यान कुछ करले,
सद् गुरुओं की सच्ची शिक्षा, बीच जिगर के धरले।
'घन मुनि' तेरा बेशक बेड़ा, उतरेगा भव पार रे। ४।

(१६६)

। नमो सिद्ध निरंजनं ।

तुम तरण-तारण दुःख निवारण, भविक जीव आराधनं।
श्री नाभि नंदन जगत-वन्दन, नमो सिद्ध निरंजनं। १।

जगत-भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकं।
ध्यान रूप अनूप उपम, नमो०। २।

गगग-मंडल मुक्ति-पदवी, सर्व- ऊर्ध्व-निवासनं।
ज्ञान-ज्योति अनंत राजे, नमो०। ३।

अज्ञान निद्रा विगत-वेदन, दलित मोह निरायुषं।
नाम-गौत्र-निरंतराय, नमो०। ४।

विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जनं।
राग द्वेष-विमर्द अंकुर, नमो० ५।

विमल केवल ज्ञान-लोचन, ध्यान-शुक्ल-समीरित।
योगीना अति गम्य रूपं, नमो०। ६।

योग ने समोसरण मुद्रा, परिपल्यंकासनं।
सर्व दीसे तेज-रूपं, नमो०। ७।

जगत जिनके दास दासी, तास आस निरासनं ।
चंद्र पै परमानन्द-रूपं, नमो० । ८ ।

स्व-समय समकित दृष्टि जिनकी, सोहे योगी अयोगिकं ।
देखतामां लीन होवे, नमो० । ९ ।

तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा, भेद पंचदशाधिकं ।
सर्व कर्म विमुक्त चेतन, नमो० । १० ।

चंद्र सूर्य दीप मणि की, ज्योति येन उलंघितं ।
ते ज्योति थी अपरम ज्योति, नमो० । ११ ।

एक मांहि अनेक राजे, अनेक मांहि एककं ।
एक अनेक की नाहि संख्या, नमो० । १२ ।

अजर अमर अलक्ष अनंतर, निराकार निरंजनं ।
पर ब्रह्म ज्ञान अनत दर्शन, नमो० । १३ ।

अतुल सुख की लहर में, प्रभु लीन रहे निरंतरं ।
धर्म ध्यान थी सिद्ध दर्शन, नमो० । १४ ।

ध्यान धूपं मनः पुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनं ।
क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं । १५ ।

तुम मुक्तिदाता, कर्मघाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन, महावीर जिनेश्वरम् । १६ ।

(१९७)

। नहीं सीखा तो क्या सीखा ।

(तर्ज : आजा मेरी वर्बाद....)

प्रेम की धार में बहना नहीं सीखा, तो क्या सीखा ?
परस्पर प्रेम से रहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

अगम है प्रेम का मारग, कठिन है शांति की मंजिल।
राह की आफतें सहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

तप्त व्याकुल कलेजों पर, लगा कर शान्ति का मरहम।
प्रेम के चुटकले कहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

भूल कर भूल औरों को, भूल को जानकर अपनी।
जगत में ज्ञान गुण गहना, नहीं सीखा तो क्या सीखा ?

(१९८)

। नहीं है भरोसा जरा जिन्दगी का।

नहीं है भरोसा, जरा जिन्दगी का।
मजा लूट बन्दे ! प्रभू-बन्दगी का ।१।

निकलता है सड़कों पे, फैशन लगा कर।
अकड़ता है तन को बड़ा तू सजाकर।
पिटारा है, इक ये भरा गन्दगी का। २।

लगाए मुहब्बत से, सुन्दर बगीचे।
सजाएं भवन जो, बिछा कर गलीचे।
सदा साथ देते नहीं आदमी का। ३।

किसी के चांद से बेटे, हैं करते घर में क्रीड़ायें।
किसी को है यही चिन्ता, नहीं घर एक जाया है। ६।

किसी का स्वर सुधा सा जो, मिटाता दर्द सब दिल के।
किसी का बोल गोली सा, गजब जिसने कि ढाया है। ७।

किये जो कर्म जिस-जिसने, रहा वो भोग फल वैसे।
पकड़ कर्मों ने अय 'चन्दन', जगत भर को नचाया है। ८।

(२००)

। न दुनिया में, दिल तूं।

(तर्ज : तेरे प्यार का आसरा .....)

न दुनिया में दिल तूं, फंसा अय मुसाफिर।
न मंजिल को अपनी, भुला अय मुसाफिर !

जगत के नजारे जो, लगते हैं प्यारे।
रहे कर इशारे, न जा अय मुसाफिर !

जरा बन सयाना, अगर मुक्ति जाना।
न हरगिज कमाना, दगा अय मुसाफिर !

ये चन्चल-चपल चित्त, टिकाने में हैं हित।
यश:—कीर्ति नित की, कमा अय मुसाफिर !

कोई राजा-राणा, हमेशा रहा ना।
है जाता जमाना, चला अय मसाफिर !

सभी तज झमेले, हैं जाना अकेले।
महल न तवेले, वना अय मुसाफिर !

ले विगड़ी वना तूं, ले किस्मत जगा तूं।
प्रभु-गीत गा तूं, जरा अय मुसाफिर !

अहिंसा सचाई, न तजना अछाई।
मगर कर भलाई, भुला अय मुसाफिर !

रटे 'त्रिशलानन्दन', कटें कर्म-बन्धन।
-ये कहता है 'चन्दन', सदा अय मुसाफिर !

(२०१)

॥ नरक का बने वही मेहमान ॥

(तर्ज : देख तेरे संसार ......)

कामी कपटी महा लालची, होता जो इन्सान।
नर्क का बने वही मेहमान।

वचन का झूठा मन का मैला, सूरत का शैतान।
नर्क का बने वही मेहमान। टेर।

सुने श्रवण से सदा बुराई, नजरों में रहे नार पराई।
प्राण हने पर के हरसाई, दुर्गुण गावे जीभ सराई।
स्वर्ग नर्क नहीं मानें रहता, पापों में गलतान। १।

मन में भरी पड़ी कपटाई, ऊपर दिखती साफ सफाई।
ईर्षा की मन आग समाई, भ्रष्टाचार करे अन्याई।

स्वकर जाल फंसाता फिरता, दंभी दंभ निधान । २ ।

अति आरम्भ करे अज्ञानी, संग्रह काज करे मन मानी ।
दानवता की यही निशानी, खावे मांस करे पशु हानि ।
'चन्दन' कहे सत्य फरमाया, वीतराग भगवान् । ३ ।

(२०२)

॥ नर नारायण बन जाएगा ॥

(तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की)

नर नारायण बन जाएगा, जो आत्म ज्योति जगाएगा ।
नर नारायण ··· । टेर ।

पापों के बन्धन टूटेंगे, विषयों के नाते छूटेंगे ।
जो सोया सिंह जगाएगा, नर नारायण । १ ।

घट में बैठा एक ईश्वर है, जाने माने ज्ञानेश्वर है ।
सब जन्म मरण मिट जाएगा, नर नारायण ······ । २ ।

बादल के पीछे दिनकर है, कर्मों के पीछे ईश्वर है ।
जो सर्व ही ज्योति जगाएगा, नर नारायण··· । ३ ।

गुरु के चरणों में जाकर के, श्रद्धा के कुसुम चढ़ा करके ।
'मुनि कुमुद' जो आनन्द पाएगा, नर नारायण बन जाएगा । ४ ।

(२०३)

॥ नर कर उस दिन की याद ॥

नर कर उस दिन की याद, कि जिस दिन चल, चल, चल होगी । टेर

तूं जोड़-जोड़ कर धरे वस्तु, कोई नहीं तेरी होगी।
जब आये यम के दूत, नगर में खलबल खल होगी। नर। १।

सब भरे रहे भण्डार, नार तेरी संगी नहीं होगी।
काठी के लिए दो वांस, ओढ़ने को मल मल होगी। नर। २।

ले जायेंगे श्मशान, चिता सोने के लिए होगी।
झट देंगे अग्नि लगाय, राख तेरी जल जल कर होगी। नर। ३।

तूं भली बुरी जो करे, पूछ तेरी परभव में होगी।
यूं कहता है भूदेव, कर्म गति पल पल पल होगी। नर। ४।

(२०४)

॥ नव घाटी मांहें भटकत आयो ॥

(तर्ज : खेलण दो गिणगोर, भंवर)

नव घाटी माहे भटकत आयो, पाम्यो भव सार।
जेहने वंछे देवता, जीवा ते किम जावो हार ॥

ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो हार।
दुर्लभ तो मानव भव पायो, ते किम जावो हार। १।

धन दौलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल।
मोह माया मांहे भूल रह्या, जीवा नहीं लीवी सूरत संभाल।
नहीं लीवी सूरत सभाल, जीवाजी नहीं लीवी सूरत संभाल। २।

काया तो थांरी कारमी दीसे, दीसे जिन धर्म सार।
आऊखो जाता वार न लागे, चेतो क्यूं नी गंवार ॥

(२०६)

चेतो क्यूं नहीं गंवार, जीवाजी चेतो क्यूं नी गंवार। ३।

यौवन वय माहे धंधो लागो, लागो है रमणी रे लार।
धन कमायने दौलत जोड़ी, नहीं कीनो धर्म लिगार॥
नहीं कीनो धर्म लिगार, जीवाजी नहीं कीनो धर्म लिगार। ४।

जरा आवेने यौवन जावे, जावे इन्द्रिय विकार।
धर्म किया विन हाथ घसोला, परभव खासो मार॥
परभव खासो मार, जीवाजी, परभव खासो मार। ५।

हाथों में कड़ा ने कानों में मोती, गले सोवन की माल।
धर्म किया विन एह जीवाजी, अभरण छे सहू भार॥
अभरण छे सहू भार, जीवाजी अभरण छे सहू भार। ६।

ए जग है सब स्वार्थ केरा, तेरो नहीं रे लिगार।
वार वार सतगुरु समझावे, ल्यो तुम संजम भार॥
ल्यो तुम संजम भार, जीवाजी ल्यो तुम संजम भार। ७।

संजम लेईने कर्म खपावो, पामो केवल ज्ञान।
निरमल हुइने मोक्ष सिधावो, ओ छे सांचो ज्ञान॥
ओ छे सांचो ज्ञान, जीवाजी ओ छे सांचो ज्ञान। ८।

संवत अठारे ने वरस गुण्यासी, 'हरकेन सिंघजी' उल्लास।
चेत वदी सातम सायपुर में, कीनो ज्ञान प्रकाश॥
कीनो ज्ञान प्रकाश जीवाजी, कीनो ज्ञान प्रकाश। ९।

(२०५)

।। नवकार मन्त्र है महामन्त्र ।।

(तर्ज :दिल लूटने वाले जादूगर .....)

नवकार मन्त्र है महामन्त्र, इस मन्त्र की महिमा भारी है ।
आगम में कथी गुरुवर से सुनी, अनुभव में जिसे उतारी है। टेर

अरिहंताणं पद पहिला है, अरि आरति दूर भगाता है ।
सिद्धाणं सुमिरण करने से मन इच्छित सिद्धि पाता है ।
आयरियाणं तो अष्टसिद्धि, और नवनिधि के भण्डारी है । १

उवज्झायाणं अज्ञान तिमिर हर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है ।
सव्वसाहूणं सब सुखदाता, तन मन को स्वस्थ बनाता है ।
पद पांच के सुमिरण करने से, मिट जाती सकल बिमारी है । २

श्री पाल सुदर्शन मयणरया, जिसने भी जपा आनन्द पाया ।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया ।
मन नन्दन वन में रमण करे, यह ऐसा मंगलकारी है । ३ ।

नित्य नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहिनाती ।
अशोक मुनि जय विजय मिले, शांति प्रसन्नता बढ़ जाती ।
सम्मान मिले सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है । ४ ।

(२०६)

।। नर तन का चोला पाया है ।।

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

नर तन का चोला पाया है, इन्सान नहीं बन पाया है ।

काया के संग में माया है, माया में तूं भरमाया है। नर। टेर।

माया और लोभ की जोड़ी है, ममता इसके संग दौड़ी है।
तृष्णा की सफर ये चौड़ी है, नहीं पार किसी ने पाया है। १।

नर नर को देखके जलता है, पैरों तले उसे कुचलता है।
ईर्षा से खून उबलता है, अभिमान का पर्दा छाया है। २।

खान पान मन माना है, भोगों में हुवा दिवाना है।
विषयों में आनन्द माना है. नहीं चैन किसी ने पाया है। ३।

क्रोध से तेरा ज्ञान घटा, स्वार्थ से तो सम्मान हटा।
कपट से तुझे लगा बट्टा, यों मुफ्त में माल गंवाया है। ४।

तन से किसका है घाव भरा, धन से किसका उपकार करा।
मन से तो सोच विचार जरा, अनमोल समय यह पाया है। ५।

सत संगत में जो आता है, वह ज्ञान की ज्योति जगाता है।
'अनराज' प्रभु गुण गाता है, इन्सान वही कहलाया है। ६।

(२०७)

॥ नहीं बचा सकेगा परमात्मा ॥

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये)

जरा कर्म देख कर करिये, इन कर्मों की बहुत बुरी मार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर औरों का क्या एतबार है।टेर।

बारह घड़ी तक बैलों को बांधा, छींका लगा दिया खाने को,
बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं दाने को।

दौलत तेरे काम न आवे ।
काया को देख लुभायो रे । जरा । ३ ।

सत संगत को भूल न जाओ ।
धर्म अमोलक पायो रे । जरा । ४ ।

सन्त समागम मिल्या है साधु ।
अनुभव प्याला पिलाया रे । जरा । ५ ।

सुन्दर काया देख लुभायो ।
वृथा ही जन्म गंवायो रे । जरा । ६ ।

दीनन के हित कौड़ी न खर्ची ।
अपनो ही पेट भरायो रे । जरा । ७ ।

श्रमणोपासक, एह पद मिलियो ।
'प्रेम' मगन होय गायो रे, जरा करले कमाई ।८।

(२१०)

। निज स्वरूप में लीनता ।

निज स्वरूप में लीनता, निश्चय संवर जाण ।
सुमति गुप्ति संयम धर्म, करे पाप की हाण ॥
शरीर विष्ठा कौथली, तेमां शुं मोहाय ।
ममता तजी समता धरे, ते जीव मुक्ति पाय ॥
क्रोधी अपना भाव है, निश्चय दुर्लभ नाहिं ।
भव में प्राप्ति कठिन है, यह व्यवहार कहायि ॥

नित्य नित्य करूं प्रणाम

—चौवीसी—

धन्य धन्य चौवीस जिनन्द जयकारी ;
नित्य नित्य करूं परणाम धरम अवतारी । टेर

श्री ऋषभ, अजित, संभव अभिनन्दन स्वामी ।
श्री सुमति पदम सुपार्श्व, चन्द्र प्रभ नामी ।
है शरण आपका, शाश्वत सुख दातारी । १ ।

श्री सुविधि शीतल श्रेयांस, वासु पूज्य ध्याता ।
श्री विमल अनन्त धर्म, नाथ धर्म के दाता ।
श्री शान्ति प्रभु करी, शान्ती जगत मझारी । नित्य । २ ।

श्री कुंथु अर मल्लि, मुनि सुव्रतजिन रखना ।
श्री नमि नेमी पार्श्व, प्रभु नित्य जपना ।
श्री महावीर प्रभु का, शासन है जयकारी । नित्य । ३ ।

श्री श्रीमंधर प्रभु, आदि वीस जिनवर जी ।
श्री पुंडरिक गौतम, से हुए गणधर जी ।
सौभाग्य हमारा, करें वन्दन हर वारी । नित्य । ४ ।

ये जिन शासन के, सभी संत सतियां जी ।
शुद्ध पाले साध्वाचार, कल्प यतना जी ।
आगम अनुसारे, कथनी करणी ज्यांरी । नित्य । ५ ।

शुभ पुण्य उदय से, मानव भव में आया।
श्री वीतराग का धरम, उत्तम कुल पाया।
सबको साता पहुंचाये दया दिल धारी। नित्य। ६।

सम्यग् दर्शन ज्ञान, चरित्र मन भावे।
जो करे आराधन, निश्चय शिव सुख पावे।
"राजमल" आतम गुण लो विस्तारी। नित्य। ७।

(२१२)

। नेमजी की जान बणी भारी।

(तर्ज : दया पालो बुध जन प्राणी)

नेमजी की जान बणी भारी, देखण को आवे नर नारी। टेर।

हींसता घोड़ा रथ हाथी, मनुष्य की गिणती नहीं आती।
ऊंट पे ध्वजा जो फर्राती, धमक से धरती थर्राती।

दोहा—समुद्र विजयजी का लाडला, नेम कुंवरजी नाम।
राजुल दे को आए परणवा, उग्रसेन घर धाम।
प्रसन्न भई नगरी सब सारी। १।

कसुंबल वागा अति भारी, कान कुंडल की छवि न्यारी।
कीलंगी तुर्रा सुखकारा, माल मोतियन की गल डारी।
दोहा—काने कुंडल झिगमिगे, शीश मुकुट सुखकार।
कोटि भानु की बनी ओपमा, शोभा अधिक श्रृंगार।
बाज रहा बाजा टंकारी। २।

छट रही हुक्का सरणाई, व्याह में आए वड़े भाई।
झरोखे राजलदे आई, जान को देखत सुख पाई।

दोहा—उग्रसेनजी देख के, मन में कियो विचार।
बहुत जीव को करी एकठा, वाड़ो भर्यो तिवार।
करी जब भोजन की त्यारी। ३।

नेमजी तोरण पर आये, पशु सब मिल कर कुरीये।
नेमजी वचन यूं फरमाए, पशु ये काहे को लाये।
दोहा—याको भोजन होवसी, जान वास्ते त्यार।
एह वचन सुण नेमजी, थर थर कंपी काय।
भाव से चढ़ गए नरनारी। ४।

पीछे से राजुलदे आई, हाथ जब पकड़्यो छिन माँई।
कहां तूं जावे मोरी जाई, और वर हेरु सुखदाई।

दोहा—मेरे तो वर एक ही, हो गए नेम कुमार।
और भुवन में वर नहीं चाहे, करो क्रोड़ उपचार।
झुरती छोड़ी मां प्यारी। ५।

सहेल्यां सब ही समझावे, दाय नहीं राजुल के आवे।
जगत सब झूठो दर्शावे, मेरे मन नेंमकुंवर भावे।
दोहा—तोड़्या कांकड़ डोरड़ा तोड़्यो नवसर हार।
काजल टीको पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार।
करी अब संयम की त्यारी। ६।

तब्या सब तोले सिणगारा, आभूषण रत्न जड़ित सारा।
लगे मोय सब ही सुख खारा, छोड़ कर चाली परिवारा।
दोहा—मात पिता परिवार को, तजतां न लागी वार।
रहनेमी समझाय के, जाय चढ़ी गिरनार।
दीक्षा फिर राजुल ने धारी। ७।

दया दिल पशुअन की आई, त्याग सब कियो छिन मांही।
नेमजिन गिरनारे जाई, पशु के बन्धन छुड़वाई।
दोहा—नेम राजुल गिरनार पे, कीनो अविचल ध्यान।
'नवलमल' यह करी लावणी, ऊपनो केवल ज्ञान।
जिनों की किरिया बुद्ध सारी। ८।

(२१३)

। नेम तोरण पर आए।

नेम तोरण पर आए, भारी भीड़ हो गई।
पशु क्यूं रोए, क्यूं दौड़े, होय क्या बात हो गई। नेम....। १।

वरात वड़ी भारी, देखे नर नारी, घोड़ा और हाथी बराती।
देखो कानों में कुण्डल, अति न्यारे थे।
गले मोतियन की माला, के नजारे थे।
वैण्ड बाजा बाजे की आगे, होय क्या बात हो गई। नेम। २।

पशु कुलराए की, नेम फरमाए, क्यूं बाड़ा भरवाए बताए।
मारे पशुओं का भोजन, बनाया जाएगा।

त्याग बिना कोई मोक्ष न पावे, त्याग कियां पातक रुक जावे।
पद निरंजन पाना हो तो त्यागी बनो....। १।

त्यागी को सुर नर नमते हैं, धरते चरण विघ्न टलते हैं।
गर्भ बीच नहीं आना हो, तो त्यागी बनो....। २।

चक्रवर्ती की रिद्धी भारी, त्याग सामने तुच्छ है सारी।
आत्म उच्च बनाना हो, तो त्यागी बनो....। ३।

जहां वैराग्य त्याग नहीं पावे, शूर वीर नर पार लगावें।
जग से मोह हटाना हो, तो त्यागी बनो....। ४।

दो हजार दो नीमच आया, गुरु प्रसादे 'चोथमल' गाया।
कर्म क्षपाना हो, तो प्यारे त्यागी बनो....। ५।

(२१५)

।प्यारे प्रभु का ध्यान लगा तो सही।

(प्रभु का ध्यान)

प्यारे प्रभु का ध्यान लगा तो सही,
इन पापों को दूर हटा तो सही। टेर।

सो रहा है किस नींद में, जिसका न तुझको ज्ञान है।
आया था यहां पर किस लिये, क्या कर रहा नादान है।
ऐसी निन्द्रा को वेग उड़ा तो सही। १।

चार दिन की चांदनी है, फिर अंधेरी आयेगी।
साथ कुछ चलता नहीं, दौलत पड़ी रह जायेगी।
ऐसी ममता को दूर हटा तो सही। २।

मतलब के साथी हैं सभी, नहीं साथ तेरे जायेंगे।
जब मौत तेरी आयेगी, जंगल में घर कर आयेंगे।
जिन धर्म से प्रेम बढ़ा तो सही। ३।

फिक्र को अब त्याग दे, दिल को लगाले ज्ञान में।
आनन्द चित्त हो जाएगा, ऐसा मजा है ध्यान में।
शिव रमणी से नेह लगा तो सही। ४।

हंस का कहना यही, नित पाप से डरते रहो।
चलते रहो शुभ मार्ग में, उपकार भी करते रहो।
ऐसी बातों को दिल में जमा तो सही। ५।

(२१६)

॥ पद्म-प्रभु पावन नाम तिहारो ॥

(तर्ज : श्याम कैसे गज को फन्द छुड़ायो)

पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो, पतित उद्धारन हारो। टेर।

जदपि धीवर, भील, कसाई, अति पापिष्ट जमारो।
तदपि जीव-हिंसा तज प्रभु भज, पावे भवदधि पारो। १।

गौ ब्राह्मण प्रमदा बालक की, मोटी हत्या चारो।
तेहनो करणहार प्रभु भजने, होत हत्या सूं न्यारो। २।

वैश्या चुगल छिनाल जुवारी, चोर महा बटमारो।
जो इत्यादि भजे प्रभु तोने, तो निवृते संसारो। ३।

पाप पराल को पुंज बन्यो अति, मानो मेरु अकारो।
ते तुम नाम हुताशन सेती, सहजे प्रज्वलत सारो। ४।

परम धर्म को मरम महारस, सो तुम नाम उच्चारो।
या सम मन्त्र नहीं कोई दूजो, त्रिभुवन मोहनगारो। ५।

तो सुमरण विन इण कलयुग में, अवर न कोई आधारो।
मैं वारी जाऊं तो सुमरण पर, दिन दिन प्रीत वधारो। ६।

"सुषमा राणी" को अंगजात तूं "श्रीधर" राय कुमारो।
"विनयचन्द" कहे नाथ निरंजन, जीवन प्राण हमारो। ७।

(२१७)

॥ परमेष्ठी नवकार भविक जन नित्य जपिये ॥

(तर्ज : पंजाबी)

परमेष्ठी नवकार भविक जन नित्य जपिये। टेर।

अरिहन्त प्रभु केवल ज्ञानी, अनुपम मोक्ष सुखों के दानी।
चौंतिस अतिशय पैंतीस वाणी, करुणा के भंडार। भ०। १।

दूजे सिद्ध प्रभु को ध्याओ, सच्चिदानन्द सदा सुख पाओ।
अपना ये ही लक्ष्य बनाओ, टले कर्म परिवार। भ०। २।

तीजे आचार्य गुण गाओ, ज्ञान दर्शन चारित्र पाओ।
जो आज्ञा निज शीश चढ़ाओ, शासन के श्रृंगार। भ०। ३।

उपाध्याय श्री ज्ञान के दाता, प्रवचन सार शास्त्र के ज्ञाता।
हृदय में प्रकाश बढ़ाता, ज्ञान नेत्र दातार। भ०। ४।

पंचम पद सेवो सुख कारी, मुनिवर पांच महाव्रत धारी।
दे उपदेश सदा सुख कारी, सम दम खम चित्त धार। भ०।५।

सेठ सुदर्शन मन्त्र प्रभावे, सूली का सिंहासन थावे।
भूपति चरणन में सिर नावे, सब बोले जय कार। भ०।६।

अग्नि कुंड जब सन्मुख आया, जगदम्बा सीता ने ध्याया।
सुर ने तेऊ नीर बनाया, मेटा दुःख अपार। भ०।७।

शत्रु जन मित्र बन जावे, विषमस्थल सम मार्ग पावे।
आपत्ति सब दूर नसावे, मन्त्र श्री नवकार। भ०।८।

कालकूट अमृत सम प्रगमें, ऋद्धि सिद्धि सुख पावे जग में।
शक्र कुबेर पड़े आ पग में, मूल मन्त्र आधार। भ०।९।

(२१८)

॥ पर्युषण पर्व आज आया ॥

(तर्ज : गुरुजी ने ज्ञान दियो भारी)

पर्युषण पर्व आज आया, के सज्जनों पर्व आज आया,
के मित्रों, पर्व आज आया।
सब जीवों की करो दया यह संदेशा लाया। टेर।

आठों दिन तुम प्रेम धरी नें, वांयां और भाया।
खूब करो धर्म ध्यान खास, सद्गुरु ने फरमाया। १।

त्यौहार सिरोमणि यही जगत में, तज दीजे प्रमाद।
देव गुरु व धर्म अराधो, अनुभव रस आस्वाद। २।

ज्ञान दर्शन चारित्र पोसवा, पोसा करो जरूर।
पट आवश्यक संवर समाई, करे पाप को दूर।३।

रात्री भोजन और नशा सब, छोड़ो विणज व्यौपार।
हरी लीलोती मिथ्यात्व त्यागी, शील रतन लो धार।४।

उत्तम करणी कीजे पुण्य से, मनुष्य जन्म पाया।
बेला तेला करो पचोला, पच्छखो अठायां।५।

रतलाम शहर में पूज्य समीपे, चौमासा ठाया।
साल पिच्यासी सभा बीच में, 'चौथमल' गाया।६।

(२१६)

॥ प्रभो तुम्हारे पावन पथ पर ॥

आग्रह हीन गहन चिन्तन का, द्वार हमेशा खुला रहे।
कण कण में आदर्श तुम्हारा, पय मिश्री ज्यों घुला रहे।
जागें स्वयं जगायें जग को, हो यह सफल हमारा नारा।प्रभो।४।

नया मोड हो उसी दिशा में, नई चेतना फिर जागे।
तोड़ गिरायें जीर्ण शीर्ण जो, अन्ध रूढियों के धागे।
आगे बढ़ने का यह युग है, बढना हमको सब से प्यारा।प्रभो।५।

शुद्धाचार विचार भित्ति पर, हम अभिनव निर्माण करें।
सिद्धान्तों को अटल निभाते, निज पर का कल्याण करें।
इसी भावना से भिक्षु का 'तुलसी' चमका भाग्य सितारा।प्रभो।६।

(२२०)

। पायो रतन अमोल ।

पायो रतन अमोल, हीरो हार जो मती।
निकल्या चोरासी चक्कर में, गोता खाव जो मती।

गर्भावास में सड़ियो गलियो, बार बार दुख पायो।
थे तो वारे आया सुवात, बिसार जो मती। पायो।१

आगे धंदो पीछे धंदो, धंदा में फिर धंदो।
थे तो धंदा मांहि धरम करणो, भूल जो मती। पायो। २।

बात बात में क्रोध न करणो, मनने पाछो मारणो।
कोई कटुक केवे तो पाछा, बोलजो मतो। पायो। ३।

गोरा गोरा देख बदन क्यों फूला है - फूला है।
चार दिनों की जिन्दगानी पर, भूला है - भूला है।
जीवन सफल बनाले रे, 'केवल मुनि' समझाये।
ओ जाने वाले, गाले। ४।

(२२२)

। पानी के झाग ज्यूं जाय रही जिन्दगानी।

ये सुपना सम संसार, समझ रे प्राणी २।
पानी के झाग ज्यूं जाय रही जिन्दगानी। टेर।
मैं सूता था भर नींद, के सुपना आया।
सुपना में देखी, अजब तरह की माया।
जब आंख खुली तब, कोई नजर नहीं आया।
ये इन्द्रजाल सम देख, जगत की माया।
जो करे जगत में मान सो ही अज्ञानी। पानी०।१।
यह घर तरुवर सम पक्षी, कुटुम्ब ये भाई।
ये रात लिये विश्राम, मिले सब आई।
फिर फजर हुवा से, सब पक्षी उड़ जावे।
ज्यूं आयु भुगत्या, कुटुम्ब लोग खिर जावे।
जद क्यूं करना अभिमान, समझ रे प्राणी।पानी।२।
तेरे हुए अनंता तात, अनंता माई।
ज्यों एक जन्म का दूध, बूंद लो भाई।

तो सागर भरे अपार, पार है नाहीं।

जद क्यूं करना दिल समझ, मान मन माँहीं।

अब सुख चाहो तो, सुणो भव्य जिनवाणी। पानी०। ३।

तज क्रोध मान और, दिल से झूठ अन्याई।

पर निन्दा त्यागो छोड़ो मान बड़ाई।

यूं 'सुगनमल' की सीख, वरौ शिव रानी। पानी०। ४।

(२२३)

। पाप से बोत राजी।

(तर्ज : नेमजी की जान वणी भारी)

पाप से बोत जीव राजी, खेल रयो कुमति संग बाजी।

होय रयो ममता को मांजो, सुमत की सेज नहीं साजी।

दोहा—मिथ्या मत में भूल तो, लगा कुगुरु का कान।

भव भव में भटकावसी, थारे खुली दुर्गति की खान।

अंधेरो ज्ञान बिना, तेरो ज्ञान अख्यारत धर्म बिना।

तेरो धर्म अख्यारत मरम बिना, प्राणी नहीं पावे भव पार।

गुरु के हुकम बिना। १।

जीव तूं पुदगल को रसियो, जगत जंजाल में फंसियो।

कर्म को काट नहीं धसियो, धर्म से दूर जाय बसियो।

दोहा—माया माया कर रयो, पच रयो दिन ने रात।

कोड़ी कोड़ी जोड़ ने तू, भेलो कीनो धन। अंधेरो। २।

काया तेरी बोत बनी चंगी, पलक ने घीसंता भंगी।
धर्म विना देह तेरी नंगी, विपत में कौन होय संगी।
दोहा—जप तप किरिया बायरो, खावे ताजा माल।
करम उदय जब होवसी, थारा नरक होय हवाल। अंधेरो। ३।

भटकतो तिरिया के तांई, पुत्र परिवार और भाई।
खावण में सब भेला थासी, विपत में कौन संग आसी।
दोहा—थारा किया तूं भोगवे, मत कर आरत ध्यान।
अवसर पर चेत्यो नहीं, थारो गयो हियेरो ज्ञान। अंधेरो।४।

जुल्म तेने बोत किया भाई, जरासी जिंदगी तांई।
अबे तू चेतरे गेला, देत है सत गुरुजी हेला।
दोहा—उगनिसे इकावसे, फागुन होली चोमास।
जयपुर में 'जड़ावजी' कांई, करी लावणी तास। अंधेरो। ५।

मल्लिनाथ मुनि सुव्रत स्वामी, श्री नमि नेम पार्श्व शिवगामी।
है अगणित फल महावीर, जिन जापना रे।४।

विहरमान प्रभु बीस जिनेशा, पुंडरीक सौ आदि गणेशा।
सब मुनिराज महोदय, दिव शिव आपना रे।५।

प्रेम युक्त सब क्षमा क्षमाओ, पारस्परिक विरोध मिटाओ।
मैत्री भाव बढ़ाय, कर्म वन कांपना रे।६।

'माधव' मुनि मन मोद बढ़ा के, उत्तम क्षमा भाव मन लाके।
भव्यों भक्ति से सब हिल मिल, छंद अलापना रे।७।

(२२५)

॥ पामर प्राणी चेते तो चेताऊं ।

पामर प्राणी चेते तो चेताऊं तोने रे। टेर।
माखी होय मध कीधूं, न खायो न दान दीधूं।
ओ लूटन हारे लूट लीधूं रे। पामर प्राणी०।१।

थारे हाथ भव रासी, तेतलुं तो थारो थासी।
बीजो तो बीजे ने जासी रे। पामर प्राणी०।२।

सहूकारी में थूं सवायूं, लखपति थूं लखायूं।
कहे साचो सुं कमायो रे। पामर प्राणी०।३।

देवमान देह दीधी, तेहनी न किमत कीधी।
मणो साठे मसी लीधी रे। पामर प्राणी०।४।

मनना विचार थारा, मनमां रहीजे न्यारा।
फरे थी न आवे वारो रे। पामर प्राणी०। ५।

निकले शरीर मांथी, पछे तु ं मालक नथी।
ओ 'दलपति' दीनो कथी रे। पामर प्राणी०। ६।

(२२६)

॥ पार्श्वनाथ सहाई जाके ॥

(तर्ज : प्रभाती)

पार्श्वनाथ सहाई जाके, कमी रहे नहीं कांई। पा०।
वन में मंगल रण में रक्षा, अग्नि होत सितलाई। १।

जहां-जहां जाऊं तहां-तहां आदर, आनन्द रंग वधाई।
कहा करे द्वेषी जन कोऊ, वाल न वांको थाई। २।

भजन करे सो नवनिधि पावे, विष अमृत हो जाई।
'रूपचन्द्र' प्रभु के गुण गावे, जन्म-जन्म सुखदाई। ३।

(२२७)

॥ पाय नर भव की जिन्दगानी ॥

(तर्ज : नेमजी की जान)

पाय नर भव की जिन्दगानी, समझ अब भज अरिहंत प्राणी। टेर।
विश्व में तू ं फिरता आया, जाग अब स्वमती रे भाया।
नरक विच तेने दुःख पाया, गोता वैतरणी में खाया।

दोहा—वृक्ष सांमली बीच में, तीक्षण कंठ बनाय।
पकड़ देव यम डाल दिया, तुझ सकल वींधानी काय।
तुरत ही खेंच लिया ताणी। १।

यम पशुवां का रूप कर के, पक्षी विच्छु अहि अजगर के।
खाया तुझे चटका देकर के, सहा दुःख सब पल सागर के।

दोहा—नरक पाल तुझे नरक में, मथियो जमी पर डाल।
दया रहित मुद्गल से तेरां, किया हाल बेहाल।
कौन गिनते राजा रानी। २।

करी जीव घात झूंठ बोला, किया कूडा मापा तोला।
गमन परनार संग डोला, पाप अपना पर सिर ढ़ोला।

दोहा—मरम उघाड़िया पारका, कूड साख चितलाय।
सतपुरुषां की करी बुराई, मगन होय मन मांय।
करे यमराज न्याय छानी। ३।

मांस का आहार किया चुपचाप, स्वाद करके पिया शराब।
आज मेहमान पधारे आप, आड़ा नहीं आवे मां और बाप।

दोहा—जैसा कर्म यहां पर करे, वैसा सब जितलाय।
लोहादिक कर गरम-गरम, यम तुझको दिया पिलाय।
शास्त्र में फरमा गये ज्ञानी। ४।

योनी तिर्यञ्च की तूं पाया, पशु और पक्षी कहलाया।
विषम सम जगह जन्म पाया, पिया जल मिला वही खाया।

दोहा—झाड़ खाड़ बिल पहाड़ में, खोखल माला मांय।
शीत उषण का सहा महा दुःख, कहां तक कहूं दर्शाय।
उपर से बरस रहा पाणी। ५।

कभी तूं अग्नि में जलियो, कभी तूं पाणी में गलियो।
कभी तूं घाणी में पिलियो, कभी तूं माटी में मिलियो।

दोहा—पशु हुआ बन्धन पड़ा, पक्षी पींजरा मांय।
कहो कुटुम्बी गये कहां जब, हुआ कर्म का न्याय।
वक्त पर कहां चुगा पाणी। ६।

किसी ने तेरा सींग तोड़ा, किसी ने नाक कान फोड़ा।
किसी ने तेरा पूंछ मोड़ा, किसी ने हल रथ में जोड़ा।

दोहा—चाम रोम नख कारणे, दुषह किया तुझ मार।
सेक भूंज तल खा गये तुझे, ना कोई सुनी पुकार।
जरा तो सोच रे अभिमानी। ७।

कभी हुआ मानस कुजाता, हीन और दीन अनाथा।
दुःख में गुजरा दिन राता, कौन पूछे दुःख की वातां।

दोहा—रेवा काजे घर नहीं, तन ढ़ाकण पट नांय।
मालिक की गाली सुनी, मौन रखी मन मांय।
कहो ये है किसने छानी। ८।

गर्भ का दुःख तेने पाया, अधो सिर रहा तू लटकाया।
सवा नव मास स्थान ठाया, मूत्र मल से तन लिपटाया।

दोहा—माता किया विलाप जब, किया काट कर वार।
पूरब जन्म के पाप हैं भारी, ऐसा दिया करार।
बात यह तेने भी जानी। ९।

कभी पाया सुर अवतारा, हुआ तू नर तप करनारा।
कंद्रपी किंकर पद धारा, सूत्र में देख हाल सारा।

दोहा—किलविषी हुआ देवता, नहीं ऊंच स्थान।
उत्तम सुर मिला नहीं, कहां तक करूं बयान।
छोड़ दे सब खेंचातानी। १०।

कथन यह शास्त्र से कीना, चतुर सुन हिय मनन करना।
चारों भवसागर से तरना, दया और सत्य का लो शरना।

दोहा—मेरे गुरु नन्दलालजी, शिक्षा दी सुख सार।
चतुर्मास अलवर में करके, आये जयपुर मार।
बनो तुम मित्र अभयदानी। ११।

(२२८)

॥ पायो पायो मिनख जमारो ॥

(तर्ज : तेजा की, लाग्यो-लाग्यो जेठ....)

पायो पायो मिनख जमारो भल भाई रे।
हीरां ने रत्नों सूं तोल्यो ना तूले।

कीजो-कीजो सफल भजन कर भाई रे।
सोना री घड़ियां तो आई हाथ में ...।

दीजो दीजो दान दया रा भाव लाई रे।
कीर्ति तो बढ़ेला थांरी चौगुणी........।

रहसी-रहसी नाहीं थिर काया माया थांरी रे।
जावेला जिणा रो पतो है नहीं........।

गाड़ी गाड़ी गाढ़ो क्यूं थे आतो चंचल नारी रे।
बिजली रे भलकारे साथे जावसी....।

रोयां धोयां रेवे नहीं दया इणने आवे रे।
आतो रे चिरताली चवड़े मान लो....।

बालपणो खोयो ने जवानी गई सारी रे।
पछे तो बुढ़ापा लेवे वारणा ......।

कोई नहीं पूछे नाछे, मन ही मन बिलखावे रे।
रोया ने भिक्यां सू हीरो है कठे ....।

इण सूं थांने कहूं भायो मानो बात म्हारी रे।
करणी तो करोनी मुक्ति जाण री....।

गायो गायो मादलिया में पौष सुदि मांई रे।
छठ रे दहाड़े 'मिश्री' मोद सूं ......।

(२२६)

॥ पीछे पछतायेगो ॥

(तर्ज : चुप चुप खड़े हो)

नर तन महान है, वृथा जो गमायेगो।

ज्ञानावरणी से ज्ञान घटायो, दरशनकुं दरशन से ।
वेदनी ने सुख दुःख दीना, आपा लुट्या मोहनी से । पुद्गल ।३।

आयुष भव में थिर कर राख्यो, नाम रच्यो बहुरंग ।
गोत्र उपज्यो ऊंच नीच कुल, अंतराय वे ढंग । पुद्गल । ४ ।

इन अष्टनकी गेल में रे, नित्य रह्यो भरमाय ।
निज आनंद को छोड़ केरे, परमें रह्यो फंसाय । पुद्गल ।५।

तेरे संग में चतुर गति में, कीना भव विशेप ।
इस जगत के रंग मंच पर, धरे बहुत से भेप । पुद्गल ।६।

इम भटकत संसार में रे, पायो नर भव सार ।
शुभ कर्म परसाद सेरे, बोले मिले छ चार । पुद्गल ।७।

अब तो म्हारो आपो जाण्यो, चेतन गुण निधान ।
तुझसे त्यागूं प्रीतड़ी तो, पाऊं पद निरवाण । पुद्गल ।८।

फूल अतर घी दूध में रे, तिल में तेल समान ।
मैं ज्ञायक हूं भावको रे, केवल मेरो ज्ञान । पुद्गल ।९।

ज्ञानामृत को पीकर केरे, श्रद्धा ले सूं धार ।
चारित्र से रोकूं आवता रे, तपसे पूर्व संहार ।पुद्गल।१०।

अष्ट अस्सी वर्ष संवत्सरी रे, जयपुर शहर शोभाय ।
'मूलचन्द' की यही भावना, रहियो सदा उरमाय ।पुद्गल।११।

(२३२)

। पैसो प्यारो रे ।

पैसो प्यारो रे, दुनिया ने लागे मोहन गारो रे । टेर ।

पैसो से नर प्यारो लागे, ज्यों काजल से कारो रे।
अजब चीज दुनियां में पैसो, कहे जग सारो रे। पैसो। १।

पैसा खातिर परमेश्वर की, सौ-सौ सौगन्ध खावे रे।
प्राण प्यारी ने छोड़ पुरुष, परदेश सिधारे रे। पैसो। २।

पैसा से दुनियां दे आदर, आगे आप पधारो रे।
निर्धन ऊबो टुक २ जोवे, लागे खारो रे। पैसो। ३।

पैसो आगे पतो न लागे, जो परमेश्वर आवे रे।
महादेव ने पार्वती आ, बाहर कढ़ावे रे। पैसो। ४।

काणा, खोड़ा, लूला ने ओ, पैसो तो परनावे रे।
विन पैसा से छैल-छवीलो, नार न पावे रे। पैसो। ५।

पैसा ने जो धूल वरोवर, समझे वो नर ज्ञानी रे।
'नाथ मुनि' शिष्य चौथमल कहे, भविहित आणी रे। पैसो। ६।

(२३३)

। प्रदेशी मानवी रे।

प्रदेशी मानवी रे, अरे तूं इधर उधर क्या जोता। टेर।

मेरा मेरा कहे तूं मुंह से, कहने से क्या होता।
विन स्वारथ के कोई न तेरा, पुत्र नार क्या पोता। १।

घर धन्धा में लदा फिरे ज्यों, परजापत का खोता।
ठाठ पड़ा रेगा पृथ्वी पर, कुटुम्ब रहेगा रोता। २।

तन मन्दिर को छोड़ जायगा, ज्यों पिंजरे का तोता।
खड़े रहेंगे मित्र देखते, आप खायगा गोता। ३।

हुआ उजेला जाग नींद से, बहुत वक्त का सोता।
सच्चा मोती छोड़ दिवाने, झूंठा पोत क्यों पोता। ४।

मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की; वाणी सुन ले श्रोता।
नैया पार लगे एक क्षण में; सब कारज सिद्ध होता। ५।

(२३४)

। प्रभु वीर ने हमको फरमाया।

(तर्ज : मिलता है सच्चा सुख केवल)

प्रवृत्ति त्याग निवृत्ति गृहों आतम को निर्मल करने को।
पंजाब केसरी आचार्य गुरु, पूज्य काशीरामजी नमो नमो।

(२३५)

। प्रभाते सु थवानु छे।

प्रभाते सु थवानु छे, प्रभु विन कौन जाणे छे।
दिचारो मां वृथा स्याने, मनुष्यों मोज माणे छे। टेर।

चणेला रात्रो ए किल्ला, प्रभाते ते पड़ेला छे।
फलों ताजा भरीया रात्रे, सवारे ते सड़ेला छे। प्रभाते। १।

प्रभाते राम ने गादी, अयोध्या नी हती देवी।
अहो बदलाई रात्री ए, मती केकैयी तणी केवी। प्रभाते। २।

करियु जेराम न नक्की, उठी वन मां जावा नु छे।
न जाणियो जानकी नाथ, प्रभाते सु थवानु छे। प्रभाते। ३।

जगत को नाट्य साला मां, अजाईब रात्री ना पर्दा।
प्रभाते ते उपड़ता तो, नवा देखाय जोवामा। प्रभाते। ४।

सुता परीयंक (पोलंग) माँ रात्रे, सवारे ते शमशाने छे।
हता हँसता अरे रात्रे, रूदन करता सवारे छे। प्रभाते। ५।

(२३६)

। प्रभु कब आप समान बनूंगा।

प्रभु कब आप समान बनूंगा २।

माटी खोदता माटी बोली, तू ही रे कुम्हार म्हारो संग साथी।
छोकी २ माटी खोदले कुम्हारड़ा, एक दिन माटी में मिल जासी।३

कलियां तोड़ता कलियां बोली, तू ही मालीड़ा म्हारो संग साथी।
छोकी २ कलियां तोड़ले मालीड़ा, एक दिन मारे ज्यूं खिरजासी।४

कहत कबीर सुनो भई साधो, अपनी करणी आप जासी।
प्रभु नाम का सुमरण करलो, कट जावे जम की फांसी।५।

(२३८)

। प्रभु भजन तूं करले रे प्राणी ।

(तर्ज : भलां घरा परनाई मोरा बाबुल—मारवाड़ी)

प्रभु भजन तूं करले रे प्राणी, भव भव सूं तिर जावेला।
नहीं रे भजेला बडो दुःख पावेला, सीधो नरक में जावेला। टेर।

ओ जग है मुसाफिर खानो, कोई नहीं टिक पाया।
जो भी भजेगा सुखी हुवेला, नाम अमर कर जावेला।
बातां मारे लंबी चौड़ी, करे एक नहीं पूरी रे।
नहीं रे भजेला । १ ।

केड़ो जमानो आयो रे लोगां, पापी रोब जमावे,
चोर बाजारी रिश्वतखोरी, नित नया सांग रचावे।
समझदार व्हे तो समझावां, कांई समझावां इन मनड़ाने।
नहीं रे भजेला। २।

सुणोरे भाया वातां माणी, भजन करो थें क्यूं नहीं।
थे नहीं मानो बाता म्हांणी, दुःख पावोला भारी।

स्वाध्याय मण्डल रो केणो है, भजन प्रभरा करलो रे।
नहीं रे भजेला। ३ ।

(२३६)

। प्रणमूं वासुपूज्य जिन नायक ।

(तर्ज : तेरी फूलसी देह पलक में पलटे)

प्रणमूं वासुपूज्य-जिन नायक, सदा सहायक तूं मेरो।
विषमी वाट घाट भयथानक, परमेश्वर शरनो तेरो। १।

खलदल प्रवल दुष्ट अति दारुण, जो चौ तरफ दिये घेरो।
तो पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी, अरियन होय प्रगटे चेरो।२।

विकट पहाड़ उजाड़ वीच कोई, चोर कुपात्र करे हेरो।
तिण विरियां करिये तो सुमरण, कोई न छीन सके डेरो।३।

राजा वादशाह जो कोई कोपे, अति तकरार करे छेरो।
तदपि तूं अनुकूल हुए तो, छिन में छूट जाय केरो। ४।
राक्षस भूत पिशाच डाकिनी, साकिनी भय न आवे नेरो।
दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागे, प्रभु तुम नाम भज्यां गहरो।५।

विस्फोटक कुष्टादिक संकट रोग असाध्य मिटे सगरो।
विष प्यालो अमृत होय प्रग में, जो विश्वास जिनन्द केरो।६।

मात जया 'वसु नृप' के नन्दन, तत्त्व यथारत बुध फेरो।
वेकर जोरि 'विनयचन्द' विनवे, वेग मिटे मुझ भव फेरो।७।

(२४०)

॥ प्राणी परदेशी २ अमर दुनियां में कहो कुण रेसी रे ॥

(तर्ज : पनजी मूंडे बोल)

प्राणी परदेशी २ अमर दुनियां में, कहो कुण रेसी रे। टेर।
मोटा पंथ संत फरमावे, तू क्यूं रेयो बेसी रे। १।

मारग मांही विलम रयो, थारी वुद्धि कैसी रे।
सुन्दरी का रंग रूप में मोयो, भोग गवेषी रे। २।

उदे अस्त तक राज्य करतां, ऋद्धि इन्दर जैसी रे।
बादल ज्यूं बिरलाय गया, तूं कहां तक रेसी रे। ३।

पुण्य से छत्रपति हुवो मोटो, हाथी घोड़ा मवेशी रे।
आगे सुख मिल जावे, तूं कर करणी ऐसी रे। ४।

माल खाजाना धर्या रहेगा, कुण लेजावा देसी रे।
अन्त समय तन का भूषण, उतार लेसी रे। ५।

परभव में जासी रे पापी, जम हाथां थारी पेसी रे।
नर्क कुण्ड में कर्म फल तूं, कैसे सेसी रे। ६।

गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, या वाणी उपदेशी रे।
वे ही तिरे जो जिन प्रभुजी को, शरणो लेसी रे। ७।

(२४१)

॥ प्रातः उठ चौबीस जिनंद को ॥

(तर्ज : प्रभाती)

प्रातः उठ चौबीस जिनंद को, सुमिरण कीजे भाव धरी। टेर।

प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तोशुं करिए कर्म अरि।
'रतनचन्द' शीतलता व्यापी, पातक लाय कषाय टरी। ५।

(२४३)

॥ प्रेमी बनकर प्रेम से ॥

प्रेमी बनकर प्रेम से, जिनवर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफिले, झाड़ू रोज लगाया कर। टेर।

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बर्बाद तू बन्दे, करता अपने आप रहा।
प्रातः काल उठ प्रेम से, सत्संगत में आया कर। १।

नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, मिलता जब तक मेल नहीं।
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर। २।

भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तेने रोटी खाई क्या।
दुखिया पास पड़ा है तेरे, तेने मौज उड़ाई क्या।
सबसे पहले पूछ कर, भोजन तूं फिर खाया कर। ३।

देख दया उस वीर प्रभु की, जिन शासन का ज्ञान दिया।
जरा सोचले अपने मन में, कितनों का कल्याण किया।
सब कामों को छोड़ कर, उसको ही तूं ध्याया कर। ४।

(२४४)

॥ फकीरा निरभय पड़ा निरमोय ॥

फकीरा निरभय पड़ा निरमोय, लोक लाज दीवी खोय। टेर।

अम्बर ओढ़ण धरण बिछावण, बीच मसाणे में सोय।
भूत प्रेत की परवाह नाहीं, जीवत मुर्दा होय। फकीरा। १।

दीसत मुर्दा है चेतन सा, जाण सके नहीं कोय।
उनकी रे गति तो वो ही जाणे, नहीं हंसे नहीं रोय। फकीरा।२।

आवत जावत श्वास ले झकोला, हर दम हिरदा ने धोय।
कूड़ कपट का दाग रे मेटिया, करम रहा नहीं कोय। फकीरा।३।

पार ब्रह्म सद् गुरु प्रसादे, संशय रहा नहीं कोय।
गोपेश्वर अजनेश्वर शरणे, सुरत सोहं में पोय। फकीरा। ४।

(२४५)

॥ फेरो एक माला ॥

सुबह और शाम की,
प्रभुजी के नाम की,
फेरो एक माला,
हो हो फेरो एक माला। टेर।

सकल सार नवकार मन्त्र है, परमेष्ठी की माला।
नरकादिक दुर्गति का शचमुच, जड़ देती है ताला।
कर्मों का जाला, मिटे तत्काला। फेरो एक माला। १।

सुदर्शन और सीताजी ने, फेरी थी यह माला।
शूली का सिंहासन हो गया, शीतल हो गई ज्वाला।
शील जिसने पाला, सच्चा है रखवाला। फेरो एक माला।२।

(२४६)

सुमिरण करके श्रीमती ने, नाग उठाया काला।
महा भयंकर विषधर था, वह बनी फूल की माला।
धर्म का प्याला, पियो प्यारेलाला। फेरो एक माला। ३।

द्रौपदी का चीर बढ़ाया, दुःशासन मद गाला।
मैना सुन्दरी श्रीपाल का, जीवन बना विशाला।
सुभद्राजी महिला, चम्पा द्वार खोला। फेरो एक माला। ४।

राजदुलारी बाल कुमारी, देखो चन्दन बाला।
महा भयंकर कष्ट उठाया, सिर मूंडा था मूला।
तपस्या का तेला, सब दुःख ठेला। फेरो एक माला। ५।

समय बीतता जाये मित्रों, जीवन सफल बनाओ।
सद्गुरु के चरणों में आ, परमेष्ठी ध्यान लगालो।
गुण गावो भोला, हरि ऋषि बोला। फेरो एक माला। ६।

(२४६)

॥ फैशन छोड़ दो ॥

(तर्ज : घूंसो बाजे रे........)

फैशन छोड़ दो, फैशन में पूरा फोड़ा पड़सी रे। टेर।

मूंछारा मरदां थे थांरी, मूंछा कठे गमाई रे,
सूता बैठा आ कांई थारे, मन में आई रे। फैशन। १।

कोट पेन्ट और टोप लगा कर, हिन्दू धर्म डुबायो रे,
धोती की एक लांग खोल कर, धर्म गमायो रे। फैशन। २।

घर में तो भोजन नहीं भावे, आही आदत खोटी रे,
होटल में जाकर तूं खावे, डब्बल रोटी रे। फैशन। ३।

मां बापां को कांण कायदो, ऊँचो मेल्यो खूंट्या रे,
सिगरेटा मूंडा में राखे, भाग फूटा रे। फैशन। ४।

गिरदानो तो नहीं सुहावे, बड़ो अचम्भो आवे रे,
हेयर कटिंग में जाकर बालू, बाल कटावे रे। फैशन। ५।

बाया में फैशन ऐडी सूं, चोटी तांई चढ़गी रे,
फैशन बुरी बलाय हाय, भारत में बसगी रे। फैशन। ६।

मुनियां का व्याख्यान भी अब, फैशनदार बणग्या रे,
फैशनियां श्रोता लोगां के, मन मांही रमग्या रे। फैशन। ७।

ओघा और मुखपति मांहि, वेरण जाकर बसगी रे,
खादीरा कपड़ां में भी पिण, फैशन बसगी रे। फैशन। ८।

सादगी सूं जीवन बितावे, तो सुधरे जिन्दगानी रे,
फैशन छोड़ सादगी धारो, के जिनवाणी रे। फैशन। ९।

(२४७)

॥ बहु पुन्य केरा पुंज थी ॥

बहु पुन्य केरा पुंज थी, शुभ देह मानव नो मिल्यां।
तो अरे भव चक्र नो, आंटो नहीं एके टल्यां।

सुख प्राप्त करतां सुख टले छे, लेश ए लक्षे लहो।
क्षण क्षण भयंकर भाव मरणे, कां अहो राची रहो। १।

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, सुं वध्युं ते तो कहो।
सुं कुटुम्ब के परिवार थी, वधवा पणुं ए नहीं गहो ?
वधवा पणु संसार नुं, नर देह ने हारी जवो।
एनो विचार नहीं अहो हो, एक पण तम ने हवो। २।

निर्दोष सुख निर्दोष आनन्द, ल्यो गमें त्यांथी मले।
ए दिव्य शक्तिमान जेथी, जंजीरे थी निकले।
पर वस्तुमां नहीं मुजनो, एनी दया मुजने रही।
ए त्यागवा सिद्धांत पश्चात, दुःख ते सुख ही नहीं। ३।

हुँ कोण छुं, क्यांथी थयो, शुं स्वरूप छे म्हारुं खरुं।
कोन संबधे वलगणा छै ? राखूं केए परहरुं ?
एना विचार विवेक पूर्वक, शांत भावे जो कर्या।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान ना, सिद्धांत तत्त्व अनुभव्या। ४।

दे प्राप्त करवां वचन कोनुं, सत्य केवल मानवूं।
निर्दोष नर नुं कथन मानो, तेह जेणे अनुभव्यूं ?
रे आत्म तारो, आत्म तारो, शीघ्र एने ओलखो।
सर्वात्ममां समदृष्टि हो, आ वचन ने हृदये लखो। ५।

(२४८)

। वालो पांखां वाहिर आयो ।

वालो पांखां वाहिर आयो, माता वैन सुनावे यूं।
म्हारी कूख सराहिजे रे वाला, मैं थने सखरी घूंटी दूं॥

तेज कटारी नालो मोड़्यो, नालो मोड़त बोली यूं ।
वैरियां री फौजों में जाने, सत्य विजय कर आइजे तूं ॥
मेड़ी चढ़ने थाल बजाइयो, थाल बजावत बोली यूं ।
चार खूंट चोखण्डे रे वाला, नोबतड़ी घमकाइजे तूं ॥
कूएं पूज कर फलसे आई, फलसे बढ़तां बोली यूं ।
फलसां में ढोलां रे ढमके, आरतड़ी करवाइजे तूं ॥
गोदियां सूतो बालो चुंगे, माता बोल सुनावे यूं ।
घोला दूध में कायरता रो, कालो दाग न लाइजे तूं ॥
वालो मांय भुजा पर लीनो, भार वहन्ती बोली यूं ।
धरती मां रो भार हटाइजे, मत ना भार बढ़ाइजे तूं ॥
बालो मां छाती से चेप्यो, छाती चेपत बोली यूं ।
दीन दुखी असहाय जनों ने, छाती से चिपकाइजे तूं ॥
रंग खटीले बालो सूतो, माता बोल जगावे यूं ।
वैरियां री चतुरंगी सेना, गाढी नींद सुलाइजे तूं ॥
सोहन पालनो बालो, झूले, झोटत झोटत बोली यूं ।
इतनी वार हिलाइजे पृथ्वी, मैं थने जितना झोटा दूं ॥
इतना काम करी म्हारा वाला, जब जाणूंगी जायो तूं
पुत्र जाय कर रही बांझड़ी, नहीं तर मैं समझूंगी यूं ॥

(२४६)

॥ बुढ़ापा वैरी किण विध ॥

बुढ़ापा वैरी, किण विध होसी थारो छूटको। टेर।

हाथ न हाले, पांव न चाले, हाथ में लीनी गेड़ी ।
हालतड़ाने चालतड़ाने, कमर हो गई टेड़ी । १ ।

मैं तो मांके खूब कमावां, टाबरिया परणावां ।
थाने भावे चक चूरमां, मैं कठां से लावां । २ ।

घर सूं आवे ठंडा टुकड़ा, मन मीठा पर जावे ।
राब छाछ मन भावे नाहीं, मीठा पे मन जावे रे । ३ ।

बालपणो हंस खेल गमायो, जोबन तिरिया बस को ।
बुढ़ापा में जरा सतावे, खातां पीतां टस को । ४ ।

जोत भइ आख्यां की मंदी, दांत पड़्या ढ़ीला ।
नाक झरे सुणवा को घाटो, केश भया सब पीला रे । ५ ।

बहुवां छोड़्यो कांण कायदो, कद मरसी ओ डाकी ।
खाय सकां नहीं पेर सकां नहीं,हीड़ा कर कर थाकी रे । ६ ।

वढ़ा गावे, शान्त, भावे, सुणीया सदा सुख पावे ।
तुलसीदास की याही विनती, मन चीत्या फल पावे । ७ ।

(२५०)

। बुढ़ापे में मनड़ा ने मारले कनी ।

(तर्ज : कौन परदेशी मेरा दिल ले गया)

वुढ़ापे में मनड़ा ने मार ले कनी, जीवन है आपरो सुधारले कनी ।

जो छतीस गुण के धारक हैं।
जिन शासन के संचालक हैं।
वो पद नमो आयरियाणं ...वोलो....।

अंग उपांग पढ़ाते हैं।
शासन की शान बढ़ाते हैं।
उन उपाध्याय को शीश नमन् वोलो।

पंच महाव्रत के धारक हैं।
त्रय रत्न शुद्ध आराधक हैं।
स्वपर तिन्नाणं तारयाणं....वोलो....।

ये महामन्त्र नवकार महा।
इससे बढ़कर न कोई महा।
"भंवर" पा सकता शिव धामम्....वोलो....।

(२५२)

। वोल वोल आदेश्वर वाला ।

(तर्ज : पनजी मु'डे वोल....)

ऋषभ जी मू'डे वोल,
वोल वोल आदेश्वरवाला कांई थारी मरजी रे मांसू मू'डे वोल।
वोल वोल मारा ऋषभ कन्हैया, कांई थारी मरजी रे मांसू मू'डे वोल। टेर।

सुनी आज मारो लाल पधारियो, वनिता वाग के मांहि रे।
तुरत गज असवारी करने, आई उमाही रे। १।

रह्यो मजा में है सुख साता, खूब कियो मन चायो रे।
एक कहन या थांसू लाल, मोड़ो क्यों आयो रे ।२।

खेर हुई अण हुई न होवे, एक वात भली नहीं कीधी रे।
गया पाछे कागद नहीं भेज्यो, मोरी खवरा न लीवी रे।३।

वार त्यौहारे भोजन भांणा, ताता केई आता रे।
थारी याद में ठंडा होता, पूरा नहीं भाता रे ।४।

खोलो खोलो जल्दी मौन ने, खोलो खोलो खोलो रे।
वोलो वोलो मांसू वोलो, वोलो वोलो वोलो रे ।५।

थे निर्मोही मोह नहीं आयो, मैं मोह कर कर हारी रे।
मोरा देवी गज होदे गई, मोक्ष मंझारी रे ।६।

समत उगणीसे साल चोसठे, भोपाल सेखे कारी रे।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, धन्य महतारी रे ।७।

(२५३)

। वेर वेर नहीं आवे अवसर ।

वेर वेर नहीं आवे अवसर, वेर वेर नही आवे रे।
जहां जावे त्यां करना भलाई, जन्म जन्म सुख पावे रे।१।

तन धन यौवन सब ही झूठो, प्राण पलक में जावे रे।
तन छूटे धन कौन काम को, काहे को कृपण कहावे रे।वेर।२।

जांके हिरदे सांच वसत है, वांको झूठ न भावे रे।
आनन्द घन प्रभु चलत पंथ पे, सुमर-सुमर गुण पावे रे।वेर।३।

(२५७)

॥ भाया प्रभु भजले रे भाया ॥

(तर्ज : मारवाड़ी-पल्लो लटके)

प्रभु भजले रे भाया प्रभु भजले।
जरासो केणो मारो मानले, तूं प्रभु भजले। टेर।

मोह माया में झूम रयो तूं, कर रयो थारी म्हारी।
ज्ञान धर्म की बातां केवे, लागे थांने खारी रे। भाया प्रभु। १।

मुट्ठी बांधियो आयो रे जग में, हाथ पसारियो जासी।
दया धर्म की करले कमाई, आहीज आड़ी आसी रे। भाया प्रभु।२।

जवानी री अकड़ाई में टेढो टेढो चाले।
पर थने नहीं इतरी मालूम, कांई होसी काले रे। भाया प्रभु। ३।

छोटी मोटी बणी रे हवेलियां, अठे पड़ी रह जासी।
दो गज कफन रो टुकड़ो आखिर, थारो साथ निभासी रे। भाया।४।

तू है पावणो भूल मतीना, चार दिनां रो भाई।
काल काकाजी आवेला थारो, कंठ पकड़ ले जासी रे। भाया।५।

बाल मण्डल केवे रे भायला, यों मौको नहीं आसी।
प्रभु भजन नहीं कियो बावला, फिर पीछे पछतासी रे। भाया।६।

(२६४)

॥ भाव भीनी वन्दना ॥

(तर्जः जो व्यथाएं प्रेरणा दे उन व्यथाओं को दुलारे)

ऊँचा जो महल चुनाविया, करतां होड़ाजी होड़ ।
चिट्ठी पहुँची राम री, गया पलक में छोड़ । भूल्यो । ७ ।

उलटी नदी रे मारग चालनो, जानो पेली रे पार ।
आगे नहीं हट वाणियां, खर्ची ले लो रे लार । भूल्यो । ८ ।

खावे पीवे खर्चे घणो, जपे नहीं नवकार ।
दान शील तप भावना, जग मांहि ए तंत सार । भूल्यो । ९ ।

भव सागर जल दुःख भर्यो, जेनो छेह न पार ।
वीच में छे अन्तर घणो, कर्म वायु नो झबकार । भूल्यो ।१०।

जे घर नोवत वाजती, होता छत्तीस राग ।
ते मन्दिर खाली पड्या, वैठवा लाग्या रे काग । भूल्यो ।११।

परदेशी परदेश में, किण सुं करे रे स्नेह ।
आयो रे कागद उठ चालियो, आंधी गिने नहीं मेह । भूल्यो ।१२।

धन्धो करीने धन जोड़ियो, लाखां ऊपर करोड़ ।
मरती रे वेला मानवी, लेसी कंदोरो तोड़ । भूल्यो । १३ ।

कोई कहे चालिओ के चालसी, कोई कहे चालन हार ।
रात दिवस खोवे घणी, रक्खे नहीं लिगार । भूल्यो । १४ ।

जिन विना एक घड़ी सुधि, सरतो नहीं रे लिगार ।
सौ सौ वर्षों गुजरिया, सुध नहीं रे लिगार । भूल्यो । १५ ।

सोवन गढ़ लंका पति, तेमा रावननाथ ।
अंत समय उठ चालीया, नहीं कांई ले गया साथ । भूल्यो । १६ ।

ममन सेठ धन जोड़ियो, जोड़ियो छप्पन जी क्रोड़।
खायो पियो खरच्यो नहीं, गयो जी माथो फोड़। भूल्यो। १७।

धरती अखण्ड कुमारियां, वर केतलायी जवान।
मेरी मेरी कर मर गया, हिन्दू मुसलमान। भूल्यो। १८।

भीम कहे सुनो भाइयों सुनजो सगला लोग।
अठेऊं उठ चालनो, नहीं कोई राखन जोग। भूल्यो। १९।

जीवड़ो जातो इम कहे, नहीं कछु दोनों रे साथ।
लाडू दिया दोय चूरने, फूटी हांडी रे साथ। भूल्यो। २०।

मुनिवर कहे भाई सांभलो, लो कोई आया रे साथ।
धर्म नो लाभ लई लो, लेखो साहिब रे हाथ। भूल्यो। २१।

(२६७)

। भोला भूल मतीना जाजे रे।

(त : ढोला ढोल मजीरा)

भोला भूल मतीना जा जे रे।

मद भरियो जोवनियो थारो, ढलतो लाजे रे। ध्रुव।

नीच ठिकाण ऊपज्यो रे, कियो सूघलो आहार।

हाड़ मांस रा डील रो तू, करतो रहो सिणगार। १।

गोरी गोरी चामड़ी रे, थारा मन में ऐंठ।

पतो नहीं है थोड़ा दिन में, व्हेला अगनी भेंट। २।

घोला दिन को धाड़ो पाड़े, रात पड़यां फिर जावे।
राज कचेरी जाय पुकारे, अन्यायी बाजे जी । ६ ।
सुन उपदेश राखो मन दृढ़ता, धारो व्रत अरु नेम।
अभयदान वान हो सुधरो, राखो धर्म सूं प्रेम जी । ७ ।
उगणीस से सतंतर खण्डवा, संतोक मुनि उपकार।
मुनि मोतीलाल कहे हरी खाने का, त्याग करो नरनार । ८ ।

(२७०)

। मत जाओ म्हारा महावीर स्वामी ।

(तर्ज : ओ जीरो जीव रो वैरी—मारवाड़ी)

रो-रो चन्दना पुकारेजी, मत जाओ म्हारा महावीर स्वामी । टेर ।
मैं अबला कर्मा री मारी २, दर-दर ठोकर खाई रे। मत० ।१।
मैं भी तो थी राजदुलारी २, सरे बाजार विकानो रे। मत० ।२।
धन्य घड़ी धन्य भाग्य है म्हारे २, आप पधारिया आंगणिये ।३।
उड़द बाकला हाजिर २, आहार करो म्हारा स्वामी जी ।४।
चम्पा लुटगी में बिकियोड़ी २, कौन सुणेला म्हारी वातड़ली।५।

(२७१)

। मत भूलो कदा ।

(तर्ज : सेवो श्री रिष्ट नेम २, ज्या घर वरते जी कुशल क्षेम)

मत भूलो कदा रे, मत भूलो कदा ।
वीर प्रभु के गुण गावो सदा । टेर ।

जो जो भाव प्रभु प्रगट किया ।
गणधर सूत्रों में गूंथ लिया । १।

प्रभुजी की वाणी को आज आधार ।
सुन सुन सफल करो अवतार । २ ।

जल से न्हाया तन का मैल हटे ।
प्रभुजी की वाणी से पाप कटे । ३ ।

तुरन्त फरत सब विपत टले ।
जिहां तिहां वांछित आश फले । ४ ।

"मुनि नन्दलालजी" हुक्म दियो ।
जद रावल पिंडी चौमासो कियो । ५ ।

(२७२)

। मत लेवो नाम संयम को पिया ।

(तर्ज : वहरे खड़ा)

जम्बू कुंवर के आगे पदमन, अरज करत जोड़ीकर कर ।
मत लेवो नाम संयम को पिया, सुन धूजे छाती म्हाकी थरथर ।टेर।

श्री सुधर्मास्वामी की वाणी सुन, वैराग्य जिगर में छाया है ।
आ घर आज्ञा मांगी कुंवरजी, माताजी मूर्च्छा खाया है ।
जगत जाल और काम भोग, पापों से दिल घबराया है ।
ऐसे वचन मत काढ़ो कुंवरजी, होश में आ फरमाया है ।
कहो किसका आधार हमें, यूं कहती माता आंसू भर-भर ।
मत लेवो नाम संयम को पिया, सुन धूजे छाती म्हांकी थर-थर ।१।

जरा तो दिल में ख्याल करो, संयम मारग को कठिन जानो।
खांडे की धार सुई की अणी है, स्वाद नहीं निरस मानो।
घन घणा उत्तम कुल परणियां, इन ऊपर तो दया आनो।
भूल चूक मत लेवो नाम, माता का पुत्र से फरमानो।
मानो कहन—मेरे लाल, गुणिजन सब आधार है तुम पर २।
मत लेवो नाम संयम को पिया, सुन धूजे छाती मांकी थर-थर।२।

(२७३)

॥ मतवाले प्रभु गुण गाले ॥

(तर्ज : तन डोले मेरा मन डोले)

मतवाले, प्रभु गुण गाले, यह जीवन है दिन चार रे।
यह सोचले वन्दे वांवरिया। टेर।

रेत की दीवारों पर निर्मित, जीवन का घर तेरा।
मद, मत्सर, मोह, लोभ, लुटेरों ने जिसको है घेरा।
अरे लुटेरों ने जिसको है घेरा।
प्रभु ध्याले, मन समझाले, पल भर का नहीं इतबार रे। १।

कदम कदम पर काल के काले, व्याल फिरे मतवाले।
मधुर मधुर वैभव जीवन के, हैं सब मिटने वाले।
अरे यह है सब मिटने वाले,
भर प्याले, भक्ति वाले, रस पीकर, कर उपकार रे। २।

मात पिता सुत नारी भ्राता, धाम और धन तज जाना।

जल जल कर इस जीवन दीप ने, आखिर है बुझ जाना।
अरे आख़िर है बुझ जाना,
मन लाले, सब दुःख टाले, प्रभु चरणन में, करे प्यार रे। ३।

क्यों भ्रम में भूला है पगले, करता मेरा मेरा।
यह जग "प्यारेलाल" सराय, चिड़ियां रैन वसेरा।
ओ चिड़ियां रैन वसेरा,
तप पाले, कटें कर्म काले, सत्य धर्म है जीवन सार रे।
यह सोचले वन्दे वांवरिया। ४।

(२७४)

॥ मन मोयो रे तूंगियापुर नगर सुहावणो ॥

मन मोयो रे तुंगियापुर नगर सुहावणो रे। टेर।

इण नगरी में बाजा बाजिया रे,
इण नगरी में आया साध रे। मन०। १।

मास खमण रो मुनि रे पारणो रे,
आया छे 'बलभद्र' मुनिराय रे। मन०। २।

इण नगरी में लेसां गोचरी रे,
इण नगरी में लेसां आहार रे। मन०। ३।

'कुवां' रे काटे कामण संचरी रे,
लारे रोवतड़ो नानो बाल रे। मन०। ४।

रूप सरूपे मुनिवर फूटरा रे,
दीसे छे इन्द्र तणे उनिहार रे। मन०। ५।

चुकल्या रे बदले वालक फांसियो रे,
दींनो छे कुवां में उसेर रे। मन०। ६।

धिक धिक हो जो म्हारा रूप ने रे,
धिक धिक इन संसार ने रे। मन०। ७।

इण नगरी में नहीं लेसां गोचरी रे,
इण नगरी में नहीं लेसां आहार रे। मन०।८।

वन में तो मुनिवर पाछा संचर्या रे,
बैठा छे तरुवर केरी छाय रे। मन०। ९।

वन में तो भावे मृगलो भावना रे,
आवे छे मुनिवर केरे पास रे। मन०। १०।

वन में तो फाड़े खाती लाकड़ा रे,
खातण लावे छे उणरे भात रे। मन०। ११।

दोष 'बयालिस' मुनिवर टालता रे,
लीनो छे सूझतो आहार रे। मन०। १२।

वन में तो बाज्यो बेरी वायरो रे,
टूटी है चम्पा केरी डाल रे। मन०। १३।

खाती मुनिवर ने तीजो मिरगलो रे,
पहुँचा है पंचम देवलोक रे। मन०। १४।

॥ म्हारी साधना में शक्ति ॥

म्हारी साधना में शक्ति कीयां, आवे म्हारा प्रभुजी ।
म्हारी भावना में भक्ती कीयां, आवे म्हारा प्रभुजी ॥
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पथ थाने पूछूंजी । टेर ।

भोर में तो जाणु आज, भूल नहीं करणी ।
पण भोले भोले भूल होय, जावे म्हारा प्रभुजी ।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पंथ थाने पूछूंजी । १ ।

ए ए ए जाणू आज अल्प, भाषी वण कर रहसूं ।
पण वोलवा में जोश, चढ़ जावे म्हारा प्रभुजी ।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पंथ थाने पूछूंजी । २ ।

ए ए ए जाणू जीभड़ी ने, खुली नहीं छोडूं ।
पण स्वाद मिलियां खूब खूब, खावे म्हारा प्रभुजी ।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पंथ थाने पूछूंजी । ३ ।

ए ए ए जाणू आज, दूसरा की सुणु नही निंदा ।
पण सुणियां सुं कान, सुख पावे म्हारा प्रभुजी ।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पथ थाने पूछूंजी । ४ ।

ए ए ए जाणु आज आंखड़ी रो, पाप नहीं लागे ।
पण चुपके से चोट लग जावे, म्हारा प्रभुजी ।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पंथ थाने पूछूंजी । ५ ।

ए ए ए वातां तो सोरी, पण पालना में दोरी।
म्हारे वासना रो वेग वल, खावे म्हारा प्रभुजी।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पथ थानें पूछूं जी। ६।

ए ए ए धन्य वो संतों ने, खड्ग धार पर चाले।
पण म्हांसु तो चाल्यो नहीं जावे, म्हारा प्रभुजी।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पंथ थाने पूछूं जी। ७।

ए ए ए ऐसो उपाय कोई, सोचवो रे स्वामी।
थारी वारी चन्दन मुनि, जावे म्हारा प्रभुजी।
समावे म्हारा प्रभुजी, मैं पंथ थाने पूछूं जी। ८।

(२७६)

॥ मन रे तूं तो बड़ा हरामी ॥

मन रे तूं तो वड़ा हरामी,
आतम ध्यान सुधा रस छोड़ी, वन विषयन को कामी। टेर।

मेरी आज्ञा रंच न माने, करतो जगत गुलामी।
फिर तो भटकत नश्वर जग में, तज कर अन्तर्यामी। मन रे।१।

जिसका कहावे उसीको लजावे, ये तुझ में वड़ो खामी।
ऋषि मुनि भी तुझसे हारे, तूं है निर्लज्ज नामी। मन रे। २।

ज्ञान ध्यान शास्त्र रुचे नहीं, लम्पटी विषयी कामी।
मैं तुझे वार-बार समझाऊं, समझे नहीं रे हरामी। मन रे। ३।

समझा कुटिलता तेरी अव मैं, मैं हूं तेरा स्वामी।

भ्रमण तज रमण कर प्रभु में, वनजा अब निष्कामी। मन रे।४।

संत सती के सद्गुण में रम, मिटे सकल वदनामी।
'केवल मुनि' कहे प्रपंच छोड़ सव, वनजा शिवपथ गामी।मन रे।५।

(२७७)

॥ मनवा कभी न हो दिलगीर ॥

(तर्ज : दुःख है ज्ञान की खान मनुआ)

कभी न हो दिलगीर मनवा, कभी न हो दिलगीर। टेर।
सुख दु.ख है जीवन का साथी, कभी भीर कभी चीर। मनवा।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र कहायो, पृथ्वी पति अमीर।
दिन पलट्या जद दुनियां पलटी, भर्यो नीच घर नीर। १।

राजपाट धन-धाम हार गयो, जूआ में नल वीर।
महाराया जो काल कहायो, वण गयो आज फकीर। २।

तीन खण्ड का नाथ कृष्ण जी, पुरुषोत्तम वल धीर।
वन-वन भटक्या अन्त समय में, रयो न जल में सीर। ३।

रावण सरीखा लंका खोई, धूजी कस शमसीर।
सन्मुख लखता गोपीयन लुटी, वही अर्जुन वही तीर। ४।

वड़ा वड़ारी या गत होवे, सम्भल देख पर पीर।
तन कपड़ो वैरी हो जावे, जव पलटे तकदीर। ५।

प्राण पियारी नर न पूछे, काहे होत अधीर।
पुत्र कहे नहीं पिता हमारा, वहन कहे नहीं वीर। ६।

वृद्ध हुयो जद यूं उठ बोली, घर की नारी रे।
कब बुड्ढो मर जावे तो छूटे, गेल हमारी रे। मनवा। ३।

यो संसार स्वप्न की माया, झूंठी सारी रे।
भजणो हो तो भजले भाई, मरजी थांरी रे। मनवा। ४।

(२८०)

॥ मनवा माटी की या काया ॥

(तर्ज : भजले वीर प्रभु का नाम)

मनवा, माटी की या काया, आखिर माटी में मिल जासी। टेर।

हिंसा बढ़ाकर, जीव दुःखाकर, जोड़े धन की राशी।
काना की कुडक्यां तक वेटो, गांठ वांध ले आसी। मनवा।

फूलां की शैया भी चुभती, वा देह मित्र उठासी।
नीचे लकड़ा ऊपर लकड़ा, चुन चुन चिता वणासी। मनवा।

ज्यांरे मोह में हुयो दिवानो, वे या प्रीत निभासी।
प्राण प्यारो वेटो ही पहली, थांरे आग लगासी। मनवा।

फूंक दिया केई फूंक रयो है, फेर केई फुंक्यासी।
पण या भी रखजे याद एक दिन, तूं भी बठे ही जासी। मनवा।

माटी वण माटी में मिलियो, फेर वण्यो वणजासी।
जब तक है माटी सुं 'ममता', मिटे न यम की फांसी। मनवा।

काला का धोला हो गया, क्यों और करावे हांसी।
जन्म मरण का वंध वढ्या तो, जनम-जनम पछतासी। मनवा।

काल अनन्ता चक्कर खायो, फिर्‌यो लाख चौरासी !
पण अबके तो वणजा 'जीतमल', अजर अमर अविनाशी । मनवा :

(२८१)

॥ मनाऊं मैं तो श्री अरिहन्त महन्त ॥

मनाऊं मैं तो श्री अरिहन्त महन्त । टेर ।

तरु अशोक जाको अवलोकत, शोक समूह नाशन्त ।
सुर कृत वाणवरण के नभ से, अचित सुमन वरसन्त । म० । १ ।

अर्ध मागधी वाणी जांकी, योजन इक पर्यन्त ।
सुनत अमर नर पशु हिल मिल के, समझ सुबोध लहन्त । म०।२।

मुनि मन समुचित चमर अमर गण, प्रमुदित व्है ढारन्त ।
स्फटिक रत्न के सिंहासन पर, त्रिजगत पति राजन्त । म० । ३ ।

प्रभावलय तम प्रलय करन हित, दिनकर सम दमकन्त ।
पृष्ठ भाग रही प्रभुजी के सो, प्रवल प्रकाश करन्त । म० । ४ ।

गगन मांहि घन गर्जारिव सम, दुंदुभि नाद वजन्त ।
तीन छत्र शिर सोहे ताते, तूं त्रिभुवन को कन्त । म० । ५ ।

तव सुमिरे सुख सम्पत्ति पावे, सुर नर पय प्रणमन्त ।
अष्ट सिद्धि नव निधि घर प्रकटे, तेरो जो जाप जपन्त । म० । ६ ।

'माधव' मुनि कर जोड़ विनवे, विनय सुनो भगवन्त ।
ऋद्धि वृद्धि वुद्धि-वैभव देवो, अरु सुख सादि अनन्त । म० । ७ ।

(२८२)

॥ मनुष्यों क्यों मुझे जबरन ॥

(तर्ज : कभी सुख है कभी दुख है)

मनुष्यों क्यों मुझे जबरन, अपन जैसा बनाते हो ।
नमस्ते है तुम्हें तुम तो, मेरी प्रभुता घटाते हो । १ ।
पिता हूं विश्व का फिर भी, समझते बाल नन्हा सा ।
लिटा कर पालकी में लोरियां, दे दे सुलाते हो ।२।

नहीं लगती मुझे सर्दी, नहीं लगती मुझे गर्मी ।
उड़ाते क्यों दुशाले और, पंखे क्यों ढुलाते हो । ३ ।

स्वयं मैं शुद्ध निर्मल हूं, तथा औरों को करता हूं ।
समझ का फेर है प्रति दिन, किसे मल मल नहलाते हो । ४ ।

भला मुझ निर्विकारी का, विवाह क्या रंग लायेगा ।
बिछा कर पुष्प शैया प्रेम, से किसको सुलाते हो । ५ ।

नहीं मैं हूं तुम्हारे मिष्ट, मोहन भोग का भूखा ।
वृथा ही नाम ले मेरा, स्वयं मौजें उड़ाते हो । ६ ।

दया करके मुझे नीचे, गिराना छोड़ दो भक्तों ।
'अमर' मम तुल्य बनकर क्यों न मेरे पास आते हो ।७।

(२८३)

। मनोरथ तीन उत्तम ।

(तर्ज : कभी सुख है कभी दुख है)

मनोरथ तीन उत्तम ये, जिनेश्वर ! नित्य भाता हूं,

कृपा की आश रखता हूं, सफल हो शीघ्र चाहता हूँ ।टेर।

परिग्रह पाप का दल दल, फँसा हूँ फँसता जाता हूं
घटे थोड़ा बहुत प्रति दिन, बड़ा ही कष्ट पाता हूँ । १ ।

प्रमादी गृहस्थ जीवन है, अधूरी धर्म करणी है,
बनूंगा कब मुनि मुझमें, हो ऐसी शक्ति चाहता हूं । २ ।

मोक्ष की है लगन पूरी, न कोई अन्य आशा है,
देह छूटे समाधि से, अन्त शुभभाव चाहता हूँ । ३ ।

दीन हूं दीनता करता, देवता ! दान तूं करना,
मनोरथ पूर्ण सब करना, चरण तेरे पकड़ता हूँ ।४।

कहे 'पारस' सुनो केवल, विरुद अपना निभाना तुम,
कहूं अब और आगे क्या ? न खोजे शब्द पाता हूं । ५ ।

(२८४)

। महावीर के हम सिपाही बनेंगे ।

(तर्ज : इधर भी नजर हो जरा वैसी)

महावीर के हम सिपाही बनेंगे ।
जो रक्खा कदम, न वो पीछे धरेंगे । टेर ।

सिखा देंगे दुनिया को, शांती से रहना ।
अहिंसा की बिजली, नसों में भरेंगे । १ ।

लगावेंगे मरहम, जो होवेंगे जखमी ।
सुखी करके जग को, स्वयं दुःख सहेंगे । २ ।

(२८६)

कहीं जुल्म दुनियां में, रहने न देंगे।
अगर सर कटेगा, खुशी से मरेंगे। ३।
न घुड़ दौड़ में जग, के पीछे रहेंगे।
कसेंगे कमर, और आगे बढ़ेंगे। ४।

अहिंसा के सेवक हैं, हम वीर सच्चे।
धर्म युद्ध में हम, खुशी से लड़ेंगे। ५।

हमैं राम सुख दुःख की, परवाह नहीं है।
अहिंसा का झण्डा, फहरा के रहेंगे। ६।

(२८५)

। महावीर स्वामी नैया, मेरी पार ।

(तर्ज : अटरियां पे गिरधारी कबूतर आधी रात........)

महावीर स्वामी नैया लगादो मेरी पार।
वर्द्धमान स्वामी नैया लगादो मेरी पार। टेर।

यह भव जल अथाग भर्यो है।
सिर्फ आप तणो आधार, हो महावीर। १।

कुटुम्ब कबीलो मतलब को गरजी।
बिन मतलब नहीं पूछे सार, हो महावीर। २।

जो प्राणी जग जाल में फंसियो।
वह खावेगा यम की मार, हो महावीर०। ३।

तन धन यौवन विद्युत सा झलको ।
जाता न लागे वार, हो महावीर ।४।

इम जानी तुम शरण गृहूं छूं ।
प्रभुजी है तारण हार, हो महावीर ।५।

आश लगी को पूरण करिये ।
या जन्म मरण निवार, हो महावीर० ।६।

मुनि 'चौथमल' की अर्ज सुनीजो ।
त्रिशला रानी के कुमार, हो महावीर० ।७।

(२८६)

। मां वाप का छोड़ दुलार ।

(तर्ज : जव तुम्हीं चले परदेश ......)

मां वाप का छोड़ दुलार, भाई का प्यार ।
लाडली जाओ, अपना घर स्वर्ग बनाओ । टेर ।

जी दुखता, आता रोना है, घर से जा रहा खिलौना है ।
मेरी विटिया मत रोओ, चुप हो जाओ । १ ।

कन्या पर धन कहलाती है, ससुराल एक दिन जाती है ।
आनन्द निकेतन की, कोकिल वन जाओ । २ ।

जितनी ही दूर स्वजन जाता, स्नेह सूत्र भी उतना वढ़ जाता ।
रानी वेटी पिहर की, याद भुलाओ । ३ ।

सवसे अच्छा व्यवहार रहे, सम्मान रहे सत्कार रहे ।
जो शिक्षा देवे प्रेम से, शीश चढ़ाओ । ४ ।

(२८८)

प्रतिदिन नवकार मंत्र पढ़ना, इस पे ही दृढ़ निश्चय रहना।
प्रभु भजन किये विन, कभी न भोजन खाओ। ५।

मत करना अपनी मनमानी, वन कर रहना घर की रानी।
पति सेवा में सीता, मैना वन जाओ। ६।

सखियों से नणद जेठानी से, सासु या देवरानी से।
मत करो लड़ाई चुगली, कभी न खाओ। ७।

जाति का मान वढ़ाकर के, स्वदेश की आन वचा करके।
भारत माता की वीर, पुत्री कहलाओ। ८।

नन्दन सोहाग का खिला रहे, चन्दा से मंगल मिला रहे।
'केवल मुनि' फूलो फलो, शान्ति सुख पाओ। ९

(२८७)

। मान करना नहीं ।

(तर्ज : छोड़ वावुल का घर)

स्वप्न संसार है, जाना दिन चार है।
मान करना नहीं २। ध्रुव।

फूल फूला कि भंवरे भी, आने लगे।
लूटने के लिए, गीत गाने लगे।
फूल था भूल में, मिल गया धूल में।मान। १।

रूप यौवन को संध्या में, लुट जायगा,
और यौवन नशा है, उतर जायगा।

इनमें मतवाला न बन, मेरे भोले सजन । मान । २।

आज शादी करी, कल को तलाक दी ।

लक्ष्मी तितली सी है, यह नहीं एक की ।

कहां चक्री का धन, कहां चवदे रतन । मान । ३ ।

सर सराता फव्वारे का, जल जो चढ़ा,

मैंने देखा कि वो, सर के बल गिर पड़ा ।

नेचर देती है दण्ड, रहा किसका घमण्ड । मान । ४ ।

धर्म करणी किए बिन, पछताओगे,

अच्छे काम करोगे तो, सुख पाओगे ।

कहता 'केवल मुनि' शिक्षा मानो गुणी । मान । ५ ।

(२८८)

। मानव मानव एक समान ।

(तर्ज : कितना बदल गया इन्सान)

मानवता की भव्य भूमि से, बोल गये भगवान ।

मानव-मानव एक समान ।

यहीं शांति का राज मार्ग है, महावीर फरमान । ध्रुव ।

विषम वर्ग की आग बुझाना, अब न ज्यादा लोभ बढ़ाना ।

गिरा पड़ौसी दौड़ उठाना, पढ़ना समता पाठ पढ़ाना ।

तभी विश्व प्रेम के होंगे, सफल सभी अरमान । १ ।

सूरज सवके घर पर जाता, पानी सवकी प्यास वुझाता ।
पवन जगत के प्राण वचाता, धरती तो है सबकी माता ।
इस पै कोई अधिकार जताये, कैसा है अज्ञान । २ ।

भूखा पेट और फटी लंगोटी, मांगे तुमसे कपड़ा रोटी ।
वोलो कितनी मांग है छोटी, आज तुम्हारी खरी कसौटी ।
दुखियारों का करुणा क्रन्दन, गाता क्रांति का गान । ३ ।

अव तो उल्टी हवा वहेगी, दुःखी आत्मा शाप कहेगी ।
भूखी जनता अव न सहेगी, धन और धरती वंट के रहेगी ।
खून की नदियां रोकना हो तो, दे दे झट पट दान । ४ ।

धरती किसकी वनी रही है ? किसी एक की वनी नहीं है ।
माया वादल छाया कहीं है, वोलो किसके साथ गयी है ।
धन धरती का गर्व ना करना, ये तो हैं मेहमान । ५ ।

प्राणी मात्र से प्रेम वढ़ाओ, मानवता के फूल खिलाओ ।
अपनी अच्छी याद वसाओ, सुख चाहो तो सुख पहुंचाओ ।
'अशोक मुनि' मानव जीवन से करो परम उत्थान । ६ ।

(२८९)

। मान मत करजो ।

मान मत करजो रे २ श्री वीर प्रभु शास्तर में वरज्यो रे ।
तन को मान घणो मन मां ही, नव नव नखरा करतो रे ।
काल वली से जोर न चाले, घणो अकड़तो रे । १ ।

जो नर धन को मान कियो वह, धन खोई ने बैठो रे।
आरम्भ कर कर कर्म बांध, वह नर्क में पैठो रे। २।

जीवन में रंग रातो मातो, ऊँचो रखतो आंखिया रे।
वृद्ध भयो तब परवश पड़ियो, उड़े न माखियां रे। ३।

विद्या बहुत पढ़्यो मन चाही, बुद्धि को विस्तारो रे।
दया धर्म विन कर्या गयो, यों ही, हार जमारो रे। ४।

तीन पांच मद में सुद भूल्यो, सत्संग से दूरो रे।
मातंग कुल में जन्म ले ही, हो गयो भड सुरो रे। ५।

नीठ नीठ मानव भव पायो, निर अभिमानी रहिजो रे।
कहे 'मुनि नन्दलाल' तणा शिष्य, शिवपुर लीजो रे। ६।

(२९०)

। मानो सत गुरु की तुम सीख ।

कक्का कर अरिहंत को ध्यान, ख खा मोटा तज अभिमान।
गं गा गुरु अपना पहिचान,
घघ्घा घट अन्तर में जोय, के आखिर जावणा रे।
मानो सद्गुरु की तुम सीख, हिये में धारणा रे।
सुणिये नित्य ऊठ आप वखाण, मोक्ष पद पावणा रे। मानो। १।

च च्चा चेतो रे भव प्राणी, छ छ् छा छोड़ो मत जिनवाणी
ज ज् जा जैन की आ ही निशाणी।
झ झा झूठ कबहु मत बोल, चाहे दुख पावणा रे। मानो। २।

फंस जाता वह व्याघ्र जाल में, चर्म उधेड़ा जाता है।
तुझको प्रिय संगीत है कितना, कर चिन्तन देवाणुपिया

जो ज्योति के स्वर्ण दृश्य में, मुग्ध पतंगा होता है।
जल जाता वह अग्नि चिता में, तड़फ तड़फ कर मरता है
तुझको प्रिय नाटक है कितना, कर मन्थन देवाणुपिया

जो केतकी की सुरभि गंध में, मुग्ध सर्प हो जाता है।
पीटा जाता लठ पत्थर से, बुरी तरह मर जाता है।
तुझको प्रिय तैलादिक कितने, करो ध्यान देवाणुपिया।

जो पाकर एक मांस खण्ड को, मच्छ मुग्ध हो जाता है।
छिद जाता वह तीक्षण शस्त्र से, फिर चूल्हे पर पकता है।
तुझको प्रिय भोजन है कितना, करो मनन देवाणुपिया

जो पानी के शीत स्पर्श में, मोहित भैंसा होता है।
खिच जाता वह मगर आंत से, दाढ़ बीच में आता है।
तुझको प्रिय प्रासाद है कितना, कर विचार देवाणुपिया

जो हथिनी के काम भोग में, मोहित हाथी होता है।
गिर जाता गहरे गड्ढे में, साकल में बंध जाता है।
तुझको प्रिय नारी है कितनी, पूर्ण सोच देवाणुपिया।

एक-एक विषय गृद्धि का, भी जब यह फल होता है।
जो सब में आसक्त बना वह, कितना कटु फल पाता है।
केवल कहते 'पारस' सुनरे, हो विरक्त देवाणुपिया।

पालो शील को आचार, छती जोग वाई।
यो अष्ट महा भय मिटे, शील सुखदाया। २।

जो करे तपस्या, जोर जबर लगावे।
करे कर्म को चूर, मोक्ष में जावे।

कोई वेला तेला, मास खमण जो ठावे।
सब बारा भेद के मांहि, गणित गिणावे।

दोहा—गौतम नामा अणगार, घन धन्नो अणगार।
चाल्यो सूत्र में अविकार, भाँत भाँत करी।

पाले श्रावक आचार, पडिमा इग्यारह का धार।
गुणवता नर नार, हो थें हरस धरी।
कई रिद्ध सिद्ध, तपस्या से लब्धि पाया। ३।

जो भावे भावना चित्त, मन शुद्ध लाई।
भावां से सिद्धि होवे, वस्तु के मांही।

भावां से करणी करे तो, वो फल पावे।
विन भाव से करिया, कष्ट वृथा ही जावे।

दोहा—भावे भरत महाराज, सारा आतम का काज।
मरू देवी गजराज, चढ़ी मोक्ष गयी।

ऐला पुत्र अणगार, प्रसन्न चन्द्र खेवा पार।
भावा हुआ जै जैकार, अटल सुख लिया।
हीरालाल कहे, ऐसी बात सुणो रे भाया। ४।

(२९३)

॥ मुझ म्हेर करो चन्द्र प्रभु ॥

(तर्ज : चौकनी देशी....)

जय जय जगत शिरोमणी, हूं सेवक नें तूं धणी।
अब तोसूं गाढी बणी, प्रभु आशा पूरो हम तणी।

मुझ म्हेर करो, चन्द्र प्रभु जग जीवन अन्तर्यामी। टेर।
भव दुःख हरो, सुणिये अरज हमारी हो त्रिभुवन स्वामी। १।

"चन्द्रपुरी" नगरी हती, "महासेन" नामा नरपति।
राणी 'श्रीलखमा' सती, तस नन्दन तूं चढ़ती रती। २।

तूं सर्वज्ञ महाज्ञाता, आतम अनुभव को दाता।
तो तूंठा लहिये साता, धन्य धन्य ते जग में तुम ध्याता। ३।

शिव सुख प्रार्थना करसूं, उज्जवल ध्यान हिये धरसूं।
रसना तुम महिमा करसूं, प्रभु इन विध भव सागर तिरसूं।४।

चन्द्र चकोरन के मन में, गाज आवाज होवे घन में।
प्रिय अभिलाषा त्रियतन में, त्यूं वसियो मोरे चितवन में। ५।

जो सुनजर साहिब तेरी, तो मानो विनती मेरी।
काटो करम भरम बेरी, प्रभु पुनरपि नहि परुं भव भेरी। ६।

आत्म-ज्ञान दशा जागी, प्रभु तुम सेती लिव लागी।
अन्य देव भ्रमना भागी, 'विनयचन्द' तिहारो अनुरागी। ७।

मुसाफिर क्यों पड़ा सोया, भरोसा है न इक पल का।
दमादम बज रहा डंका, तमाशा है चलाचल का। टेर।

सुवह जो तख्तशाही पर, वड़े सज धज के बैठे थे।
दुपहरे वक्त में उनका, हुआ है वास जंगल का। मु०। १।

कहां राम और लक्ष्मण, कहां रावण से वलधारी।
कहां है हनुमान से योद्धा, पता जिनके न था वल का। मु०।२।
उन्हों को काल ने खाया, तुझे भी काल खायेगा।
सफर सामान वढ़ाना तूं, वना ले वोझ को हलका। मु०।३।

जरा सी जिन्दगी पर तूं, न इतना मान कर मूरख।
यह जीवन चन्द दिन का है, कि जैसे बुदवुदा जल का। मु०।४।

नसीहत मानले 'ज्योति', उमर पल पल में कम होती।
जो करना आज है करले, भरोसा कुछ न कर कल का। मु० ५।

(२९६)

॥ मेटो मेटो जी संकट हमारा ॥

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पार्श्व प्यारा, मेटो-मेटो जी संकट हमारा॥

निश दिन तुमको जपूं, पर स्नेह तजूं।
जीवन सारा, तेरे चरणों में, वीते हमारा। १।

अश्वसेनजी के हो दुलारे, वामा देवीजी के सुत प्यारे।
सवसे नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा, संयम धारा। २।

(२९९)

भाग दौड़ मच गई, कतारें लग गई, वैद्यों ने आ उपचार किया।
कोई अंग दवाते दिन रात हैं,

कोई देवों को जोड़ते हाथ है। मेरी। ३।

वन भी वरा रहा, घर भी भरा रहा, मिटा सका नहीं रोग कोई।
हाजिर हजार थे, पर सव वेकार थे, दूर खड़ा रहा आया जोही।
हुई चला चली की अव वात है,

छोड़ी आशा सभी ने एक साथ है। मेरी। ४।

इतने ही में एक भावना जागी, प्रभु को मैंने याद किया,
रोग निवारदे, विगड़ी संवार दे, साथ में प्रण भी यह धार लिया।
सव छोड़ूंगा जग का साथ है,

अव तूं ही प्रभु मम नाथ है। मेरी। ५।

विजली सी चमकी, रोग पै दमकी, वेदना सारी भाग गई।
उसी क्षण छोड़ा, जगनेह तोड़ा, आत्मा मेरी जाग गई।
जरा समझ भेद भरी वात हैं,

वोल कोन अनाथ सनाथ है। मेरी। ६।

ज्ञान ज्योति जागी श्रेणिक सौभागी, समकित व्रत आराधलिया,
जीवों की दया धर, धर्म दलाली कर, गोत्र तीर्थंकर वांध लिया।
मिले अनाथी जैसे गुरुनाथ हैं,

'जीत' जागना तेरे हाथ है। मेरी। ७।

(२९७)

। मेरे भैया की कहानी सुना दो मुझे ।

(तर्ज : प्यारे प्रभु का ध्यान लगा तो सही)

मेरे भैया की कहानी सुना दो मुझे ।
कर जोड़ कहूं जिनराज तुझे । टेर ।

सुन्दर सुकोमल सुज्ञ मेरा, प्राण प्यारा था वही ।
इस जीव के वह जीव था, इस प्राण के प्यारा वही ।
प्रभु उनका तो, जिक्र सुनादो मुझे । १ ।

उस दुष्ट ने मुनिराज का, अहो खून प्रभुजी क्यों किया ।
अपराध विन पापिष्ट ने, प्राण मुनि का हर लिया ।
उनका कुछ तो इशारा, बतादो मुझे । २ ।

दिल हमारा ना लगे, प्रभु अर्ज यह सुन लोजिये ।
कर कृपा उस दुष्ट का, अब नाम जाहिर कीजिये ।
स्वामी जरा इशारा, जतादो मुझे । ३ ।

(२९९)

। भगवान् नेमीनाथ का उत्तर ।

प्रभु फ़रमावे रे, श्री कृष्णचन्द्र का भरम मिटावे रे ।
द्वारामती को वासी राजा, हैं अवगुण को दरियो रे ।
नीच नीच से नहीं करे कृत्य, जैसो करियो रे । १ ।

(३०२)

यहां से तू घर जासी केशव, मारग में मिल जासी रे।
देख तुझे नीचे गिर जासी, वहीं मर जासी रे।
उसे जानजे अरि हमारा, ऐसी प्रभु प्रकाशी रे। २।

(३००)

। मेरे मालिक की दुकान में।

मेरे मालिक की दुकान में, सब लोगों का खाता।
मेरे साहिब के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जैसा जिसके भाग्य में होता, वो वैसा ही पाता रे।
दुनियाँ वालो कलियुग वालो; सुनो रे पते की मैं।
एक बात बताता रे। मेरे मालिक।

नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
उसके अपने लेन देन की, रीति बड़ी बांकी है रे,
भाई प्रीति बड़ी है बांकी।
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता रे। १।

क्या साधो क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी रे।
भैया सबकी कर्म कहानी।
वही तो सबके जमा खर्च का. सही तो हिसाब लगाता रे।२।

करता इन्साफ सभी का, हर आसन पर डट के।
उसका फैसला कभी न टलता, लाख कोई सर पटके रे।

भैया लाख कोई सर पटके।
पुण्य का बेड़ा पार करे वो, पाप की नाव डुबोता रे। ३ ।

अच्छी करणी करियो रे लाला, कर्म न करियो काला।
तुझे देख रहा लाल आँख से, तुझे देखने वाला रे।
भैया तुझे देखने वाला रे।
अच्छी खेती करो रे 'चतुर वन' समय गुजरता जाता रे।४।

(३०१)

। मेरे गुरुवर जी ।

मैंने लीना धार, मेरे गुरुवर जी ।
हां मेरे प्राण आधार, मेरे गुरुवर जी। टेर।
पांच महाव्रत पालन करते, पांच समिति धारण करते।
श्वेत वस्त्र के धार, मेरे गुरुवरजी ...। १ ।
मुख पर जो मुँहपत्ति बांधे, खुले मुख से कभी न बोले।
बोल बोल विचार, मेरे गुरुवर जी........। २ ।
नीचे देखी दिन में चाले, पूंज पूंजकर रात में चाले।
करे न रात विहार, मेरे गुरुवर जी........। ३ ।
अपना बोझ आप उठावे, गृहस्थों से काम नहीं करावे।
पाले दृढ़ आचार, मेरे गुरुवर जी .. ...। ४ ।
साधु निमित्त किया नहीं लेते, धोवण पानी लेते रहते।
लेते शुद्ध आहार, मेरे गुरुवर जी.. ....। ५ ।

जड़ पूजा को कभी न मानो, गुण पूजा को उत्तम जानो।
कहते बात विचार, मेरे गुरुवर जी ...... । ६ ।

नहीं किसी की हिंसा करना, प्राणि मात्र की रक्षा करना।
शिक्षा दे हितकार, मेरे गुरुवर जी........। ७ ।

छः कायों की रक्षा करते, 'दया पालो' हर दम कहते।
सच्चे श्री अणगार, मेरे गुरुवर जी........। ८ ।

(३०२)

। मेरे अन्तर भया प्रकाश ।

(तर्ज : दोरो जैन धरम को मारग... ...)

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश। टेर।

काल अनन्त रुला भव वन में, बंधा मोह के पाश।
काम, क्रोध, मद, लोभ भाव से, बना जगत का दास। मेरे। १ ।

तन धन परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश।
पुद्गल को अपना कर मैंने, किया स्वत्व का नाश। मेरे। २ ।

रोग शोक नहीं मुझको देते, जरा मात्र भी त्रास।
सदा शांतिमय मैं हूं मेरा, अचल रूप है खास। मेरे। ३ ।

इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास।
अस्थि-मांस मम अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास। मेरे। ४ ।

ममता ने संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश। मेरे। ५ ।

(३०५)

मोह मिथ्यात्व की गांठ गले तब, होवे ज्ञान प्रकाश।
'गजेन्द्र' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश। मेरे। ६।

(३०३)

। मैं हूं उस नगरी का भूप ।

(तर्ज : दोरो जैन धरम को मारग)

मैं हूं उस नगरी का भूप, जहां नहीं होती छाया धूप । टेर।

तारामंडल की न गति है, जहां न पहुंचे सूर।
जगमग ज्योति सदा जगती है, दीसे यह जग कूप। मैं। १।

मैं नहीं श्याम-गौर वर्णी हूं, मैं न सुरूप कुरूप।
नहिं लम्बा-बौना भी मैं हूं, मेरा अविचल रूप। मैं। २।

अस्थि मांस मज्जा नहीं मेरे, मैं नहीं धातु रूप।
हाथ, पैर, शिर आदि अंग में, मेरा नहीं स्वरूप। मैं। ३।

दृश्य जगत पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप।
पूरण गलन स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप। मैं। ४।

श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप।
निराबाध सुख में झूलूं मैं, सद् चिद् आनन्द रूप। मैं। ५।

शक्ति का भण्डार भरा है, अमल अचल मम रूप।
मेरी शक्ति के सन्मुख नहीं, देख सके अरि भूप। मैं। ६।

मैं न किसी से दबने वाला, रोग न मेरा रूप।
'गजेन्द्र' निज पद को पहचाने, सो भूपों का भूप। मैं। ७।

(३०६)

। मैंने बहुत किए अपराध ।

मैंने बहुत किए अपराध, नाथ मोहे कैसे तारोगे।
कैसे तारोगे जिनन्द मोहे कैसे तारोगे । मैं ने । टेर।

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन ।
सुमति पदम सुपास ।
चन्दा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर ।
शीतल दो शिववास । मैंने । १ ।

श्री श्रेयांस वासुपूज्य शिवरू ।
विमल विमल मति वन्त ।
अनन्त नाथ जी ने धर्म जिनेश्वर ।
शान्ति करो श्री सन्त । मैंने । २ ।

कुंथु नाथ प्रभु करुणा सागर ।
अर नाथ जगदीश ।
मल्लि नाथ जी ने मुनिसुव्रत जी ।
नित्य नमाऊं शीघ्र । मैंने । ३ ।

इकवीसवां नमिनाथ निरूपम ।
रिष्ट नेमी जगधार ।
तोरण से प्रभु पाछा फिरिया !
शिव रमणी भरतार । मैंनें । ४ ।

(३०८)

पारस पारस सरिखा प्रभुजी।

लावारिस के नाथ।

वर्धमान शासन के स्वामी।

प्रणमूं जोड़ी हाथ। मैंने। ५।

तुम विन पायो दुःख अनन्तो।

जनम मरण जंजाल।

त्रिलोक ऋषि कहे जिम तिम करी ने।

तारो दीन दयाल। मैंने। ६।

(३०६)

। मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूं।

मैं हूं अपने में स्वयं पूर्ण, पर की मुझमें कुछ गन्ध नहीं।
मैं अरस, अरूपी, अस्पर्शी, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं। १
मैं रंग राग से भिन्न भेद से, मैं भी मित्र निराला हूं।
मैं हूं अखण्ड चैतन्य पीण्ड, निज रस में रमने वाला हूं। २
मैं ही मेरा कर्त्ता धर्त्ता, मुझ में पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझ में रहने वाला हूं, पर में मेरा विश्वास नहीं। ३
मैं शुद्ध वुद्ध अविरुद्ध एक, पर परणति से अप्रभावी हूं।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्व, मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूं। ४

(३०७)

॥ मोहे धर्म का रंग लगादे कोई ॥

मोहे धर्म का रंग लगादे कोई । टेर ।

भव भव मांहि भटकत आया, नरभव सफल बनादे कोई । १ ।

प्यासा पड़ा हूं कई भवों का, ज्ञान का घूंट पिलादे कोई । २ ।

कैदी बना हूं कर्म कैद का, झटपट आके छुड़ादे कोई । ३ ।

आत्म ज्ञान को भूला हुआ हूं, आत्मा का भान करादे कोई ।४।

अवगुण मेरे सारे मिटा कर, मिश्री सा मीठा बनादे कोई ।५।

(३०८)

॥ यदि भला किसी का कर न सको ॥

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

यदि भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना ।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना । ध्रुव ।

यदि सत्य मधुर न बोल सको तो, झूठ कठिन भी मत बोलो ।
यदि मौन रखो सब से अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो ।
बोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख ताला खोला करना । १ ।

यदि घर न किसी का बांध सको तो, झोंपड़ियां न जला देना ।
यदि मरहम पट्टी कर न सको तो, नमक भी तो न लगा देना ।
यदि दीपक बन कर जल न सको तो, अन्धकार भी मत बनना ।२।

(३१०)

यदि साधु व्रत नहीं ले सकते तो, श्रावक व्रत तो ले लेना।
त्याग-वैराग्य में रत बन के, अव्रत का अघ तो धो देना।
जगत मोहिनी अहि सम भीषण, इससे नित डरते रहना। ३।

यदि फूल नहीं बन सकते तो, कांटे बन कर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का दुखाना ना।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बन कर भी मत मरना। ४।

'मुनि पुष्प' अगर भगवान् नहीं तो, कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो।
यदि सदाचार अपना न सको तो, पापों में पग मत धरना। ५।

(३०९)

॥ यहां के महल और मन्दिर ॥

यहां के महल और मन्दिर, न बिस्तर काम आयेंगे।
ए मिस्टर ये मदर तेरी, न फादर काम आयेंगे। १।

नहीं वहां काम आयेंगे, तेरे बंगले ये फुलवारी।
नहीं वहां हीरा और मोती, जवाहिर काम आयेंगे। २।

हजारों दोस्त हैं तो क्या, यहीं तक की मोहब्बत है।
मिनिस्टर सारे भारत के, तेरे नहीं काम आयेंगे। ३।

वहां परलोक में नहीं काम, आते जज बैरिस्टर।
कजा के सामने देखो, न लीडर काम आयेंगे। ४।

आपको जानते सब हैं, मुलाकातें बहुत गहरी।
सुपारस के वहां लेटर न, उनके काम आयेंगे। ५।

सवारी बैठने की भी, वहां कुछ और ही होगी।
जहाजें रेल या साईकिल, न मोटर काम आयेगी। ६।

(३१०)

।। यदि आत्मोन्नति अभिलाषा हो तो ।।

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

यति आत्मोन्नत्ति अभिलाषा हो तो, सामायिक आराधन हो। टेर।

यदि देह बढ़े, परिवार बढ़े, धन धान्य बढ़े, सुख भोग बढ़े।
इन से संसारोन्नति होती पर, आत्मा का उत्थान न हो। १।

संसार स्वर्ग सा देख चुके, साक्षात स्वर्ग भी भोग चुके।
अब अमर मोक्ष सुख पाना हो तो, धर्म प्रति आकर्षण हो। २।

सब लोक में धर्म ही ऐसा है, जो आत्मोन्नति कर सकता है।
यदि साधु धर्म सामर्थ्य नहीं तो, गृहस्थ धर्म अनुपालन हो। ३।

श्रावक के कुल बारह व्रत हैं, जिसमें सामायिक नववां है।
यदि पूरे बारह बन न सके तो, नववां व्रत ही धारण हो। ४।

हिंसा असत्य चोरी मैथुन, और परिग्रह ये दुर्गति कारण।
यदि जीवन भर छोड़ न पाओ तो, एक मुहुर्त निवारण हो। ५।

हिंसादिक पाप अठारह हैं, सावद्य योग कहलाते हैं।
सावद्य योग तज संवर धर, शुभ योगों का संचालन हो। ६।

पाप न करना न कराना है, मन वचन काया शुद्ध रखना है।
जो करें न उनका वचनों से या, काया से अनुमोदन हो। ७।

प्रातः संध्या सामायिक हो, व्याख्यान में भी सामायिक हो।
कम से कम एक मुहुर्त समय का, नियम सदा ही धारण हो।७।

सद् ज्ञान बढ़े श्रद्धान बढ़े, चारित्र बढ़े तप वीर्य बढ़े।
स्वाध्याय प्रमुख तव ऐसी करो, जिससे सामायिक पावन हो।८।

सामायिक सबका भय हरती, सबके प्रति अनुकम्पा भरती।
उनतीस शेष घड़ियों में भी, अति तीव्र भाव से पाप न हो। ९।

वे धन्य धन्य मुनि महासती हैं, जो यावज्जीवन दीक्षित हैं।
यदि आजीवन दीक्षा न बने तो, एक घड़ी साधुपन हो। १०।

केवल कहते 'पारस' सुन रे, सब में सामायिक रस भर रे।
जिससे सब गुण की रक्षक इस, सामायिक का संरक्षण हो।११।

(३११)

। यह नर तन पाया मुश्किल से ।

मानव भव

(तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

यह नरतन पाया मुश्किल से, फोगट में नहीं गवाना है।
कुछ खर्ची धर्म की लेकर ही, होना फिर तुझे रवाना है।यह ...।

अणगार धर्म अपना न सको तो, श्रावक बनकर तुम रहना।
संसारी माया कीचड़ में, नहीं फसे हुए नहाना है। यह ...।

कीचड़ में देखो जनम लिया, निर्लेप कमल जो रहता है।
जब तक तू बन्दे दुनियां में, जीवन को त्यागी बनाना है। यह ...

रागद्वेष आतम शत्रु, भव भव में ये भटकाते हैं।
जप तप ये हमारा नष्ट करें, इस पर भी ध्यान लगाना है....

पुण्य करो तो स्वर्ग मिले, और धर्म करो तो कर्म टले।
इस धर्म शस्त्र के साधन से, ये कर्म शत्रु हटाना है...

'दुल्लहे खलु माणुसे भवे' महावीर प्रभु की वाणी है।
क्षणमात्र नहीं प्रमाद करो, 'भंवर' भव सफल बनाना है...

(३१२)

। यह मीठा प्रेम का प्याला ।

(तर्ज : पंजाबी हूण नाम जपन दो बेला)

यह मीठा प्रेम का प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।
यह सतसंग वाला प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला। टेर।

प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला।
प्रेम की फेरो माला, कोई फेरेगा किस्मत वाला।१।

प्रेम बिना प्रभु भी नहीं मिलते, मनके कष्ट कभी नहीं टलते।
प्रेम करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला।२।

प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म मरण का दुःख मिटावे।
कटे कर्म जंजाला, कोई काटेगा किस्मत वाला।३।

प्रेमी सबके कष्ट मिटावे, लाखों से दुराचार छुड़ावे।
प्रेम में हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला।४।

(३१४)

सारे जग में जगाई ज्योति ज्ञान की,

ये कहानी भगवान महावीर की। टेर।

चैत सुदी तेरस आई, क्षत्रिय कुल में खुशियां छाई,

वहां जन्म लिया रे प्रभु वीर ने। ये कहानी०। १।

सिद्धार्थ के दुलारे, माता त्रिशला के प्यारे।

वर्द्धमान धराके वीर नाम का। २।

देव देवियां सब आई, मेरु शिखर पे जाई।

करी नवन पूजा रे भगवान की। ३।

फिर ऐसी घड़ी आई, मन से ममता भुलाई।

वे तो तोड़ दिया रे मोहा जाल को। ४।

सोये जग को जगाने, हिंसा पाप को मिटाने।

वे तो छोड़ दिया रे घर बार को। ५।

वन वन में फिरे, दया भाव धरे।

इन्हें ज्योति तो जगानी धर्म ध्यान की। ६।

ग्वाल बाल तंग कर, खीले ठोके कानों पर।

इन्हें खूब सताया जी जान से। ७।

सर्प चण्ड कोशिया ने, डस लिया आ जोश में।

पाया पाया रे अमृत, धैर्यवान से। ८।

सुनी चन्दना पुकार, किया आपने उद्धार।

उनपे कृपा तो भई रे, भगवान की। ९।

जग में पाप छाया घोर, हिंसा छाई चारों ओर।
यज्ञ वेदी का ढोंग रचा रहा। १०।

भूले धर्म की वाणी, हो रही थी मन मानी।
बलि वेदी पर पशु काटे जा रहे। ११।

ऐसे समय को जान, दया करी प्रभु आन।
वे तो प्रथा रे हटाई, बलिदान की। १२।

बारह वर्ष घूम घूम, घोर तप किया खूब।
सारे कर्म खपाये, प्रभु वीर ने। १३।

था वैसाख का महिना, दिन सुद दसमी का।
केवल ज्ञान पाया रे वर्द्धमान ने। १४।

देव दुंदुभी बजी, सबके मन में खुशी।
तीन लोक की प्रभु ने पहिचान की। १५।

अन्त आया जान कर, गौतम गणधर से कह कर।
प्रतिबोध करायो, महावीर ने। १६।

था कार्तिक महीना, दिन अमावसिया का।
निर्वाण पायो रे प्रभु वीर ने। १७।

(३१५)

॥ ये चार बोला रे जीव जावे नरक में ॥

आरम्भ करतो रे जीव शंके नहीं, मेले तृष्णा अपारोजी।
घात पंचेन्द्री जीव री, करे मद मांस नो आहारोजी॥

माया कपटी रे गूढ़ माया करे, वलि वोले मृषावादो रे।
कूड़ा तोल कूड़ा माप करे, ले तिर्यन्च अवतारो रे। २।

भद्रिक परिणामी सरल स्वभावी, विनय तणां गुण भारी।
दया रे भाव दिल मांहे घणी, मत्सर नहीं घट मायो रे। ३।

सराग संजम वलि श्रावक पणों, श्रावक ना व्रत वारोजी।
अज्ञान तपस्या रे अकाम निर्जरा, जीव जावे देव मुझारोजी।४।

ज्ञान सूं जाणे रे जीव अजीव ने, दरसण समकित वारोजी।
चरित्र रोके रे नवां करम आवतां, तप से जूना कट जावेजी।५।

(३१६)

॥ ये पर्व पर्यूषण आया ॥

(तर्ज : वीरा रमक झमक हुई आइजो)

ये पर्व पर्यूषण आया, सब जग में आनन्द छाया रे। टेर।

यह विषय कषाय घटाने, यह आतम गुण विकसाने।
जिनवाणी का बल लाया रे। ये पर्व। १।

यह जीव रुले चहुँ गति में, यह पाप करण की रति में।
निज गुण सम्पद को खोया रे। ये पर्व०।२।

तुम छोड़ प्रमाद मनाओ, नित धर्म ध्यान रम जाओ।
लो भव-भव दुःख मिटाया रे। ये पर्व०। ३।

(३१८)

क्रोधाग्नि से मैं रात दिन हा ! जल रहा हूं हे प्रभो !
मैं लोभ नामक सांप से, काटा गया हूं हे प्रभो !
अभिमान के खल ग्राह से, अज्ञान वश मैं ग्रस्त हूं ।
किस भांति हो स्मृत आप, माया जाल से मैं व्यस्त हूं । ५ ।

लोकेश ! पर-हित भी किया, मैंने न दोनों लोक में,
सुख-लेश भी फिर क्यों मुझे हो, झींकता हूं शोक में ।
जग में हमारे से नरों का, जन्म ही सब व्यर्थ है,
मानो जिनेश्वर ! यह, जगत की पूर्णता के अर्थ हैं । ६ ।

प्रभु ! आपने निज मुख सुधा का, दान यद्यपि दे दिया ।
यह ठीक है पर चित्त ने, उसका न कुछ भी फल लिया,
आनन्द रस में डूब कर, सद् वृत्त वह होता नहीं,
है वज्र- सा मेरा हृदय कारण पड़ा है बस यही । ७ ।

रत्नत्रयी दुष्प्राप्य है, प्रभु से उसे मैंने लिया,
बहु काल तक बहु बार जब, जग का भ्रमण मैंने किया ।
हां ! खो गया वह भी विवश, मैं नींद आलस के रहा,
अब बोलिए उसके लिए, रोऊं प्रभो ! किसके यहां ? । ८ ।

संसार ठगने के लिए, वैराग्य को धारण किया,
जग को हंसाने के लिए, उपदेश धर्मों का दिया ।
झगड़ा मचाने के लिए, मम जीभ पर विद्या बसी ।
निर्लज्ज हो कितनी उड़ाऊं, हे प्रभो ! अपनी हंसी ? । ९ ।

पर-दोष को कह कर सदा, मेरा वदन दूषित हुआ,
लख कर – पराई नारियों को, हा ! नयन दूषित हुआ,
मन भी मलिन है सोच कर, पर की बुराई हे प्रभो !
किस भांति होगी लोक, में. मेरी भलाई हे प्रभो ! । १० ।

मैंने बढ़ाई निज- विवशता, हो अवस्था के वशी,
भक्षक रतिश्वर से हुई, उत्पन्न जो दुःख राक्षसी ।
हा ! आपके सम्मुख उसे, अति लाज से प्रकटित किया,
सर्वज्ञ ! हो सब जानते, स्वयंमेव संसृति की क्रिया । ११ ।

अन्य मन्त्रो से परम, परमेष्टि मन्त्र हटा दिया,
सद्शास्त्र वाक्यों को कुशास्त्रों से दबा मैंने दिया ।
दुसंग से दुष्कर्म कर्त्ता, जान लेना तूं मुझे,
लोकेश ! इस कारण मति, भ्रम मान लेना तू मुझे । १२ ।

हा तज दिया मैंने प्रभो ! प्रत्यक्ष पाकर आपको,
अज्ञान वश मैंने किया फिर, देखिये किस पाप को ।
वामक्षियों के कुछ कटाक्षों, पर सदा मरता रहा,
उनके विलासों का हृदय में, ध्यान भी धरता रहा । १३ ।

लख कर युवतियों के मनोहर, नेत्र मुख जो रस मिला,
इस हेतु उनके प्रेम में, मम दौड़ कर मानस मिला ।
सच्छास्त्र के सिद्धान्त-निधि, सुन भी डरा है वह नहीं,
संसार तारक ! जान पड़ता, कुछ मुझे कारण नहीं । १४ ।

मुझ मैं न अपने अंग के सौन्दर्य का आभास है,
मुझ में न गुण-गण है विमल, मुझ में न केलि-विलास है,
प्रभुता न मुझ में स्वप्न की भी, है चमकती देखिए,
तोभी भरा हूं गर्व से, मैं मूढ़ हो किस के लिए। १५।

हां ! नित्य घटती आयु है, पर पाप मति घटती नहीं,
आई बुढ़ोती पर विषय, से कामना हटती नहीं।
मैं यत्न करता हूं दवा में, धर्म में करता नहीं,
दुर्मोह महिमा से ग्रसित हूं नाथ बच सकता नहीं। १६।

अघ पुण्य की जग आत्मा, को मैंने कभी माना नहीं,
हां ! आप आगे हैं खड़े, दिननाथ से यद्यपि यही।
तो भी खलों के वाक्य को, मैंने सुना कानों वृथा,
धिक्कार मुझको है गया, मम जन्म ही मानो वृथा। १७।

सत्पात्र पूजन देव-पूजन कुछ नहीं मैंने किया,
मैंने नहीं गृहस्थ विधि का, भी सविधि पालन किया।
नर-जन्म पाकर भी वृथा ही, मैं उसे खोता रहा,
मानो अकेला घोर वन में, व्यर्थ ही रोता रहा। १८।

मैंने न रोका रोग-दुःख, संभोग सुख देखा किया,
मन में न माना मृत्यु भय, धन लाभ ही लेखा किया।
हा ! मैं अधम युवती जनों के, ध्यान नित करता रहा,
पर नरक कारागार से, मन में न मैं डरता रहा। २०।

सद् वृत्ति से मन में न मैंने, साधुता हा साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी, मैंने नहीं कुछ अर्जिता।
संघ तीर्थ के उद्धार आदिक, कार्य कर पाये नहीं,
नर-जन्म पारस तुल्य निज, मैंने गंवाया व्यर्थ ही। २१।

शास्त्रोक्त विधि वैराग भी, करना मुझे आता नहीं,
खल वाक्य भी गत क्रोध हो, सहना मुझे आता नहीं।
अध्यात्म विद्या है न मुझ में, हे न कोई सत्कला,
फिर देव ! कैसे यह भवोदधि, पार होवेगा भला। २२।

सत्कर्म पहले जन्म में, मैंने किया कोई नहीं,
आशा न है जन्मान्य में, उसको करूंगा मैं कहीं।
इस भांति का यदि हूं जिनेश्वर, क्यों न मुझको कष्ट हो,
संसार में फिर जन्म तीनों, क्यों न मेरे नष्ट हो। २३।

हे पूज्य ! अपने चरित को, बहु भांति गाऊं क्या वृथा,
कुछ भी नहीं तुझ से छिपी हैं, पाप मय मेरी कथा।
क्योंकि त्रिजग के रूप हो तुम, ईश हो सर्वज्ञ हो,
पथ के प्रदर्शक हो तुम्हीं, मम चित्त के मर्मज्ञ हो। २४।

दीन उधारक धीर आपसा, अन्य नहीं है,
कृपा-पात्र भी नाथ ! न मुझसा अपर कहीं हैं।
तो भी मांगू नहीं धान्य, धन कभी भूल कर,
अर्हन् ! केवल बोधिरत्न, होवे मगल कर।
श्री रत्नाकर गुण गान यह, दुरित दुःख सबके हरे,
बस एक यही है प्रार्थना, मंगलमय जग को करे। २५।

(३१८)

॥ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

यह विनती है पल २ क्षण २; रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
अपराध न हो इस सेवक से, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहे दुःख का आगार बनूं, चाहे सुख का भण्डार बनूं।
पर सभी परिस्थिति में भगवान, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

जो कुछ भी जग में आता है, प्रारब्ध उसे दे जाता है।
मैं लिप्त न उसमें हो जाऊं, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

यह मानव तन जो पाया है, हरि कृपा दृष्टि की छाया है।
मन की सब चंचलता छूटे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

गति मति के तुम ही विधाता हो, मेरे मन के तुम ज्ञाता हो।
इसलिये नाथ कह रहा यही, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

(३१९)

॥ रे चेतन पोते तूं पापी ॥

(तर्ज : प्रभाती)

रे चेतन पोते तूं पापी, परना छिद्र चितारे तूं ।
निर्मल होय कर्म करदम सु, निज गुण अंबु नितारे तूं । टेर।

सम्यग् दृष्टि नाम धरावे, सेवे पाप अठारे तूं ।
नर्क निगोद थकी किम छूटे, अंतर शल न निवारे तूं । १ ।

परमेश्वर साकी घट घट को, जांकी शरम न धारे तूं ।
कुम्भी पाक नरक में पड़सी, जो पर हियो न ठारे तूं । २ ।

जिम तिम करने शोभा अपनी, या जग मांहि दिखावे तूं ।
प्रकट कहाय धर्म को धोरी, अन्तर भर्यो विकारे तूं । ३ ।

पर निन्दा अघ पिंड भरीजे, आगम साख संभारे तूं ।
विनयचन्द कर आतम निंदा, भव-भव दुष्कृत टाले तूं । ४ ।

(३२०)

॥ रे जीवा जिन धर्म कीजिये ॥

रे जीवा जिन धर्म कीजिए, धर्म है चार प्रकार ।
दान शील तप भावना, यह जग में तंत सार । रे जीवा । १ ।

वर्ष दिवस रे पारणे, आदेश्वरजी ने आहार ।
इखु रस प्रतिलाभियो, श्री श्रेयांस कुमार । रे जीवा । २ ।

गज भव सुसलो राखियो, कीधी करुणा अपार ।

श्रेणिक नृप घर अवतारियो, अंगज मेघ कुमार। रे जीवा।३।

चम्पा पोल उगाड़िया, चालणी काढ्यो नीर।
सती सुभद्रा यश लियो, ते लो शियल सुधीर। रे जीवा। ४।

तप करि काया सोसवी, अरस नीरस ले आहार।
वीर ज़िनन्द वखाणियां, घन धन्नो अणगार। रे जीवा। ५।

अनित्य भावना भावतां, धरता निर्मल ध्यान।
भरत आरीसा रा भवन में, उपज्यो केवल ज्ञान। रे जीवा।६।

यी धर्म सुर तरु समो, यह छे निश्चल छाय।
समय सुन्दर कहे सेवता, मोक्ष तणा फल पाय। रे जीवा। ७।

(३२१)

॥ रे माता क्षण लाखिणी रे जाय ॥

सुग्रीव नगर सुहावणो जी, राजा वलभद्र नाम।
तस घर रानी मृगावती, तस नन्दन गुणधाम।
रे माता क्षण, लाखिणि रे जाय। १।

एक दिन बैठा गोखड़े जी, राणियां रे परिवार।
शीप दाजे ने रवि तपे जी, दीठा तव अणगार। २।

मुनि देखी भव संचर्‌यो जी, मन वासियो रे वैराग।
हर्ष धरी ने उठिया जी, लाग्या माताजी रे पाय।
माता मारी सांभलो, जननी लेसूं संयम भार। ३।

तूं सुकुमाल सुहामनो जी, भोगो संसार ना भोग।

यौवन वय पाछी पड़े जद, आदर जो तुम जोग।
रे जाया तुम विन घड़ी रे छ मास। ४।

पाव पलक री खवर नहीं ए माता, करे काल की जी वात।
काल अचानक आवसी जी माता, ज्यों तीतर पर वाज।माता।५।

रतन जड़त घर आंगनो जाया, सुन्दर अवला जो नार।
मोटा कुल नी उपनी जी, किम छोड़ो निरधार। रे जाया। ६।

वाजीगर वाजी रचे माता, खिण में खेरू जी थाय।
ज्यूं संसार नी संपदा जी, देखतड़ा विरलाय। माता। ७।

लग पथरणे पोढणो जी, तू भोगी रे रसाल।
कनक कचोले जीमतो जी, कांचलड्यो में आहार। रे जाया। ८।

सायर जल पीधा घणा जी, चूंग्या माता रा थान।
तिरपत नहीं हुओ जीवड़ो जी, अधिक अरोग्या धान। माता ९।

चारित्र छे जाया दोहिलो जी, चारित्र खांडा की रे धार।
वाईस परिषह दोहिला जी, ओखद नहीं हैं लिगार। रे जाया।१०।

चारित्र छे माता सोहिला जी, चारित्र सुख की रे खान।
चौदहई राजूलोकना जी, फेरा टालन हार। माता। ११।

सियाले सी लागसी जी, उनाले लूं रे वाय।
चौमासे मेला कापड़ा जी, ए दुःख सह्या किम जाय। रेजाया।१२।

वन में छे माता मृगलो जी, कुण करे उणरीजी सार।
मृगला की परे विचरसूं माता, एकलड़ो अणगार। माता। १३।

(३२३)

॥ रे अवधू निरपक्ष विरला कोई ॥

रे अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ।रे अ० ।

समरस भाव भला चित्त ज्याके, थाप उथापन होई ।
अविनासी के घर की बाता, जानेंग नर सोई । रे अ० । १ ।

निन्दा स्तुति श्रवण करीने, हर्ष शोक नहीं आणे ।
ते जग में जोगीसर पूरा, नित चढ़ते गुण ठाणे । रे अ०। २ ।

राव रंक में भेद न जाणे, कनक उपल सम लेखे ।
नारी नागिण को नहीं परिचय, तो शिव मन्दिर देखे ।रे अ०।३।

चन्द्र समान सौम्यता ज्यां की, सागर जेम गम्भीरा ।
अप्रमते भारंड परे नित्य, सुरगीरी सम सुचि धीरा । रे अ०।४।

पंकज नाम धराय पंक से, रहत कमल जिम न्यारा ।
चिदानन्द इस्या जन उत्तम, सो साहिब का प्यारा। रे अ०।५।

(३२४)

॥ लड़की को ॥

(कव्वाली)

जमाने का न जो चाहो, लगाना रंग लड़की को ।
पढ़ाते हो भला लड़कों के, फिर क्यों संग लड़की को ॥

जो जल का संग पाता है, विगड़ लोहा वो जाता है ।
लगेगा लोह की भांति, से क्यों न जंग लड़की को ॥

प्रथम जुवां है वुरा, इज्जत व धन रहता कहां।
महाराज नल वन को गये, इस कुव्सन के परसंग से। १।

मांस भक्षण जो करे, उसके दया रहती नहीं।
मनु स्मृति में है लिखा, कुव्यसन से परसंग से। २।

शराव यह खराव है, इन्सान को पागल करे।
यादवों का क्या हुआ, इस व्यसन के परसंग से। ३।

रण्डी वाजी है मना, तुम से सुता उनके हुवे।
दामाद की गिनती करे, कुव्यसन के परसंग से। ४।

जो सताना नहीं रवा, क्यों कत्ल कर कातिल वने।
दोजख का मिजाज हो, कुव्यसन के परसंग से। ५।

माल जो पर का चुरावे, यहां भी हाकिम दे सजा।
आराम वह पाता नहीं, इस व्यसन के परसंग से।६।

मोहव्वत बुरी पर नार की, दिल में जरा तो गौर कर।
कुछ नफा मिलता नहीं, इस व्यसन के परसंग से।७।

गांजा, चरस, चन्डू, अफीम और भांग तम्वाखू छोड़ दो।
'चौथमल' कहे नहीं भला, इस व्यसन के परसंग से।८।

(३२६)

॥ लाखों को पार लगाया है ॥

लाखों को पार लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने।
पतितों को पकड़ उठाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने। टेर।

मन में कलुष भरा है लेकिन, जड़ तन का शृंगार । ३ ।

अंगारों पर नीड़ वसा, सोया क्यों भ्रम में भूल ।
फूलों के धोखे में केवल, संग्रह करता शूल ॥
मोह भ्रमर में आन फंसा हूं, तार विचक्षण तार । ४ ।

(३२८)

॥ ले संग खरची रे ॥

(तर्ज : पनजी मूंडे वोल)

ले संग खरची रे, परभव की खरची, लीधां सरसी रे । टेर ।

कूड़ कपट से धन्धो करने, माल तिजोरी भरसी रे ।
सुन्दर महल मालिया छोड़ी, जाणो पड़सी रे । ले संग । १ ।

आगे धन्धो पाछे धन्धो, धन्धो कर-कर मरसी रे ।
धर्म विना पर भव में आगे, फोड़ा पड़सी रे । ले संग । २ ।

राजा वकील वैरिस्टर से कर, मोहब्बत तू संग फिरसी रे ।
कौन छुड़ावे काल आय, जब घेंटी पकड़सी रे । ले संग । ३ ।

चार कोस ग्रामान्तर खातिर, खरची लेय निकलसी रे ।
नया शहर है दूर नहीं, मनिआर्डर मिलसी रे । ले संग । ४ ।

यौवन की थने छाक चढ़ी, वुढ़ापा आय उतरसी रे ।
इस तन की तो होसी खाक, कहां तक तूं निरखसी रे । ले संग ।५।

घर की नारी हांडी फोड़ने, पाछी घर में भड़सी रे ।
जला मसाणा मांय थने, फ़िर कुटुम्ब बिछड़सी रे । ले संग ।६।

लख चौरासी घाटी करड़ी, कैसे पार उतरसी रे।
रति सीख नहीं लागे थारी, छाती वजसी रे। ले संग। ७।

साल गुण्यासी हातोद गांव में, जिनवाणी जोर से वरसी रे।
गुरु प्रसादे 'चौथमल' कहे, धरम सूं तिरसी रे। ले संग। ८।

(३२६)

॥ लोभ उलटी जे रे ॥

(तर्ज : पनजी मूंडे बोल)

(३३०)

॥ वन्दे वीरम् ॥

जवां से कहो हर घडी, वन्दे वीरम् ।
लगाती है सुख की, झड़ी वन्दे वीरम् ॥

झुकाया ज्यों अर्जुन, सुदर्शन के आगे ।
हटाती है विपदा, पड़ी वन्दे वीरम् ॥

ये आधि और व्याधि, उपाधि को जड़ से ।
मिटाने में काविल, जड़ी वन्दे वीरम् ॥

तेरे तन भवन का जो, है द्वार मुखड़ा ।
रहे रक्षिका वन, खड़ी वन्दे वीरम् ॥

जगे ऐसी किस्मत, रहोगे जी ! विस्मित ।
अनोखी है जादू छड़ी, वन्दे वीरम् ॥

रहेगा खुशी में, यहां भी—वहां भी ।
जिसे होगी प्यारी, वड़ी वन्दे वीरम् ॥

अरे दुनियां वालों ! हृदय पे सजालो ।
समझ मोतियों की, लड़ी वन्दे वीरम् ॥

यही कामना है, यही भावना है ।
रहे लव पे 'चन्दन', चढ़ी वन्दे वीरम् ॥

(३३१)

॥ वन्दन सौ २ बार पर्युषण ॥
(तर्ज : काहे मचाये शोर पपैया)

जय जय जय जयकार पर्युषण, जय जय जय जयकार। टेर।

स्वागत स्वागत पर्व तुम्हारा, लो अभिनन्दन आज हमारा।
। वन्दन सौ २ वार ....। १।

सब पर्वों का तू है राजा, तुझसे उन्नत जैन समाजा।
हम तुझ पर बलिहार ....। २।

तीर्थंकर भी तुम्हे मनाते, सुर नर किन्नर सब गुण गाते।
महिमा अपरम्पार ......। ३।

सकल संघ की सेवा पल पल, वहे शांति का झरना निर्मल।
पाले शुद्धाचार........। ४।

चाहे त्रस या स्थावर प्राणी, चाहे मित्र हो दुश्मन जानी।
आतम सम व्यवहार ......। ५।

मैत्री का सन्देश सुहाना, भूलो अपना और बेगाना।
सबसे प्रीत अपार.... ...। ६।

आओ हम सब मिल आरावें, मैत्री भावना दृढ़तर सावें।
सफल करें त्योंहार........। ७।

(३३२)

॥ वरदान मांगता हूं ॥

वरदान मांगता हूं, आगे मुझे बढ़ा दो।
शिव शिखर पे चढ़ा दो। टेर।

अनुश्रोत की लहर में, दिन रात वह रहा हूं।

दे दिव्य दृष्टि भगवन्, प्रति श्रोत में लगा दो। १।

जिस तिमिर में निरन्तर, गुमराह हो रहा हूं।
आलोक भर हृदय में, रास्ता मुझे दिखादो। २।

दिल में भरा गरल जो, उसको निकाल फेंकूं।
ओ धर्म देव ऐसा, अमृत मुझे पिला दो। ३।

जिस देह दुःख को लख कर, संसार कांपता है।
उसको मैं सुख समझलूं, ऐसी कला सिखादो। ४।

अनुभव हृदय की वाणी, मैं और कुछ न चाहूं।
अपने स्वरूप में ही, तनमय मुझे बना दो। ५।

(३३३)

॥ वाट घणी दिन थोड़ो ॥

वाट घणी दिन थोड़ो, बटाऊ वीरा वाट घणी दिन थोड़ो।
घर रयो दूर सूरज घर हाल्यो, दौड़ सके तो दौड़ो। १।

निरभे होय नगर जा पहुँचो, अध वीच पड़सी थने फोड़ो।
होय हुसियार हिम्मत मत हारो, हाक घणे रो घोड़ो। ३।
'ओघड़' कहे रे गुरां के सरणे, मारग लख्यो मोड़ो। ४।

(३३४)

॥ विवेकी आतमा रे ॥

विवेकी आतमा रे, २ अरे तू अब तो निर्मल हो जा।

गुरु सेवा की गंगा इन में, पाप मैल को धोजा।
भारी हो रहा बहुत दिनों से, हलका करले बोझा। १।

ज्ञान रूप दर्पण के अन्दर, निज आतम को धोजा।
बार बार सतगुरु समझावे, एव दोष सब खोजा। २।

मुक्ति का मेवा चखे तो, ममता दही विलो जा।
जो अब मौका चूक गया तो, खुले नर्क में रोजा। ३।

अमृत फल की इच्छा होय तो, बीज धर्म का बोजा।
कर नेकी का काम बदी से, अब तो दूर चला जा। ४।

सत्य धर्म की सेज बिछी है, सोना हो तो सोजा।
कहे मुनि नन्दलाल तणां शिष्य, मिले मोक्ष की मोजां। ५।

(३३५)

॥ विजय कुमार नो चौढालियो ॥

आदिनाथ आदिश्वरो, सकल विदारण कर्म।
उपकारी भवि तारवा, कह्यो चार प्रकारे धर्म। १।

दान शील तप भावना, इन विन मुक्ति न होय।
तो पिण सब व्रत देखतां, शील समो नहीं कोय। २।

शील भागा भागा सबै, इम कहे श्री जगचन्द।
शीलवन्त जे पुरुष ने, सेवे सुर नर वृन्द। ३।

यश कीर्ति फैले इला, जे ब्रह्म व्रत में लीन।
जो सुख चावो जीवने, तो पालो शुद्ध मन शील। ४।

विजय कुमार विजयावली, शील पाल्यो खड्गधार ।
तेहतणा गुण वर्णवूं, लिखित कथा अनुसार । ५ ।

निसुणी करो सारी सभा, परनारी पचखाण ।
पंचपर्व दिन आंखडी, करो यथा शक्ति प्रमाण । ६ ।

यौवन वय छति योग में, नारी रहे जिण पास ।
ब्रह्मचारी त्रिहुं योग सूं, दुक्कर दुक्कर परकाश । ७ ।

॥ ढाल ॥

(तर्ज : मेड़तिया भंवरजी रो करहलो । ए देशी ।)

जम्बूद्वीपना भरत में, दक्षिणे कच्छ देशो जी ।
नगर कौशम्वी तेह में, अमरापुरी कहे सोहो जी ।
शील तणी महिमा सुणो । १ ।

धन्नावो सेठ तिहां वसे, तिणरे विजय कुमारोजी ।
रूप कला गुण आगलो, यौवन वय हुसियारो जी । शी० । २ ।

तिण अवसर मुनि पागुर्या, सुमति गुप्ति प्रति पन्नोजी ।
आप तिरे पर तारता, लोक कहे धन्न धन्नोजी । शी० । ३ ।

लोक आया मुनि वांदवा, तिमही विजय कुमारोजी ।
धर्म कथा मुनिवर कहे, ए संसार असारोजी । शी० । ४ ।

जनम जरा दुख मरणनो, कहतां नावे पारोजी ।
नर भव पामतां दोहिली, चेतो सहू नर नारोजी । शी० । ५ ।

उत्कृष्टो वन्ध कर्मनो, विषय बीच विचारोजी ।

मैं प्रतिलाभ्या, निर्दोषण प्रभु आज हो । स. मैं. मु. । ८ ।

तेहनो स्यु फल, दाखो किरपा करने हो । सु. ते. मु. ।
भाखे मुनिवर, सेठ सुणो चित धरने हो । सु. भा. मु. । ६ ।

नजर कौशम्बी, विजय कुंवर गुणधारी हो । सु. न. मु. ।
त्रिकर्ण योगे, दंपति वाल ब्रह्मचारी हो । सु. त्रि. मु. । १० ।

'राम' कहे धन्य शील पाले नर नारी हो । सु. रा. मु. ।
धन धन जे नर, तेहनी हूं वलिहारी हो । सु. ध. मु । ११ ।

। दोहा ।

इक सेज्या सोवे वेहूं, शुद्ध पाले ब्रह्मचार ।
द्वादश वर्ष ज निकल्या, धन तेहनो अवतार । १ ।

चर्म शरीरी महा उत्तम, किया ज्ञानी गुणाग्राम ।
सुणनें सहु विस्मय थया, सहु को कियो प्रणाम । २ ।

जिननास मन में चिन्तवे, जाय करू दरशन ।
तुम मिलिया संयम लेवसी, मुनिवर कियो प्रसंग । ३ ।

। ढाल ।

(तर्ज : अनोखा भंवरजी हो साहिवा झालो देउं घर आव)

जिनदास मुनिवर वांदने हो भवियण, नगर कौशांवी जाय ।
वहु परिवारे परिवर्या हो । भ. । दरसन की मनमांय ।
धन धन जेहने हो, भवियण जे पाले ब्रह्मचार । १ ।

कौशाम्बी ना बाग में हो । भ । सेठनी डेरो करेह ।

विजयकुमार ना तात सूं हो। भ.। मिलिया हर्ष धरेह। ध.।२।

स्युं कारण प्रधारिया हो, सेठजी, दाखो मुजने राज।
धर्म सगपण श्राविया हो। से.। तुझ सुत दर्शन काज। ध.।३।

विमल केवली गुण कीया हो। से.। बाल ब्रह्मचारी तेह।
मुझ दर्शन मन में लगी हो। से.। ज्यूं चातक कूं मेह। ध.।४।

सेठ सुणी अचरज थयो हो। से.। लियो कुंवर बुलाय।
किसी भांत सौगन किया हो लालजी, स्यू थांरे मन मांय।ध.।५।

कुंवर कहे कर जोड़ ने हो। से.। मैं लियो अभिग्रह धार।
आज्ञा दीजे मुझ भणी हो। से.। लेस्यूं संयम भार। ध.। ६।

तात कहे नन्दन सुणो हो, लालजी, कठिन मुनि आचार।
कर अग्रे कहो किम रहे हो। ला.। मेरु जितरो भार। ध.।७।

लाख प्रकारे नहीं रहूं हो। से.। संयम सुख दातार।
वैरागी कहो किम रहे हो, कुंवरजी लीधो संयम भार। ध.।८।

विजया कुंवरी पिण लियो हो। भ.। पाले शुद्ध आचार।
जप तप खप क्रिया करी हो। भ.। पाम्या केवल सार। ध.।९।

कर्म खपाय मुक्ति गया हो। भ.। प्रथम तीर्थंकर वार।
ब्रह्मचारी विरला इसा हो। भ.। सुणजो सहु नरनार। ध.।१०।

उगणीसे दशमेस मे हो। भ.। नागौर सेखेकाल।
फागण सुद पूनम दिने हो। भ.। जुक्त सूं जोड़ी ढाल। ध.।११।

स्वामी वृद्धिचन्दजी रे प्रसाद सूं हो ।भ०। 'रामचन्द्र कही जोड़ ।
ओछो अधिको जे हुवे हो ।भ०। मिथ्या दुष्कृत मोय ।.ध० ।१२।

। कलश ।

शीलवन्त प्रभूनी गादी, स्वमुख जिनवर भाखियो ।
शीलव्रत सम अधर जग में, नहीं पदारथ दाखियो ।
चौसठ सहस्त्र वरस सुर आयु पामे, लोक लाज व्रत राखियो ।
दुर्धर व्रत जे सधर राखे, धन धन ए रस राखियो । १ ।

विजल सेठ सेठाणी विजया, जैसा विरला जगत में ।
धन धन मनुष्य जनम पायो, जाय विराज्या मुगत में ।
जेहतणां गुण मुख गांतां, जन्म सफलो होय है ।
गुणवन्तना गुण सुणत कानें, भव भव पातक खोय है । २ ।

सुणवानो गुण एहि कहिए, कछू क हिरदे धारिये ।
लीधा व्रत में कायम रहिये नर भव अफल न हारिये ।
ज्ञान वृद्धना चरण पकड़ो, अगाध भवो दधि तारिये ।
'रामचन्द्र' आनन्द धरने, ज्ञानादिक विचारिये । ३ ।

कोई देव देवी लो जोय, सुण २ जीवडला।
विनय थकी सुख संपजे... .... । १ ।

सुखीया तेहीज जाणिये, सुण जीवड़ला।
कोई विनयवंत जो होय, सुण २ जीवड़ला।
नात जात गच्छादि में सुण जीवड़ला।
तिहां उन्नति नी आस ने सुण जीवड़ला।
कोई सज्जन करो किम् कोय, सुण२ जीवड़ला।
विनय थकी संपजे ....। २ ।

(३३८)

। वीर जिनेश्वर सोई दुनिया।

वीर जिनेश्वर सोई, दुनियां जगाई तूने।
ज्ञान की मधुर सुरीली, वंशी वजाई तूने ।१।

भारत की नैया डोली, मृत्यु आ शिर पर बोली।
स्वर्ग से आकर भगवन, पार लगाई तूने। २।

पशुओं पै छूरियां चलती, रक्त की नदियां बहती।
करुणा के सागर, करुणा गंगा बहाई तूने। ३।

देवों की करना पूजा, बस काम था और न दूजा।
मानव की अटल प्रतिष्ठा, जग में जताई तूने। ४

पंथों का झूठा झगडा, जनता का मानस बिगड़ा।
भेद सहिष्णुता की रखी सच्चाई तूने। ५

पाप का पंक धोना नर से नारायणा होना।
'अमर' पद की राह दिखाई तूने।६।

(३३९)

। वे गुरु मेरे उर बसो।

वे गुरु मेरे उर बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरे पर तारता, ऐसे श्री मुनिराज। टेर।

मोह महा रिपु जीतके, छोडे सब घर बार।
होय मुनिश्वर वन वसे, आतम शुद्ध विचार। १।

राग उरग वपु बिल घणा, भोग भुजंग समान।
कदली तरु संसार है, सब छोड़े इंग जाग। २।

पंच महाव्रत आदरे, पांचों समिति समेत।
तीन गुप्ति गोपे सदा, अजर अमर पद हेत। ३।

धर्म धरे दस लक्षणे, भावे भावना बार।
सहे परीषह बीस-दो, चारित्र रत्न भंडार। ४।

रत्न त्रय निज उर धरे, अरु निर्ग्रंथ कहलाय।
जीते काम-पिशाच को, स्वामी परम दयाल। ५।

ग्रीष्म ऋतु रवि तेज ते, सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपे, दाझे नगन शरीर। ६।

पावस रयणी डरावनी, बरसे जलधर-धार।
तरुतल निवसे साहसी, बाजे झंझा जी बाय। ७।

शीत पड़े कपि-मद गले, दाझे सब वन राय।
ताल तरंगिनि तट विषे, ठाडे ध्यान लगाय। ८।

इण विध दुर्धर तप तपे, तीनों काल मंझार।
लग रहे सहज स्वरुप में, तन ते ममत्व निवार। ९।

रंग महल में पोढ़ते, कोमल सेज बिछाय।
ते कंकराली भूमि पे, सोवे संवर काय। १०।

गज चढ़ चलते गर्व ते, सेना सज चतुरंग।
निरख निरख भू पग धरे, पाले करुणा जी अंग। ११।

षट रस भोजन जीमते, सुवर्ण थाल मंझार।
अबे सहूं छिटकाय ने फासुक लेते जी आहार। १२।

पूरव भोग न चिन्तवे, आगम वंछ जी नाय।
चतुर गति दुःख ते डरे, सुरत लगी शिव मांय। १३।

वे गुरु चरण जहां धरे, जंगम तीरथ जेह।
सो रज मम मस्तक चढ़ो, भूधर मांगे जी एह। १४।

(३४०)

। वेला तो आई तोरण की।

(तर्ज : वटाऊ आयो लेवाने—मारवाड़ी)

म तो घूड़ला पर घूमे थारो बींद, वेला तो आई तोरण की। टेर

चम चम चमके केश सुनहरा, इन्द्रियां छोड़ी कार।
नैण न दीखे कान सुने ना, मुखड़ा सूं पड़ रही लार।

तड़ तड़ बोले तन की कड़ियां, रग रग रोग अपार।
थर थर धूजे अंग आज तो, लकड़ी उठावे सारो भार।२।

रंग महल में मौज मांडता, पड़्या पोल में जाय।
कौड़ी न छोड़ी पास में रे, अब कुण पूछे थांरी सार। ३।

विषय भोग में इन्द्रियां पोखी, नहीं राखी प्रभु साख।
जब हंसो उड़ जावसी रे, जल बल होसी सारी राख। ४।

धर्म कर्म नहीं कीनो बन्दा, रख्यो बुढ़ापा तांय।
मूरख सोचे काल की रे, पल में तो प्रलय हो जाय। ५।

स्वास खांस और हाय हाय में, तप जप होवे नांय।
मुख से प्रभु को नाम न निकले, मन की रह जासी मन मांय।६।

दान पुण्य का भाव हुआ तो, परवश हो गया आज।
कलम चली जद कुछ नहीं कीनों, अब नहीं देवे कोई साज। ७।

माया की मस्ती में भूल्यो, नहीं परख्यो संसार।
खेत चिड़कला चुग गया रे, हाथां सु बाजी गयो हार।८।

लख चौरासी घूमता रे, नर तन लीनो जोय।
बिजली के झलके मोतीड़ो, पोय सके तो लीजे पोय।

पाप पुण्य संग जासी थांरे, ले ले खर्ची लार।
चेत सके तो चेत दीवाना, अब तो पाहुणो दिन चार

काल सिरहाणे घूम रयो ज्यूं, तोरण आयो बींद।
जाग जाग ओ 'जीत' कैसे, सूतो है सुख भर नींद

। वो दिन कब होसी ।

(तर्ज : कोरो काजलियो)

मैं करसूं धर्म विचार, वो दिन कब होसी ।
म्हारो सफल होवे अवतार, वो दिन कब होसी । टेर ।
देवगुरु का भक्त कहावूं, पच्चखूं पाप अठार । वो दिन. । १ ।
सम्यक ज्ञान क्रिया का साधन, साधूं भली प्रकार । वो दिन. ।२।
मोह मत्सरता मन से मोडूं, कुमता को ललकार । वो दिन. । ३।
देश जाति निज धर्म निभावन, झेलूं कष्ट अपार । वो दिन. ।४।
हस हस कर वलिदान हो जावूं, पर न तजूं निज कार । वो दिन.।५।
मैत्री भाव बढ़ावूं सबसे, तज कर वैर विकार । वो दिन. ६ ।
आज्ञा धर्म आराधन करके, लूं नर भव को सार । वो दिन.।७।
भक्ति भाव बड़ों का रक्खूं, विनय धर्म उरधार । वो दिन. ।८।
हिंसा झूंठ चोरी को त्यागूं, पालूं शुद्ध ब्रह्मचार । वो दिन. ।९।
ममता तज समता भजूं, बनूं शुद्ध अणगार । वो दिन. । १० ।
प्राण हमारा जब ही निकले, रटतो मुख नवकार । वो दिन. ।११।
फूले फले भावना मेरी, कृपा करो करतार । वो दिन. । १२ ।
पौष वदी एकम मादलिये, दोय हजार अठार । वो दिन. । १३ ।
श्री जिनके चरणों में विनती, करे 'मिश्री' अणगार । वो दिन. ।१४।

। वो दिन धन्य होसी ।

(तर्ज : कोरो काजलियो)

वो दिन धन्य होसी, जद करस्यूं धर्म विचार । टेर ।

एक जीव के कारणे, कियो आरम्भ बेशुमार । वो ।

परिग्रह की सीमा नहीं, कोई दिन दिन बढ़े अपार । वो ।

धर्म ध्यान निपजे नहीं, नहीं कीनों पर उपकार । वो ।

आरम्भ परिग्रह छोड़ने, निवृत्त होसूं जिण वार । वो ।

भव भव में भटकत फिर्‌यो, कोई चौरासी मंझार । वो ।

साधु या श्रावक पणो, नहीं कीनो अंगीकार । वो ।

ब्रह्मचर्य व्रत पालसूं, कोई संयम सत्तरे प्रकार । वो ।

पंच महाव्रत धार के, कोई बण सूं जद अणगार । वो ।

अन्त संथारो धार सूं, अठारे पाप परिहार । वो ।

अरिहंत, सिद्ध साहू, केवली, ए चारों शरणा धार । वो ।

सब ही जीव खमावसूं, कोई खमसूं बारम्बार । वो ।

शुद्ध भावे पण्डित मरण, कोई करस्यूं देह विसार । वो ।

तीन मनोरथ ए कह्या, जो नित चिन्ते नरनार । वो ।

इण भव पर भव जीव के, कोई खर्ची बांधे लार । वो ।

'जीतमल' की विनती, कोई सुणजो जगदाधार । वो ।

तीन मनोरथ पूरजो, म्हांरे होसी मंगलाचार । वो ।

। वंदू इग्यारे गणधार ।

श्री इन्द्रभूतिजीरो लीजे नाम, तो मन वांछित सीझे काम ।
मोटा लब्धितणा भण्डार, वंदू इग्यारे गणधार । १ ।

अग्निभूति गौतमजी रा भाई, वीरजीने दीठा समता आई ।
ऋद्धि त्यागी लीयो संजमभार । वन्दू ... । २ ।

वायुभूति मोटा मुनि राय, ऐ तीनों ही सगा भ्रात ।
पांच पांच सौ निकलियां लार वन्दू ....। ३ ।

विगत स्वामीजी चौथा जाण, भजन किया होवे अमर विमाण ।
देवलोक सुख रा झणकार । वन्दू ......। ४ ।

स्वामी सुधर्मा वीरजी रे पाट, जन्म मरण सेवक रा काट ।
मुझने आपतणो आधार । वन्दू ...... । ५ ।

मंडी पुत्र ने मोरी पूत, मुक्ति जावणरा कर दिया सूत ।
त्रिविधे त्याग्या पाप अठार । वन्दू.... । ६ ।

अकंपित ने अचल भ्रात, वीरजी रे वचने रयाजरात ।
चउदे पूरवना भंडार । वन्दू ....। ७ ।

मेतारज ने श्री प्रभास, मोक्ष नगर में कर दिया वास ।
जपता होवे जै जै कार । वन्दू ...... । ८ ।

ए इग्यारे उत्तम जात, चम्मालीस सौ निकलिया साथ ।
ज्यां कर दीना खेवा पार । वन्दू........। ९ ।

(३५४)

इण नामे सहु आशा फले, दोषी दुश्मन दूरा टले ।
ऋद्धि सिद्धि पामे सुख सार । वन्दू........। १० ।

इण नामे सत्र नाशे पाप, नित्यरो जपीये भविजन जाप ।
चित्त चोखे हिरदा में धार । वन्दू.... । ११ ।

सम्वत् अठारे तयालीसे जाण, पूज्य जयमलजी री अमृत वाण ।
चौमासे स्तवन कियो पीपाड़ । वन्दू.... । १२ ।

असाढ़ सुदि सातम रे दिन गणधरजी ने गाया एक मन ।
आसकरणजी भरो अणगार । वन्दू.... । १३ ।

(३४४)

। शान्ति जिनन्द जपता जाप लीला ।

शान्ति जिनन्द जपता जाप, लीला लहर करावे ।
मुझ घर मंगलाचार, मारो मन हर्षावे । टेर ।

उठी प्रभाते जिनवर देव, जपते जे मन भावे ।
जपते ही आनन्द होय, ज्यों अमृत रस पावे । शान्ति । १

मान सरोवर जिनवर नाम, जिन गुण कमल फुलावे ।
अक्षय सुख की लहर, मुझ मन भंवर भावे । शान्ति । २ ।

शान्ति नाम मुझ आंगने में, आनन्द छावे ।
पग पग प्रगटे निधान, मेरी चिंता जावे । शान्ति । ३ ।

शान्ति जिनन्द धर ध्यान, शिवपुर नगर सिधावे ।
अनन्त सुखों की लहर, ज्योति रूप सुहावे । शान्ति ।४।

(३५५)

देश देश के भूप, अगते पाखी पलावे।
दाम नगर घासीलाल, दीवाली के दिन गावे। शान्ति।५।

(३४५)

। शीतल जिनवर करू ं प्रणाम।

शीतल जिनवर करू ं प्रणाम, सोलह सतियां रा लेसूं नाम।
ब्राह्मी चन्दना राजमती, द्रोपदी कौशल्या मृगावती। १।

सुलसा सीता सुभद्रा जाण, शिवा कुन्ती शील गुण खान।
नल-घरणी दमयन्ती सती, चेलणा प्रभावती पद्मावती। २।

शील गुणे सुहावे सिरी, ऋषभदेव नी त्रिया सुन्दरी।
सोले सतियां शील गुण भरी, भवियण प्रणमो भावे करी।३।

ये सुमरयां सब संकट टले, मन चिंतित मनोरथ फले।
इण नामे सब सीझे काज, लहिये मुक्ति पुरी नो राज। ४।

भूत प्रेत इण नामे टले, ऋद्धि सिद्धि घर आई मिले।
इण नामे सहु होय जगीश, ए सतियां सुमरु ं निश दीश। ५।

(३४६)

। शील सुखदाई रे।
(तर्ज: पनजी मूंडे बोल)

शील सुखदाइ रे-२ कई पाल शील गया मुगत के मांही रे। टेर।

राजमति संयम लेकर गई, गिरी गुफा के मांही रे।
राख्यो शील मुनि को प्रति बोधी, मोक्ष सिधाई रे। १।

काम अंध रावण सीता को, ले गयो लंका मांही रे।
पूरण राख्यो शील लेई जस, सुर पद पाई रे। शील. । २।

पद्मनाभ नृप सुर सावन कर, द्रौपदी को मंगवाई रे।
चतुराई से राख्यो शील, हरि लायो जाई रे। शील. । ३।

सुभद्रा की सासु सिर पे, दीनो कलंक चढ़ाई रे।
दूर कियो सुर कलंक, जगत में सुयश पाई रे। शील. । ४।

दुरगति टले मिले सुख साता, इसमें संशय नाई रे।
मुनि नन्दलाल तणा शिष्य, दिल्ली में जोड़ बनाई रे। शील. ।५।

(३४७)

। शुद्ध मन भावो रे।

(तर्ज : कोई ऐसी चतुर सखी ना मिली)

शुद्ध मन भावो रे, या खास भावना मोक्ष ले जावे रे। टेर।

प्रथम भागे बैठ भावना, श्रावक शुद्ध मन भावे रे।
चित्त-वित्त पातर सुध मिलिया, संसार घटावे रे। शुद्ध। १।

दान, शील, तप तीनों जानो, भाव बिना ये सूना रे।
दया बिना ज्यूं मनुष जमारो, भात अलूणा रे। शुद्ध। २।

स्वर्ग पांचवे गयो मृगलो, मुक्ति मरुदेवी जावे रे।
भाव बिना व्यापार कीन, कुण लाभ उठावे रे। शुद्ध। ३।

अनित्य भावना भाई भरतजी, अशरण अनाथी भाई रे।
संसार भावना शालिभद्रजी, एकान्त नमिभाई रे। शुद्ध। ४।

अन्य भावना मृगा पुत्रजी, अशुचि सनत कुमारो रे।
समुद्र पाल आश्रव और संवर, हरिकेशी अणगारो रे। शुद्ध ।५।

अर्जुन माली भाई निर्जरा, शिवराज लोक स्वरूप तांई रे।
बोधी दुर्लभ ऋषभदेव, के पुत्रां भा रे। शुद्ध । ६ ।

धर्म रुचि महाराज भावना, धर्म तणी पहचानी रे।
जीरण सेठ की महिमा, सुर नर मुनि वखाणी रे। शुद्ध । ७ ।

उगणीसे चमोत्तर आखा तीज, कृष्ण गढ़ के मांई रे।
गुरु हीरालाल प्रसादे, चौथमल जोड़ वनाई रे। शुद्ध । ८ ।

(२४८)

। स्वाध्याय नित्य उठ करिये ।

(तर्ज : जरा कर्म देखकर करिये इन कर्मो की बहुत वुरी मार है)

स्वाध्याय नित्य उठ करिये, यदि पाना तुम्हें मुक्ति स्थान है।
मत खोओ समय प्रमाद में, यह वीर प्रभु का फरमान है। टेर।

स्वाध्याय से मन स्थिर होता, आत्मा पाता शांती को।
चंचल मन को वश करने का, मन्त्र यही है मानो तो।
वश करता वह बनता महान है। १।

मन चंचल है मानो हाथी, कहना न माने ज्ञानी का।
मद मत्त होकर झूमता फिरता, जिसे ज्ञान नहीं हानि का।
ऐसे गज को यह अंकुश समान है। २।

पढ़मं नाणं तओ दया यह, रहस्य जानो जिन वाणी का।
सम्यक ज्ञान स्वाध्याय से जीवन, बनता उच्च है प्राणी का।
मुक्ति दाता यह सम्यक ज्ञान है। ३।

एगं जिए जिया पंच, यह पाठ साफ बतलाता है।
चारों कषाय, पांचों इन्द्री-मन, इन दस को वश में लाता है।
सभी शुभ जीते वह ज्ञान वान है। ४।

नित्य प्रति स्वाध्याय करे तो, नया नया नित्य ज्ञान बढ़े।
ज्ञान से जाने, पाप को छोड़े, धर्म ध्यान की ओर बढ़े।
ज्ञानी पाते सदा सम्मान है। ५।

ज्ञान से दर्शन शुद्धि होती, श्रद्धा दृढ़ हो जाती है।
ज्ञान से ही श्री जिन वचनों में, अनुरक्तता आती है।
बिन ज्ञान के बाल समान है। ६।

बिना ज्ञान के चारित्र भी, शुद्ध पालन नहीं होता है।
अज्ञानी का तप करना भी, सम्यक तप नहीं होता है।
मुक्ति मार्ग में ज्ञान प्रधान है। ७।

आठ पहर में चार पहर, स्वाध्याय करो आगम कहता।
स्वाध्याय से ज्ञान बढ़े, अज्ञान हृदय में नहीं रहता।
'आगाआगा' की ऐसी श्रद्धान है। ८।

। स्वाध्याय का आनन्द लेने दो ।

स्वाध्याय का आनन्द लेने दो, मोहे ज्ञान की ज्योति जगाने दो। टेर।

आचार्य हमारे हैं भारी, जन जन को है आनन्द कारी।
नित मंगल दर्शन करने दो। स्वाध्याय का. । १ ।

स्वाध्याय का मार्ग बताया है, जनता का मन हर्षाया है।
सन्मति पथ को अपनाने दो। स्वाध्याय का. । २ ।

स्वाध्याय अनन्तर तप भारी, महिमा जिसकी अपरम पारी।
मोहे अन्तर तप को करने दो। स्वाध्याय का. । ३ ।

स्वाध्याय ज्ञान का साधन है, धारेगा वह ज्ञानी जन है।
अन्धकार को दूर हटाने दो। स्वाध्याय का. । ४ ।

स्वाध्यायी बन सेवा देवे, पर्यूषण का लावा लेवे।
मोहे आठ दिवस तो जाने दो। स्वाध्याय का. । ५ ।

आचार्य देव उपकार करो, स्वाध्यायियों को तैयार करो।
जिन शासन शान बढ़ाने दो। स्वाध्याय का. ।६।

आसोज सुदी बारस दिन है, स्वाध्याय शिविर अन्तिम दिन है
उसमें भगवन्ता शिक्षा दो। स्वाध्याय का. । ७ ।

स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो।

खाना हम नित ही खाते हैं, सोना भी नियमित चाहते हैं।
अखबार रोज पढ़ जाते हैं, स्वाध्याय से क्यों घबराते हैं।
इसका तो तनिक विचार करो। स्वा.। १।

चंदा बिन रजनी कारी है, जल के बिन सुखी क्यारी है।
बिन ज्ञान के दशा हमारी है, ज्यों अंक बिना बिन्द सारी है।
जीवन का तनिक सुधार करो। स्वा.। २।

वीर प्रभु की वाणी है, सर्व सुखों की खानी है।
इसे पढ़नी और पढ़ानी है, स्वाध्याय की यही निशानी है।
घर घर इसका प्रचार करो। स्वा.। ३।

सद् ज्ञानाभ्यास बढ़ाने से, श्रद्धा को शुद्ध जमाने से।
चरित्र बल चमकाने से, 'अनराज' त्रिवेणी नहाने से।
भव भव के तुम संताप हरो। स्वा.। ४।

(३५१)

। स्वाध्याय करो ।

(तर्ज : उठ भोर भई टुक जाग सही . . .)

जिनराज भजो सब दोष तजो, अब सूत्रों का स्वाध्याय करो।
मन के अज्ञान को दूर करो, स्वाध्याय करो २। टेर।

जिनराज की निर्दूषण वाणी, सब सन्तों ने उत्तम जानी।
तत्त्वार्थ श्रवण कर ज्ञान करो, स्वाध्याय करो २। १।

स्वाध्याय सुगुरु की वाणी हैं, स्वाध्याय ही आत्म कहानी है।
स्वाध्याय से दूर प्रमाद करो, स्वाध्याय करो २। २।

स्वाध्याय प्रभु के चरणों में, पहुंचाने का साधन जानो।
स्वाध्याय मित्र, स्वाध्याय गुरु, स्वाध्याय करो २। ३।

मत खेल, कूद, निद्रा विकथा में, जीवन धन बर्बाद करो।
सद्ग्रन्थ पढो सतसंग करो, स्वाध्याय करो २। ४।

मन-रंजन नॉविल पढ़ते हो, यात्रा विवरण भी सुनते हो।
पर-निज स्वरूप ओलखने को स्वाध्याय करो २। ५।

स्वाध्याय बिना घर सूना है, मन सूना है सद्ज्ञान बिना।
घर-घर गुरुवाणी गान करो, स्वाध्याय करो २। ६।

जिन शासन की रक्षा करना, स्वाध्याय-प्रेम जन-मन भरना।
'गजमुनि ने अनुभव कर देखा, स्वाध्याय करो २। ७।

(३५२)

। सकल संसार को जानो ।

(तर्ज : बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

सकल संसार को जानो, सराय जैसा उतारा है।
मुसाफिर छोड़ दे गफलत, रैन भर का गुजारा है। टेर।

थोडी सी जिन्दगी खातिर, बनाई बाग से कोठी।
कोई पूछे तो कहे ऐसा, मकां यह तो हमारा है। १।

चौथमल कहे भोगों से, गया नहीं तृप्त हो कोई।
निजात्म ज्ञान के प्यारों, सबर हरगिज नहीं आता। ७।

(३५६)

। सब जन लो हर्ष मनाई।

(तर्ज : यह शिविर ज्ञान का धाम)

सब पर्वों का ताज पुण्य दिन आज, संवत्सरी आई।
सब जन लो हर्ष मनाई। टेर।

चौरासी लाख जीव योनि से, जो वैर किया मन, वच, तन से।
भूलो वह और लो, मैत्री भाव बसाई। सब जन...। १।

जो जान बूझ कर पाप किया, या अनजाने अतिचार हुआ।
लो दण्ड और दो मिच्छामिदुक्कड़ भाई। सब जन ।२।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य श्री, पाठक मुनिवर महासतियां जी।
श्रावक श्राविका इन सब से लेवो खमाई। सब जन ...। ३।

जो खमता और खमाता है, वह प्राणी आराधक बनता है।
आराधक की होती है गति सुखदाई। सब जन । ४।

यह पर्व नित्य नहीं आता है, पाले वह मुक्ति पाता है।
केवल कहते "पारस" अपना नरमाई। सब जन ...। ५।

(३५७)

। समझ मन मेरा रे।

(तर्ज : रिश्वत छोड़ दे)

समझ मन मेरा रे, समझ मन मेरा रे।
थारो धारियो नहीं, पार पड़ेला रे। टेर।

तूं चाहे मैं बनूं अरबपति, करके धन सब भेला रे।
जगत सेठ को पदवी ले लूं, सबके पहला रे। १।

हीरा पन्ना मणि माणिक का, पहनूं कण्ठी भेला रे।
मोटर बग्गी बीच बैठकर, करूं मैं सेलां रे। २।

नित्य खाऊं मैं माल मसाला, नारंगी और केला रे।
नया मूंग की खिचड़ी में, घी का रैला रे। ३।

सोना में त्रिया को जड़ दूं, जब मन खूब भरेला रे।
लेन देन मैं करूं विलायत, तब तुन्द भरेला रे।४।

पूर्व पुण्य थे नहीं कमाया, कैसे आश फलेला रे।
'चौथमल' उपदेश सुनावे, दे दे हेला रे। ५।

(३५८)

। समझ अभिमानी रे।

समझ अभिमानी रे २ थारी नदी पूर ज्यों जाय जवानी रे। टेर।

मेला ख्याल में जीवन जावे, बागां में गोट बनावे रे।
संतन की सेवा में आवतां, काम बतावे रे। १।

करी कान संझा का भान ज्यों, डाभ अग्र को पानी रे।
बिजली का झलका सी सम्पत्ति, वीर बखानी रे। २।

एक सरीखी टोली मिल, गप्पों में वक्त गमावे रे।

प्रभु भजन नित नेम करत तुझ, आलस आवे रे। ३।

टेड़ी पगड़ी टेंट घणी, नित नया करे सिणगारा रे।
धर्म विना कई गया पशु, जिम हार जमारा रे। ४।

कोई जीव को मति सता तूं, प्याला प्रेम का पीजे रे।
दुर्लभ नर भव पाय सार, सत्संगत कीजे रे। ५।

मेरे गुरु नन्दलाल मुनि तो, त्याग की वात फरमाई रे।
जोड़ करी अजमेर पैंसठ, पन्द्रह के मांई रे। ६।

(३५६)

। समझो चेतनजी अपना रूप ।

(तर्ज : गुरु देव हमारी करदो ...)

समझो चेतनजी अपना रूप, यो अवसर मत हारो। टेर।

ज्ञान दरस-मय, रूप तिहारो, अस्थि-मांस मय, देह न थारो।
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियारो। समझो। १।

पोपट ज्यूं पिंजर बंधायो, मोह कर्म वश स्वांग बनायो।
रूप धरे हैं अनपार, अब तो करो किनारो। समझो।२।

तन धन के नहीं तुम हो स्वामी, ये सब पुद्गल पिंड है नामी।
सत् चित् गुण भण्डार, तूं जग देखन हारो। समझो।३।

भटकत भटकत नर तन पायो, पुण्य उदय सब योग सवायो।
ज्ञान की ज्योति जगाय, भर्म तम दूर निवारो। समझो।४।

पुण्य पाप का तूं है कर्त्ता, सुख दुःख फल का भी तूं भोक्ता।

तूं ही छेदनहार, ज्ञान से तत्त्व विचारो। समझो। ५।

कर्म काट कर मुक्ति मिलावे, चेतन निज पद को तव पावे।
मुक्ति के मार्ग चार, जानकर दिल में धारो। समझो।६।

सागर में जलधर समावे, त्यूं शिवपद में ज्योति मिलावे।
होवे 'गज' उद्धार, अचल है निज अधिकारो। समझो।७।

(३६०)

। सुमरो मंत्र भलो नवकार।

सुमरो मंत्र भलो नवकार, ये छे चौदह पूर्व नो सार।
एहनी महिमा नो नहीं पार, एहनो अर्थ अनन्त अपार। सुमरो।१।

सुखमा सुमरो दुखमां सुमरो, सुमरो दिन ने रात।
जीतां सुमरो मरतां सुमरो, सुमरो सव संगात। सुमरो। २।

जोगी सुमरे भोगी सुमरे, सुमरे राजा रंक।
देवा सुमरे दानव सुमरे, सुमरे सहु निशंक। सुमरो। ३।

अड़सठ अक्षर एहना जाणो, अड़सठ तीर्थ सार।
आठ संपदा थी परमाणो, अष्ट सिद्धि दातार। सुमरो। ४।

नवपद एना नवनिधि आपे, भव भवनो दुःख कांपे।
चन्द्र स्वरथी हृदय ध्यावे, परमातम पद आपे। सुमरो। ५।

(३६१)

॥ सदा सुख पावेला ॥

(तर्ज : रिषभजी मुंडे बोल)

चेतन निज घर को भूल रहा, पर घर माया में भूल रहा।
सद्चिद् आनन्द को पाना हो तो……सा०। २।

विषयों में निज गुण मत भूलो, अब काम क्रोध में मत भूलो।
समता के सर में नहाना हो तो……सा०। ३।

तन पुष्टि हित व्यायाम चला, मन पोषण को शुभ ध्यान भला।
आध्यात्मिक बल पाना चाहो तो……सा०। ४।

सब जग जीवों में बन्धु भाव, अपनालो तज के वैर भाव।
सब जन के हित में सुख मानो तो……सा०। ५।

निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो, धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो तो……सा०। ६।

साधक सामायिक संघ बने, सब जन सुनीति के भगत बने।
नर लोक में स्वर्ग बसाना हो तो ……सा०। ७।

(३६३)

। साधना के उच्च शिखरों।

साधना के उच्च शिखरों, पर विजय अभियान हो अब। टेर।

लक्ष पहला साधना है, सत्य की आराधना है।
रूढ़ चर्या की अपेक्षा, सत्य का सन्धान हो अब। १।

शैल से उन्नत बने हम, सिन्धु से गहरे बने हम।
सूर्य से गति प्रेरणा ले, अविश्रम गति मान हो अब। २।

शास्त्र से आलोक पाये, हम न केवल गीत गाये।

पेठ कर गहरे समुन्दर, आत्म अनुसन्धान हो अब । ३ ।

शोध होती आत्म व्रत से, सबक ले पश्चिम जगत से ।
भूल कर अस्तित्व अपना, हम स्वयं भगवान हो अब । ४ ।

प्रेम का हो दीप कर में, हो अटल विश्वास मन में ।
जो छिपी है शक्तियां, उन से निकट पहिचान हो अब । ५ ।

(३६४)

। साता कीजो जी ।

(तर्ज : पनजी मूंडे बोल)

साता कीजो जी, श्री शांतिनाथ प्रभु, शिव-सुख दीजो जी ।साता।टेर।

शांतिनाथ है नाम आपको, सबने साता कारीजी ।
तीन भवन में चावा प्रभुजी, मृगी निवारी जी । १ ।

आप सरीखा देव जगत में, और नजर नहीं आवेजी ।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मन भावेजी । २ ।

शांति जाप मन मांहि जपता, चाहे सो फल पावेजी ।
ताव-तेजरो दुःख-दारिद्र, सब मिट जावेजी । ३ ।

विश्वसेन राजाजी के नंदन, अचलादे राणी जायाजी ।
गुरु प्रसादे चौथमल कहे, घणा सुहायाजी । ४ ।

(३६५)

। साधुजी ने वन्दना ।

साधुजी ने वन्दना नित नित कीजे, प्रातः उगंते सूर रे प्राणी ।

नीच गति में ते नहीं जावे, पामे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी । १ ।

मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छह काया रा प्रतिपाल रे प्राणी ।
भ्रमर-भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बयालीस टालरे प्राणी ।२।

ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणी, दीधी संसार ने पूठरे प्राणी ।
एहवा पुरुषांनी सेवा करतां, आठूं कर्म जाय टूटरे प्राणी ।३।

एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान रा भंडार रे प्राणी ।
एक एक मुनिवर वैयावच्चिया वैरागी,
जेहना गुणांनो नावे पार रे प्राणी । ४ ।

गुण सत्तावीस करीने दीपे, जित्या परीषह बावीस रे प्राणी ।
बावन तो अनाचारज टाले, तेने नमावूं मारो शीश रे प्राणी ।५।

जहाज समान ते संत मुनिश्वर, भव्य जीव बेसे आय रे प्राणी ।
पर उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुक्ति पहुँचाय रे प्राणी ।६।

साधु चरणे-जीव साता रे पावे, पावे ते लील विलास रे प्राणी ।
जन्म जरा अने मरण मिटावे, नावे फरी २ गर्भावास रे प्राणी ।७।

एक वचन श्री सतगुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी ।
नरक निगोद में ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी । ८ ।

प्रातः उठी ने उत्तम प्राणी, सुणे साधां रो व्याख्यान रे प्राणी ।
यां पुरुषां री सेवा करता, पावे अमर विमान रे प्राणी । ९ ।

संवत अठारे ने वर्ष अड़तीसे, बूसी गांव चौमास रे प्राणी ।
मुनि आसकरणजी इण पर जपे,
हूंतो उत्तम साधारो दास रे प्राणी । १० ।

। साधु जैन का ।

(तर्ज : पावड़े पग देतां धणियों चांदे राव लूंटी हो फागुन की)

साधु जैन का मुखडा रे उपर, मुखपति बांधे रे। टेर।

पांच महाव्रत पाले मुनिवर, टाले दोषण सारा रे।
सब जीवां ने साता कारी, वो गुरु म्हारा रे। साधु०।१।

सियाला में ठण्ड पड़े पिण, धुनी नहीं धुकावे रे।
कारण अग्नि जीवां ने, वे नहीं सतावे रे। साधु०।२।

उनाला में वींजना से, वायरो नहीं खावे रे।
वायु कायरा जीव वलि, मच्छर मरजावे रे। साधु०।३।

हेटेतो आकाश ऊपर, पवन ऊपरे पाणी रे।
पानी रे ऊपर है पृथ्वी, सांची मानी रे। साधु।४।

तुलसी के नहीं फेरा खावे, पत्तोपिण नहीं तोड़े रे।
गऊ वन्धन में पड़ियो पीछे, अन्न जल छोड़े रे। साधु०।५।

रात पड़िया अन्न जल रो खेरो मूंडा में नहीं नाखे रे।
सुई जितरो ही पिण धातु, रात न राखे रे।साधु०।६।

लीलोतरी रे भेला साधु भूल कभी नहीं होवे रे।
विपया के वश होय नार के सामा न जोवे रे। साधु० ७।

भांग तमाखु गांजा रे तो, नेड़ा वे नहीं जावे रे।
तन्दुरा परमुख कोई वाजा, नही वजावे रे। साधु।८।

पहर रात के गया के पीछे, ध्यान वा शयन लगावे रे।
पिण नहीं गाय बजाय के वे, रात जगावे रे। साधु० ।९।

पग उरवाने चाले साधु, करड़ाई नहीं करता रे।
पर उपकार के कारण से, दुनियां में फिरता रे। साधु०।१०।

हाथी घोड़ा रेल मोटर की, नहीं करे सवारी रे।
दूर-दूर देशावर देखे, पाय विहारी रे। साधु०। ११।

बोली तो नहीं बोले ऐसी, खटके जैसी खारी रे।
अमृत बोली बोले माने, मौज मजारी रे। साधु०। १२।

गृहस्थी के घर नेतियोड़ा, जीमन ने नहीं जावे रे।
रुखी सूखी लाय ने, स्थानक में खावे रे। साधु०। १३।

होली चौमासो नानणा में, दोय ठाणा सूं आगा रे।
साधु शिष्य चौथु पंचाणवे, स्तवन बनाया रे। साधु०।१४।

ऋषभ देवका कीर्तन करते, अजित नाथ को वन्दन करते।
संभवनाथ का नाम सुमरते, अभिनन्दन को चित्त में धरते।
जय सुमति, जय पद्म प्रभु जय, चौवीसो भगवान। साधु। १।

सुपार्श्वनाथ का कीर्तन करते, चन्द्र प्रभु को वन्दन करते।
सुविधिनाथ का नाम सुमरते, शीतल प्रभु को चित्त में धरते।
जय श्रयांस, जय वासुपूज्य जय, चौवीसी भगवान। साधु। २।

विमलनाथ का कीर्तन करते, अनन्तनाथ को वन्दन करते।
धर्मनाथ का नाम सुमरते, शान्तिनाथ को चित्त में धरते।
जय कुन्थु, जय अरनाथ जय, चौवीसी भगवान। साधु। ३।

मल्लिनाथ का कीर्तन करते, मुनि सुव्रत को वन्दन करते।
नमिनाथ का नाम सुमरते, अरिष्ठ नेमि को चित्त में धरते।
जय पारस, जय महावीर जय, चौवीसी भगवान। साधु। ४।

अनन्त सिद्ध का कीर्तन करते, विहरमान को वन्दन करते।
गणधर प्रभु का नाम सुमरते, गुरुदेव को चित्त में धरते।
केवल शिष्य विनय करता जय, चौवीसी भगवान। साधु० ।५।

(३६८)

। सांभल हो गौतम, दुखमी तो आरो होसी पांचमो।

(तर्ज : सांभल हो प्राणी, वेलारा वाया मोती)

सांभल हो गोतम, दुखमी तो आरो होसी पांचमो। टेर।

मोटा तो नगर होसी गावड़ा, गांमड़ा होसी रे मसान।
ऊंचा तो कुलरा छोरा छोकरी, दोसेला दास समान। १।

राजा तो होसी जम सारखा, लालची होसी प्रधान।
ऊंचा तो कुलनी रे नारियां शरम देसी छोड़। २।

पुत्र पिता नो कहणो न पालसी, शिष्य गुरु अविनीत।
ऊंचा कुलरी केई नारियां दीसेला वैश्या समान। ३।

मिथ्याती शूरा बहुल पुजावसी, एक धर्म तणो भेद।
देव का दर्शन दुर्लभ पामसी, विद्या बहु जासी विच्छेद। ४।

ब्राह्मण तो होसी धन का लोभीया, हिंसा में कहसी बहुधर्म।
केई मिथ्याती होसी मानवी, मुश्किल निकलेला ज्यांरा भ्रम।५।

वंश अनारज सुखिया होवसी, दुखिया तो होसी सज्जन लोक।
काल दुकाल पड़सी अति घणा, उन्दर सर्पादिक होसी थोक।६।

धरती में सरसाई थोड़ी होवसी, आउखो पावेला पूरो नाय।
चौमासा लायक क्षेत्र साधु ने, थोड़ा मिलेला भरत मांय। ७।

साधु श्रावक की प्रडिमा विच्छेद जावसी, शिष्य गुरु रा अविनीत।
गुरु चेला ने थोड़ा पढ़ावसी, मुश्किल निभेली ज्यांरी प्रीत। ८।

कुमाणस कलेशी घणा होवसी, अल्प होवसी न्यायवंत।
हिन्दू राजा नीचा वाजसी, म्लेच्छ होवसी वलवंत। ९।

नीच कुलरा राजा वाजसी, करसी खोटा खोटा न्याय।
ज्यारे घर में लोहो लावसी, सो धनवंत कहाय। १०।

संवत उगणीसे वर्ष इकसठे, चित्तौडगढ़ कियो चौमास।
गुरु नन्दलाल तणे शिष्य जोड़िया, अल्प कियो रे समास।११।

पूर्व पुण्य से बहुरिध पामिया, आठ नारियां रा भरतार।
सांभल हो श्रोता सूरां ने, लागे वचन ज्यूं ताजणा।
कायर ने लागे नहीं कोय, सांभल हो श्रोता। टेर।

एक दिन धन्नोजी बैठा पाटिये, स्नान करे तिण वार।
आठों ही नारियां मिली प्रेम सूं, कूढ़ रही है जलधार। १।

सुभद्रा नारी चौथी तेहनी, मन में भई छे दिलगीर।
आंसू तो निकले तेना नैन सूं, संयम लेवे है मुझ वीर। २।

प्रेम धरी ने धनजी पूछियो, कामण क्यों हुई हो उदास।
शंका मत राखो मुझ आगले, कारण तो कहोनी विमास। ३।

कामण कहे हो कान्ता म्हायरा, वीर ने चढ़ियो वैराग।
एक २ नारी नित की परिहरे, संजम लेने रो दिल में लाग। ४

धनजी कहे ए भोली बावली, कायर दीसे छै थारो वीर।
संयम लेनो तो दिल में धारियो, तो क्यांरी कर रह्या ढील।५।

नारी कहे हो कन्ता मांयरा, मुख से बनाओ फोकट बात।
ए सुख छोड़ी ने बाजो शूरमा, जदइ जानूंगी सांची बात। ६

तत्क्षण धन्नोजी उठ कर बोलिया, कामण रहोजो मांसू दूर।
सयम लेवाला इण हीज अवसरे, जद ही बाजाला जग में सूर।

बेकर जोड़ी ने सुन्दर विनवे, हांसी के वश कह्या बोल।
काची की साची न कीजे साहिबा, हिवड़े विमासी बायर खोल

संयम लेणो तो साहिब सोहिलो, ममता मारी ने समता धार।
बाविस परीषह सहणा दोहिला, संजम खांडे री छै धार। ९ ।

पांव उवराना पियुजी चालणो, दोरो छे पाद विहार।
घर घर तो फिरनो साहिब गोचरी, नीरस मिलसी आहार।१०।

सियाले में हो पियुजी सी पड़े, उनाले वाजे लुवा वाय।
चौमासे में हो मैला कापड़ा, ओ दुःख थासु सह्यो नहीं जाय।११।

उत्तर प्रत्युत्तर हुवा अति घणा, आया सनला के भुवन उछाह।
दोनों मिल साथे संयम आदरां, कायर उतरोनी नीचे आव।१२।

साला बहनोई संयम आदरियो, वीर जिनन्दजी रे पास।
शालिभद्रजी सर्वार्थ सिद्ध गया, धन्नाजी शिवपुर वास। १३ ।

सम्वत् उगणीसे इकसठ साल में, कीनों गढ़ चित्तौड़ चौमास।
मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावियो, वंछित फलेगी सब आस।१४।

(३७२)

। सिद्ध अरिहन्त में मन रमाते चलो ।

सिद्ध अरिहंत में मन रमाते चलो, सब कर्मों के बंधन हटाते चलो।
इन्द्रियों के न घोड़े विषयों में अड़े, जो अड़े भी तो संयम के कोड़े पड़े।
तन के रथ को सुपथ पर, चलाते चलो। १ ।

संत निर्ग्रंथ का ध्यान धरते चलो, पापों की वासनाओं से डरते चलो।
सद्गुणों का परम धन, कमाते चलो। २ ।
लोग कहते हैं भगवान आते नहीं, माता मरुदेवी जैसे बुलाते नहीं।

चन्द्रमा जैसी दृढ़ता, दिखाते चलो । ३ ।

लोग कहते हैं भगवान आते नहीं, मोह माया ममता मिटाते नहीं ।
आत्म भावों की ध्वनियां, गुंजाते चलो । ४ ।

दुःख में तड़पे नहीं, सुख में फूले नहीं, प्राण जाये मगर धर्म भूले नहीं ।
प्रेम श्रद्धा के बल को, बढ़ाते चलो । ५ ।

वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी, सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी ।
ऐसा विश्वास दिल में, जमाते चलो । ६ ।

सूर्य और चन्द्र जब तक चमकता रहेगा,
तेज सच्चे धर्म का दमकता रहेगा ।
जैन शासन रसिक, जग बनाते चलो । ७ ।

(३७३)

। सायब भले विराजो जी ।

सायब भले विराजो जी, श्री चौबीसी महाराज मुगति में भले
विराजो जी । टेर ।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपास ।
चन्दा प्रभुजी सुविधि जिनेश्वर, शीतल दो शिव वास । सायब .।१।

श्री श्रेयांस वासु पूज्य सुमरो, विमल-विमल मति वन्त ।
अनन्त नाथजी धर्म जिनेश्वर, शांति करो श्री संत । सायब .। २ ।

कुन्थु नाथ प्रभु करुणा सागर, अरनाथ जगदीश ।
मल्लीनाथजी ने मुनि सुव्रत जी, नित्य नमाऊं शीस । सायब....। ३ ।

गच्छ-भार-धुरन्धर, सुन्दर शशिहर शोभ।
करे सारण वारण, गुण छत्तीसे थोभ। ७।

श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जिम गंभीर।
तीजे पद नमिये, आचारज गुण धीर। ८।

श्रुतधर गुण-आगर, सूत्र भणावें सार।
तप विधि संयोगे, भाखे अर्थ विचार। ९।

मुनिवर गुण-युक्ता, कहिये ते उवज्झाय।
पद चौथे नमिये, अहर्निश तेना पाय। १०।

पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार।
तपसी गुणधारी वारें विषय विकार। ११।

त्रस थावर पीहर, लोक मांहि जे साध।
त्रिविधे ते प्रणमू, परमारथ जिण लाध। १२।

अरि करि हरि सायन, डायन भूत वेताल।
सब पाप पणासे, वरते मंगल माल। १३।

इण सुमरियां संकट, दूर टले तत्काल।
इम जंपै जिनप्रभ, सूरी शिष्य रसाल। १४।

(३७५)

। सुख दुःख एक समान मनवा।

सुख दुःख एक समान, मनवा सुख दुःख एक समान।
ज्ञान तराजू लेकर तोलो, मिटे सभी अज्ञान। मनवा।

यह तो सर्व विदित है तप से, कर्म सभी कट जाते हैं।
'वीरप्रभु' स्वाध्याय को, 'आभ्यन्तर' तप बतलाते हैं।
नर पुंगव जो इसको आलस, तज करके अपनाते हैं।
सुर दुर्लभ इस जीवन को बस, वे ही सफल बनाते हैं।
बाकी का तो जनम अरे! है, केवल कौड़ी कानी का।२।

ज्ञान-शून्य तो मानव जग में, जीवन व्यर्थ गंवाता है।
आत्म का-परमात्म का न, पता उसे कुछ पाता है।
चौरासी के चक्कर में फंस, कष्ट अनेक उठाता है।
अन्त कभी भी कष्टों का न, उस के फिर तो आता है।
दुख का ही बस बनता सागर, जीवन उस अज्ञानी का।३।

राग-द्वेष का लेश नहीं है, देखो तो 'जिनवाणी' को।
पार तभी भवजल से पल में, करती है ये प्राणी को।
एक बार भी देखा जिसने, श्रद्धा से कल्याणी को।
पावन परम बनाया उसने, अपनी इस जिन्दगानी को।
पग-पग पर ही परम लाभ है, काम भला क्या हानि का।४।

जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन की कली खिलायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन को शान्त बनायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, मन का तमस् मिटायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय आपके, सारे कष्ट भगायेगा।
जिनवाणी-स्वाध्याय अतः, कर्त्तव्य प्रथम है प्राणी का।५।

जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, आप स्वयं को जानेंगे।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, सत्यासत्य पहचानेंगे।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, हठ न झूंठी ठानेंगे।
जिनवाणी-स्वाध्याय से ही, न्याय वचन को मानेंगे।
वैठेंगे न कभी विलौना, भर करके फिर पानी का। ६।

नियम अतः स्वाध्याय करन का, अय बन्धो ! अब करियेगा।
तरने के शुभ पथ पे अपने, कदम मुस्तैदी धरियेगा।
सफल मनोरथ आप करेंगे, नहीं जरा भी डरियेगा।
काल अनादि के दुःख-संकट, सारे अपने हरियेगा।
कठिन नहीं सुलझाना कुछ भी, 'चन्दन' उलझी तानी का।७।

(३७७)

। सुखी न मिलियो एक भी।

मैं तो ढूंढ़यो रे सहु जग मांय, सुखी न मिलियो एक भी। टेर।

हाट हवेली भर्या खजाना, भोगण वालो नाय।
भाटो भाटो देव मनावे, पुत्र के बिना झूरे माय। सुखी।

पइसो पायो नाम कमायो, करे सवाई बात।
कुंवर साव कपूता जनम्या, बापूजी रोवे दिन रात। सुखी।

पदमण मिली दयालु कहीं पर, सेठ न लावो लेय।
मिली कर्कशा नार कर्म सूं, खावे ना खावण देय। सुखी।

छप्पर पलंग है महल मालिया, जाली झरोखादार।

ले आज बतादूं मेरी मां ने, कैसा दूध पिलाया।
हो मुझको कैसा दूध पिलाया।

नारी को, दुनियांदारी को, यह चला मैं ठोकर मार के।
अब संयम पाल दिखाऊंगा। ५।

सुभद्रा—स्वामी! स्वामी! कहां जाते हो? हंसी को सांच न मानो।
फिर से ऐसा नहीं कहूंगी, मानो, मानो, मानो।
हो स्वामी एक बार बस मानो।

यह तेरी, चरणों की चेरी, इसे करदो क्षमा प्रदान रे।
तुम यों मत छोड़ चले जाओ। ६।

धन्ना—वचन बाण का घायल शूरा, लौट कभी ना आये २।
चाहे हो बलिदान प्राण का, अपनी टेक निभाये।
हो भगिनी अपनी टेक निभाये।

जाऊंगा, बस अब जाऊंगा, मैं कठिन तपस्या धार के।
मुक्ति महल ही जाऊंगा। ७।

कवि—प्रण पालक अहो शूर शिरोमणि, धन्य है धन्ना तुमको २।
इतिहास तुम्हारा पढ़ पढ़ होता, गर्व हमारे दिल को।
हो धन्ना! गर्व हमारे दिल को।

जय रमणि! धन तेरी जननी! जिसने जना है तुझसा पूत रे।
"पारस" तेरा गुण गाए। ८।

। सुनलो जैनों कान लगाकर ।

(तर्ज : आओ बच्चों तुम्हें........)

सुनलो जैनों कान लगाकर, वाणी तारणहार की।
छोड़ो क्रोध लोभ मद माया, गलियां नरक द्वार की।
हित की बात है २ । ध्रुव ।

क्रोध :—गुस्से से तन दुर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता।
तेज चला जाता आंखों का, ज्ञान रहित मन बन जाता।
अकल न जाने कहां जाती है, ज्ञानी और गंवार की। सुनलो।१।

मान :—मानी के सब दुश्मन बनते, कोई मित्र नहीं बनता है।
कोई उसकी बात न माने, साथ न कोई देता है।
फिर भी कहता हम है चौड़े, सकड़ी राह बजार की। सुनलो।२।

माया:—औरों के लिए जाल बिछाता, मगर वही उसमें फंसता।
औरों के लिए खड्डा खोदे, मगर वही उसमें गिरता।
सच कहता हूं जग में माया, जननी दुःख अपार की। सुनलो।३।

लोभः—पूज्य पिता से लड़ता लोभी, भाई की हत्या करता।
केवल नश्वर धन के खातिर, दुनिया से दंगा करता।
लोभ पाप का बाप न करता, परवाह अत्याचार की। सुनलो।४।

इनको त्यागेंगे वे भविजन, भव भव में सुख पायेंगे।
जन्म जरा और मरण मिटा कर, शिव नगरी में जायेंगे।
'पारस कहता सुनलो जैनों, गुरु [illegible] अणगार का। सुनलो।५।

। सुकृत करले रे ।

(तर्ज : पनजी मूंडे बोल.... ...)

सुकृत करले रे, माया का लोभी, संग चलेगा रे । टेर ।

ऐसो मनुष्य जमारो पाके, अब तो लावो लीजे रे ।
कुटुम्ब कबीला धन दौलत में, चित्त न दीजे रे । १ ।

इस धन कारण देश परदेशा, धूप गिणी नहीं छाया रे ।
करे नौकरी बहु नर नारी, जोड़े माया रे । २ ।

महंगो कपड़ो कभी न पहरे, दिन काढ़े कुकस खाई रे ।
सोनो रूपो नहीं पहरण दे, घर के माँही रे । ३ ।

तू जाणे धन लारे आसी, बांधे गांठां गाढ़ी रे ।
अन्त समय हाथां की बींठी, लेगा काढ़ी रे । ४ ।

नहीं खावे नहीं खरचे मूरख, दान देता कर धूजे रे ।
छाछ तणो पाणी नहीं घाले, घर में गाया दूजे रे । ५ ।

अण चिन्त्यां की सुणले मूंजी, काल नगारा देगा रे ।
कठी डोरा मोहरा थैलियां, धरी रहेगा रे । ६ ।

'चौथमल' कहे अखूट खजाना, धर्म का धन कमावो रे ।
दया शील तप दान करी, मुक्ति में जावो रे । ७ ।

दुनियां झूठी जाल भयंकर, है मिजमानी का।
कर ले धर्म कमाई नहीं घर, आगे नानी का। ९।

कर समता संतोष, आसरा छोड़ विरानी का।
धर्म शुक्ल शुभ ध्यान सदा होता ब्रह्मज्ञानी का। १०।

(३८४)

॥ सुणो चन्दाजी सीमिंधर पर ॥

सुणो चन्दाजी सिरिमिंघर पर मातम पास जाव जो
मुज विनतडी प्रेम धरी ने, एणी तुम संभलाव जो

जे त्रण भुवन ना नायक छे, यस चोसठ इन्द्र याचक छे।
नाणि दरिसण जेने क्षायक छे, सुणो चन्दा जी। १।

जेनी कंचन वरणी काया छे, जस घोरी लंचन पाया छे।
पुंडरिक गिरि नयरी ना राया छे, सुणो चन्दाजी। २।

वारह परिषदा मांही विराजे छे, चोतिस अतिशय छाजे छे।
गुण पेतीस वाणी गाजे छे, सुणो चन्दाजी। ३।

भवियण ने ते पड़ि बोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे से।
रूप देखी भवियण मोहे से, सुणो चंदाजी। ४।

मैं सेवा करवा रसियो छूं, पण भारत मां दूरे वसियो छूं।
महा मोह राय करि फसियो, छूं सुणो चंदाजी। ५।

जिन उत्तम पूठ हवे पूरो कहे "पदम विजय" थाऊं सूरो।
तो वधे मुज मन अति नूरो, सुणो चंदाजी। ६।

(३८५)

॥ सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा ॥

सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा।
बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा। टेर।

उसी के हृदय में लगन तेरी होगी।
जिसका कि पुण्य उदयमान होगा। सुबह। १।

जिसने भी हृदय में तुझे टटोला।
लगा खाक तन पे क्यूं हैरान होगा। सुबह। २।

तेरे नाम से जो भी गाफिल रहेगा।
समझ लो बड़ा ही वह नादान होगा। सुबह। ३।

जिसे मन में हर दम भजन तेरा होगा।
वह वैकुण्ठशाही वह स्थान होगा। सुबह। ४।

तूं बेचैन मत हो, तूं पी प्रेम प्याला।
इसे जो पिये वो कदरदान होगा। सुबह। ५।

(३८६)

॥ सुदर्शन श्रावक, पूरण प्रिय धर्मी ॥

(तर्ज : ख्याल)

सुदर्शन श्रावक, पूरण प्रिय धर्मी श्री महावीर नो। टेर।

राजगृही का बाग में सरे, वीर विचरता आया।
सुनी बात सुदर्शन श्रावक, हृदय हर्ष भराया।

(३८७)

ले आज्ञा निज मात तात की, तुरन्त वन्दना आया रे। १।

देवाधिष्ठ कोप्यो थको स तिण, अवसर अर्जुन माली।
नगरी में चहुँ फेर फिरेस वो, कर में मुद्गल झाली।
बीत गया छः मास हणे नित, छः छः पुरुष एक नारी रे। २।

ते तिणने रस्ता में मिलियो, देख रह्या नर नारी।
सागारी अनशन कर लीनो, मन में निश्चय धारी।
कुछ नहीं चाल्यो जोर देवता, निकल गयो तिण वारि रे। ३।

अनशन पार लार लेई अर्जुन, आया बाग में चाली।
वीर वांद वाणी सुन संयम, लीनो अर्जुन माली।
छः महीने में मोक्ष गये सब, जनम मरण दुःख टाली रे। ४।

ऐसा श्रावक होय गुरु की, सदा भक्ति मन भावे।
कभी कष्ट व्यापे नहीं सरे, जग मांहीं जस पावे।
महामुनि 'नन्दलाल' तणा शिष्य, जोड़ करी इम गावे रे। ५।

(३८७)

॥ सुनो वीर की वाणी ॥

(तर्ज : पंजाबी)

सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुनो वीर की वाणी।
धर्म अहिंसा मुख्य बताया, सब धर्मों का राजा।
बे गुनाह कोई जीव मारना, महा पाप बतलाया।
चींटी से हाथी तक जितने, दिखते तुम्हें जिनावर।

सभी चाहते सुख से रहना, आत्मा एक बराबर।
पेड़ वनस्पति पानी आदि, सब में जीव निशानी।
इसीलिये तो बतलाया है, पीओ छान कर पानी।
कोई मैं झूठ बोलिया, कोईना, भई कोईना। १।

झूठ बराबर पाप न जग में, झूठा ठोकर खाता।
घर बाहर और राज्य सभा में, कहीं न आदर पाता।
झूठ बोलने वाले का, विश्वास न कोई लाये।
झूठ बोलना छोड़ो रे भाई, प्राण भले ही जाये।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुणो वीर की वाणी।
कोई मैं झूठ बोलिया........३। २।

घर वाले सब भूखे मरते, घर की हुई तवाही।
इस पापी चण्डाल जूए से, अपनी जान बचानी।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुनो वीर की वाणी।
कोई मैं झूठ बोलिया........३। ४।

पर की माता वहनो को, न बुरी नजर से देखो।
काम वासना कभी न लाओ, माता वहन सम जानो।
इसीलिए रावण को देखो, अपनी जान गंवाई।
मान प्रतिष्ठा धन सम्पत्ति, सब यूं ही लुटवाई।
उच्च भावना रक्खो हर दम, निर्मल हो जिन्दगानी।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुणो वीर की वाणी।
कोई मैं झूठ बोलिया........३। ५।

इन दुर्व्यसनो को रे भाई, शुद्ध मन से तुम त्यागो।
ऐसे दुष्ट पापों से भाइयों, दूर दूर सब भागो।
यह अमोलक मनुष्य जन्म, ए वन्दे तूने पाया।
महावीर के फरमानों का, सव ने मिल गुन गाया।
महावीर के फरमानों की, सवने शान वढ़ानी।
सुनो वीर की वाणी रे भाइयों, सुणो वीर की वाणी।
कोई मैं झूठ वोलिया.... ...३। ६।

(३८८)

। सेवो सिद्ध सदा जयकार।

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जासे होवे मंगलाचार। टेर।

कर्म-मैल ने शीघ्र हटावे, आतम ना गुण सब प्रगटावे।
जन्म मरण ना दुःख मिटावे, होवे परम कल्याण। सं०।२।

संयम ना गुण प्रभु खुद गावे, हलु कर्मी जीवां मन भावे।
हुलस भाव से उठ अपनावे, मोह ममता को मार। सं०।३।

परम औषधि संयम जाणो, तीन लोक नो सार पिछाणो।
शुद्ध समझ हृदय में आणो, अनुपम सुख की खान। सं०।४।

तजे रिद्ध संयम अनुराधे, जिन आज्ञा ने राखे आगे।
निश दिन संयम में चित्त लागे, धन धन वे अणगार। सं०।५।

काम कषाय को तजे हुलसाई, निंदा विकथा दी छिटकाई।
तप संयम में लीन सदा ही, धन जेनो अवतार। सं०।६।

(३६०)

॥ संवत्सरी आया पर्व महान ॥

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत....)

धन्य धन्य है दिवस आज का, सुनो सभी इन्सान।
संवत्सरी आया पर्व महान् ॥

राग द्वेष को त्याग के सारे, गावो प्रभु के गान।
संवत्सरी आया पर्व महान्। टेर।

गुरु चरणों में सारे आके, विनय से अपना शीश झुकाके।
रगड़े झगड़े सभी मिटाके, अपने दिल को साफ बनाके।
प्राणी मात्र से मिल कर सारे, मांगो क्षमा का दान। १।

यही पर्व उद्धार करेगा, नव जीवन संचार करेगा।
जो जन इसको प्यार करेगा, उसके सब सन्ताप हरेगा।
इसी पर्व से मिलेगा तुझको, मुक्ति का वरदान। २।

भेद भाव को दूर निवारो, जागो वीरो उठो विचारो।
जीती वाजी व्यर्थ न हारो, मिल कर आज प्रतिज्ञा धारो।
जैन धर्म का तन मन धन से, करेंगे हम उत्थान। ३।

पांचों के सब बन्धन तोड़ो, मोह और ममता को छोड़ो।
विषयों से मन अपना मोड़ो, सच्चा प्रभु से नाता जोड़ो।
'चन्द्रभूषण' जियो जीने दो, यही वीर फरमान। ४।

(३९१)

॥ संसार में आया उसे ॥

(तर्ज : दुनियां में हम आये हैं तो....)

ससार में आया उसे जाना ही पड़ेगा।
घर और कहीं जाके बसाना ही पड़ेगा। ध्रुव।

उड़ते हुए पंछी ने लिया रैन बसेरा।
उड़ना ही पड़ेगा उसे होते ही सवेरा।
कल रात कहीं और बिताना ही पड़ेगा। संसार........। १।

बबूल बोयेगा तो उसे कांटे गड़ेंगे।
और आम बोयेगा तो उसे आम मिलेंगे।
सुख चाहे उसे कांटे बचाना ही पड़ेगा। संसार........। २।

भिखारी से लेकर बड़े २ से मर गये ।
लाखों यहां पर जल गये लाखों ही गड़ गये ।
तेरे लिए भी कफन मंगाना पड़ेगा । संसार.... . । ३ ।

'केवल मुनि' चमकेगा जो शुभ काम करेगा ।
गाएगी गीत दुनियां जो तू नाम करेगा ।
तू मान या न मान सुनाना ही पड़ेगा । संसार ... ...। ४ ।

(३९२)

॥ श्वासों का क्या ठिकाना ॥

(तर्ज : चलते २ यूं ही कोई मिल गया)

श्वासों का क्या ठिकाना, रुक जाय चलते २ ।
प्राणों की रोशनी भी, बुझ जाय चलते २ । टेर ।

जीवन है स्वप्न जैसा, दो दिन का है बसेरा २ ।
आयेगी मौत निश्चित २, ले जाय बचते २ । प्राणों । १ ।

जीवन है इक तमाशा, पानी में ज्यों बताशा २ ।
आयेगी मौत निश्चित २, ले जाय बचते २ । प्राणों । २ ।

आयेगा एक झोंका, जीवन का दीप हैं गुल २ ।
पेड़ों पर चहचहाती २ निष्पंद है ये बुलबुल । प्राणों । ३ ।

कितने ही घर बसाये, कितने ही घर उजाड़े २ ।
स्थाई रहा न राही, श्वासों के घटते २ । प्राणों । ४ ।

अरमान लम्बे बांधे, टूटे न तार सांधे।
अन्तिम समय में सब ही, रहे हाथ मलते २। प्राणों। ५।

आया था हाथ खाली, खाली ही जा रहा है।
परिवार और प्रियजन, ले जाय हटते हटते २। प्राणों। ६।

श्वासों के ही सहारे, जीवन के खेल सारे।
श्वासों का यह पिटारा, जुक जाय चुकते २। प्राणों। ७।

श्वासों के तार सारे, प्रभु नाम के सहारे २।
बांधेंगे वे अमर नर, मर जाय हंसते २। प्राणों। ८।

सुखपूर्ण स्वर्ण अवसर, रे मूर्ख यों न खो रे।
'विचक्षण' अमर से तरजा, प्रभु नाम रटते २। प्राणों। ९।

(३९३)

॥ शिक्षा हितकारी ॥

(तर्ज : होवे धर्म प्रचार प्यारे भारत में)

हैं उत्तम जन आचार, सुनलो नरनारी।
तूं धार सके तो धार, शिक्षा हितकारी। टेर।

(१) जुआ—

जुआ खेलना बुरा व्यसन है, धन छीजे दुःख भोगे तन है।
हारे राजकोष सब धन है, पांडव हारी नार। शिक्षा। १।

नल भूपति ने राज गंवाया, दमयंती संग अति दुःख पाया।
बड़े बड़ों का मान विलाया, जाने सब संसार। शिक्षा। २।

(२) चोरी—

चोर दण्ड पाते नित देखो, राज समाज में निन्दा देखो।
रहता नहीं भरोसा देखो, करे न कोई एतबार। शिक्षा। ३।

(३) वेश्यागमन—

वेश्या और परस्त्री त्यागो, रावण कुल में हुओ अभागो।
सीता को लेकर वह भागो, हुआ सकल संहार। शिक्षा। ४।

(४) परस्त्रीगमन—

लंपट तन धन का बल खोवे, सुख की नींद कभी नहीं सोवे।
फल भुगतन की बेला रोवे, त्याग करो नरनार। शिक्षा। ५।

(५) मांस—

मद्य मांस नहीं खाणो पीणो, दुर्व्यसनों से दूर ही रहणो।
नशो भूलकर भी नहीं करणो, बुद्धि बिगाड़ण हार। शिक्षा।६।

(६) मद्य—

प्याली पी कई जन्म बिगाड़े, गली नली में पड़त निहाले।
कुत्ते भी आकर मुंह चाटे, हंसे बाल गोपाल। शिक्षा। ७।

(७) तमाखू—

बीड़ी और तमाखू छोड़ो, केन्सर से मत नाता जोड़ो।
धन जन का है नाश करोड़ों, मन से दो दुत्कार। शिक्षा। ८।

जैन धर्म का सार यही है, दुर्व्यसनों से लाभ नहीं है।
व्यसन बिगाड़े जन्म सही है, होते जन बेकार। शिक्षा। ६।

(३९४)

॥ हँसा निकल गया काया से ॥

हंसा निकल गया काया से, खाली पड़ी रही तस्वीर । टेर ।

कोई मनावे देवी देवता, कोई मनावे पीर ।
उस घर का परवाना आया, जाना पड़ा आखीर । हंसा । १ ।

कोई न्हलावे कोई धुलावे, कोई ओढ़ावे चीर ।
चार जणा मिल मतो उपायो ले गये यमुना तीर । हंसा । २ ।

कोई जिमावे लड्डु पेड़ा, कोई जिमावे खीर ।
कुटुम्ब कबीला हिलमिल जीमें, कोई न बंधावे धीर । हंसा ।३।

माता रोवे जनम जनम तक, वहिनां बार तिवार ।
भीड़ पड्या पर भाई रोवे, त्रिया तीज त्योहार । हंसा । ४ ।

राजा जावे प्रजा जावे, जावे लोग वजीर ।
पुण्य-पाप संग दोनों जावे, कह गये दास कबीर । हंसा । ५ ।

(३९५)

। हम भूल गये हैं जिनको ।

(तर्ज : ए मेरे वतन के लोगों)

जिन धर्म के प्यारे लोगों, ये सुनलो अमर कहानी ।
हम भूल गये हैं जिनको, जरा याद करो कुर्बानी । टेर ।

वो सेठ सुदर्शन जिनको, रानी ने कलंक लगाया ।
शूली पर चढ़ कर जिसने, महामंत्र का ध्यान लगाया ।

शूली का वना सिंहासन, सब लोग हुए सिरनामी। हम। १।

वारह वर्ष अञ्जना की, प्रीतम से हुई जुदाई।
इक पल प्रीतम का पाया, तूफान की आंधी आई।
घर छोड़ जंगल में भटकी, है आज वो अमर कहानी। हम।२।

विजय सेठ विजया सेठानी, नई उमर थी नई जवानी।
ब्रह्मचर्य जीवन दोनों के, कैसे बीती जिन्दगानी।
क्या प्रेम था पति-पत्नी का, देवों ने महिमा बखानी। हम।३।

राजा ने वलि चढ़ाने, ब्राह्मण का लाल खरीदा।
वो अमर कुमार नन्हा सा, जल्लाद ने खंजर खींचा।
नवकार का ध्यान लगाते, वो धरती थर थर कांपी। हम।४।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र राजा, एक पल में वने भिखारी।
मरघट में विक गया राजा, और विक गई तारा रानी।
वो अटल रहे थे सत्य पर, फिर हो गई सब आसानी। हम।५।

एक राजा की दो वेटी, सुर सुन्दरी मैना प्यारी।
मैना पे क्रुद्ध हो राजा, कोढ़ी संग करदी शादी।
पति संग तप किया था उसने, हो गई काया सुहानी हम।६।

वाहुवल थे भरत के भाई, आपस में लड़ी लड़ाई।
वाहुवल ने जीत लिया था, पर लाज भाई की आई।
तज वैभव वन गये योगी, वो वीर थे स्वाभिमानी। हम। ७।

भारत मां तेरी धरती, है आज यह कितनी प्यारी।

अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह राग वितान । १ ।

मम स्वरूप है सिद्धि समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान।
किन्तु आस वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अज्ञान ।२।

सुख दुख दाता कोई न आन, मोह राग यह दुख की खान ।
निज को निज पर को जान, फिर दुख का नहीं लेश निशान ।३।

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्याग पहुँचूँ निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम।
दूर हटो पर कृत परिणाम, सहजानंद रहूं अभिराम । ४ ।

(४००)

हे मालिक तेरे वन्दे हम ।

(तर्ज : हे मालिक तेरे वन्दे हम)

हे मालिक तेरे वन्दे हम, ऐसे हो हमारे कर्म ।
नेकी पर चले और वदी से टले, ताकि हंसते हुए निकले दम।

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है उसमें कमी ।
पर तू जो खड़ा है दयालु वड़ा, तेरी कृपा से धरती थमी ।
दिया तूने हमें जव जन्म, तू ही झेलेगा हम सव के गम । १ ।

जव जुल्मों का हो सामना, तव तू ही उन्हें थामना ।
जो वुराई करे, हम भलाई करें, नहीं वदले की हो भावना ।
वढ़ चले प्यार का हर कदम, और मिटे वैर का ये भरम ।२।

। है जिसने घड़ी तेरी घड़ी ।

(तज : तू हिन्दू बनेगा न....)

है जिसने घड़ी, तेरी घड़ी, ठीक घड़ी हैं ।
घड़ियां हैं बहुत, पर वो घड़ी एक घड़ी है । टेर ।

उसने तो घड़ी काम के, खातिर थी बनाई ।
तूने धरी टेबल पे, कलाई पे लगाई ।
टिक टिक यह करती है, नित्य देती है दुहाई ।
क्यों मस्त है घड़ियों में, घड़ी अपनी भुलाई ।
सिर पे जो खड़ी देख, उसे कैसी घड़ी है । १ ,

घड़ियां तो बिगड़ती हैं, संवरती हैं जहां में ।
कायम वह कहां रहती है, तू देख जहां में ।
लोहे कांच की घड़ियां, बनी है जहां में ।
उस जैसी घड़ी एक न, बनती है जहां में ।
आये न फर्क जिसमें, कभी ऐसी घड़ी है । २ ।

सेकन्डों से मिनट और, मिनटों से घन्टा बनाया ।
दिन साल बीत गए यूं ही वक्त गंवाया ।
विज्ञान चलाया, ज्योतिष हैं लगाया ।
उस असली घड़ी का तो, 'अमर' भेद न पाया ।
रुकती न घड़ी भर वो घड़ी ऐसी घड़ी है ।

धर्म पर डट गये पारसनाथ, बचाया जिन्होंने जलता नाग,
मन्त्र से तिरा देना, है वीरों का काम ....। २ ।

धर्म जब गौतम को भाया, जिन्होंने घर-घर अलख जगाया,
जैन का पाठ पढ़ा देना, है वीरों का काम........। ३ ।

धर्म पर डट गये सेठ सुदर्शन, सुली का हुक्म दिया जब राजन,
सुली पर चढ़ जाना, है वीरों का काम ....। ४ ।

धर्म पर चन्दन बाला नार, घर २ बिक सहे कष्ट अपार।
शील को नहीं तजना, है वीरों का काम ... ..। ५ ।

धर्म पर जम्बू राजकुंवार, त्याग दी जिसने आठों नार,
चोरों को चेला बना लेना, है वीरों का काम........। ६ ।

धर्म पर डट गये हरिशचन्द्र दानी, जिन्होंने कीना भेष मुसानी।
सत्य पर डटे रहना, है वीरों का काम ... ...। ७

धर्म के खातिर अब मुनिराज, जी चलते नंगे पैरों आज,
सुखे टुकड़े भी चबा लेना, है वीरों का काम....। ८ ।

जाग अब जाग ओ जैन समाज, सजाले 'जीत' धर्म के साज,
वक्त पै शीस कटा देना, है वीरों का काम........। ९ ।

(४०५)

। है निन्दा पाप महान ।

(तर्ज : तेरे द्वार खड़ा भगवान, भगत)

है निन्दा पाप महान, भगत बच जारे इससे ।

हो करके हंस समान जा रहा, किधर अरे धीमान। भगत।टेर।

घर की रोटी खाकर मेल,

दूसरों का जो धोना।

धोबो से भी नीच काम,

पड़े जनम जनम में रोना रे, हा जनम।

कर शास्त्रों का कुछ ज्ञान,

अरे कर्त्तव्य जरा पहिचाना। १।

सदगुण मिले अनेकों उन पर,

ध्यान कभी नहीं जाता।

दुर्गुण जैसे मिले कहीं पर,

ताक हमेसा लगाता रे, हां ताक।

ज्यों सूकर का ध्यान,

गंदगी पे रहे तज पकवान। भगत। २।

स्वर्ण समान मनोहर तन पर,

मक्खियें नहीं लुभाती।

किन्तु घाव कहीं पर हो तो,

उमड गुमड मंडराती रे, हां उमड।

मत बन ए मक्खी समान

मनुष्य कहला के बुद्धिमान। ३

ऊंच नीच सहे वचन जगत के, क्षमाभाव मन लाय।
आशीर्वाद शाप नहीं देते, नशा पता नहीं चाय। ३।

मुंह पर सदा मुंहपति राखे, सच्चा ज्ञान सुनाय।
त्यागी तपसी मनिराजों के, चरणों शीश नमाय। ४।

(४०८)

। हां थाने जाणो-जाणो जरूरी।

(तर्ज : जाना जरूर होगा)

नहीं भाख्या, मुख से बोली घणी झूंठ ।
धाड़ा पाड़िया लूट २, जन्त्र-तन्त्र मारी मूठ, दीनानाथजी । १५ ।

हो नाथजी ओगुण वाद गुरां तणां वोल्या घणा, अण सोचता ।
मैं नहीं जाण्यो अज्ञानी, निन्दा कीनी छानी छानी ।
नहीं धाम्यो आहार पानी, दीनानाथी । १६ ।

हो नाथजी भली भली भांत का, कई जात का, खाया रात का ।
पिया अण छाणा पानी, मन में करुणा नहीं आणी ।
पर पीड़ा नहीं पिछानी, दीनानाथजी । १७ ।

हो नाथजी सासू सोक सुवासीनी सताइ घणी ।
मुख से वोल्या मीठा गाल, केई दिया कूड़ा आल ।
तपसी बूढ़ा रोगी वाल, ज्यांरी नहीं करी संभाल, दीनानाथजी ।१८।

हो नाथजी संशय किया मैं मोटका, कई छोटका हुआ खोटका ।
करी राख्या छाने पाप, सो तो देखी रया आप ।
म्हारे थेई मांय वाप, दीनानाथजी । १९ ।

हो नाथजी, स्त्री सूं भांत पड़ाविया, गर्भ गलाविया जीव जलाविया ।
मारी जूं ने फोड़ी लीक, वैठो पापी रे नजदीक ।
नहीं मानी थांरीं सीख, दीनानाथजी । २० ।

हो नाथजी, थांपण राखी पारकी, केई हजार की ।
साहुकारी की, कीनी सटपिट मांग्या, गया तुरत ही नट ।
लिया सेमुद्दाइ गीट, दीनानाथजी । २१ ।

पर भूमि पर भूप कीरे, तेरो यहां पर कौन।
वृथा माया में फंसी थे तो, भुगतो चौरासी जौन। हो०।३।

इस मुसाफिर खाने मांहीं, लख आवत लख जात।
सुकरत खर्ची पल्ले बान्धो, तू मत जा खाली हाथ। हो०।४।

भोर भये उठ जावनो रे, चार पहर की बात।
'चौथमल' कहे सुयश लीजो, ये जग में रह जात। हो०।५।

(४१२)

। हो जाने वाले।

हो जाने वाले ! दुनियां में नाम करजा।
भूले न जमाना कोई काम करजा....। १।

वही है भलाई, जो भुलाई करके।
कैसी वह भलाई, जो सुनाई करके।
स्वार्थों को सज्जना ! सलाम करजा....। २।

जमी जड़ जग से, हिलाई पाप की।
भक्ति सिखाई, भाई-माई-बाप की।
अपने को 'महावीर' 'राम' करजा । ३।

दूर कर खुदी का, ख्याल दिल से।
बदियों-बुराइयों को, निकाल दिल से।
पर उपकार सुबह-शाम करजा....। ४।

दीन-हीन दुखी जो बेचारे पड़े हैं।

कर्मों के मारे, बेसहारे पड़े हैं।

दूर दुख उनका, तमाम करजा........। ५।

बात है यह तेरे लिए, गहरे गौर की।
अपने ही जैसी जान, जान और की।

खुशी का खजाना, खास-आम करजा........। ६।

ऊपर तू चाहे, जितना कठोर हो।
करुणा का अन्दर, मगर जोर हो।

अपने को बांवरे ! बादाम करजा ....। ७।

कपट-कुटिलता, न कर कलेश तू।
मोह-द्रोह दिल से, विसार दे द्वेष तू।

सारा संसार, सुखधाम करजा ....। ८।

शुद्ध शील शान से, निभाया सेठ ने।
सूली का सिंहासन, बनाया सेठ ने।

चरणों में उनके प्रणाम करजा.... ...। ९।

सन्तों का संग हो, सुपात्र ध्यान हो।
तप हो या जप, हो या ज्ञान ध्यान हो।

'चन्दन' सभी तू निष्काम करजा........।१०।

(४१३)

। श्री शांतिनाथजी को कीजे जाप।

श्री शांतिनाथजी को कीजे जाप, क्रोड़ भवांरा काटे पाप।

शांतिनाथजी मोटा देव, सुर नर सारे जेहनी सेवा। १।

दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख सम्पत्ति पावे भरपूर।
ठग फांसीगर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग। २।

राजलोक मां कीर्ति घणी, शांति जिनेश्वर माथे धणी।
जो ध्यावे प्रभुजी नूं ध्यान, राजा देवे अधिको मान। ३।

गड़ गुम्बड़ पीड़ा मिट जाय, दोषी दुश्मन लागे पांव।
सघलो भांगो मन नो भ्रम, पामो समकित काटी कर्म।४।

सुणजो प्रभु मोरी अरदास, हूं सेवक तुम पूरो आस।
मुझ मन चिंतित कारज करो, चिंता आरति विघ्न हरो।५।

मेटो म्हारा आल जंजाल, प्रभु मुझने तूं नयन निहाल।
आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभुजी मारो काम।६।

जो नित-नित प्रभुजी रटे, मोती वंबा फूला कटे।
चेप लावण दोनों झड़ जाय, विण औषध कट जावे छांछ।७।

प्रभु नाम से आंख निर्मल थाय, धुन्ध पड़त जाला कट जाय।
कमल पीलो जल जल झरे, शांति जिनेश्वर साता करे।८।

गरमी व्याधि मिटावे रोग, सज्जन मित्र नो मिले संयोग।
ऐसा देव न दीखे और, नहीं चाले दुश्मन का जोर। ९।

लूंटारा सब जावें नाश, दुर्जन फीटा होवे दास।
शांतिनाथ की कीर्ति घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवन धणी।१०।

अरज करूं छूं जोड़ी हाथ, आपसूं नहीं कोई छानी वात।

देख रया छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप । ११ ।

मुझ मन चिंतित करीजे काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ।
तुम सम जग मांहीं नहीं कोय, तुम भजवाथी साता होय ।१२।

तुम पासे चाले नहीं रोग, ताव तेज रो नाको तोड़ ।
मरी मिटाई कीधी संत, तुम गुणना नहीं आवे अन्त । १३।

तुमने सुमरे साधु सती, तुमने सुमरे जोगी जती ।
काटो संकट राखो मान, अविचल पदनूं आपो स्थान ।१४।

संवत अठारे चौराणु जाण, देश मालवो अधिक बखान ।
शहर जावरे चातुर्मास, हूं प्रभु तुम चरणांरो दास ।१५।

ऋषि रुघनाथजी कीधो छंद, प्रभुजी काटो मारा फंद ।
हूं जोऊं प्रभुजी नो वाट, मुझ आरति चिन्ता सब काट ।१६।

(४१४)

। श्री जिनराज महाराज चौबीस जिनवरजी ।

श्री जिनराज महाराज, अर्ज मेरे मन की ।
तुम खेंचो हमारी डोर सूरत दरशन की (एदेशी)

श्री जिनराज महाराज चौवीस जिनवरजी ।
तुम रखो हमारी लाज सुनो गणधरजी । टेर ।

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन स्वामी ।
श्री सुमति पदम सुपार्श्व नमो शिर नामी ।

श्री चन्द्र प्रभु सुविधि नाथ शीतल गुण गाऊं ।
श्री श्रेयांस वासु पूज्य महाराज कूं शीश नमाऊं । श्री ।१।

श्री विमल अनन्त धर्मनाथ शान्ति जिन देवा ।
श्री कुन्थुनाथ अरनाथ की करता हूं सेवा ।
श्री मल्लिनाथ मुनि सुव्रत व्रत मोहे दीजे ।
नमिनाथ नेम महाराज पार मोहे कीजे । श्री । २ ।

श्री पार्श्वनाथ महावीर शरण रहूं तेरी ।
मैं छूं चरणां को दास, अरज सुनो मेरी ।
तुम चरणन की शरण विन काल अनन्त गमायो ।
अब जन्म भये मुझ सफल चरण तुम पायो । श्री । ३ ।

हुवो चउवीसों महाराज को शरणो हमारे ।
तुम विन नाथ अनाथ कहो कुण तारे ।
प्रभु दीनदयाल कृपाल सुनो तन मन की ।
तुम खेंचो हमारी डोर सूरत दरशन की । श्री । ४ ।

तुम दरशन विन महाराज काज मुझ विगड़्यो ।
तुम दरशन विन महाराज काल बहु भटक्यो ।
मुनि राम कहे महाराज पूरण करो आशा ।
मुझे रखो चरणों के पास न करिये निराशा । श्री । ५ ।

संभव जग त्राता, शिव मग दाता, दो सुख साता हित आणी।

अभिनन्दन देवा, सुमति सु सेवा, करो नित मेवा, रिपुघाता।
चौविस जिनराया मन वच काया, प्रणमूं पाया दो साता।चौ.।१।
श्री पद्म सुपासं, शशिगुण रासं, सुविधि सुवासं, हितकारी।
श्री शीतल स्वामी, अन्तरयामी, शिवगति गामी, उपकारी।
श्रेयांस दयाला, परम कृपाला, भविजन व्हाला, जगत्राता।चौ.।२।

वासुपूज्य सुखकंतं, विमल अनन्तं, धर्म श्री संतं सुखकारी।
कुन्थु अरनाथं, तज जग साथं, मल्लि सुवासं जगधारी।
मुनि सुव्रत सुनमि आत्मा ने दमि, दुर्मति ने वमी दुखहर्ता।चौ.।३।

रिष्ट नेमी वड़ाई, नार न व्याही, तोरण जाइ छिटकाई।
नाग नागिन ताई दिया बचाई, पारस सांई सुखदाई।
जय जय वर्द्धमानं, गुण निधि खानं, त्रिजग भानं शुद्ध ज्ञाता।चौ.।४

संसार का फंदा दूर निकंदा, धर्म का छंदा, जिन लीना।
प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भवि समझाया मुनि कीना।
कहे रिख तिलोकं सदा तस धोकं, दो सुख थोकं चित चाया।चौ,।५।

(४१७)

। श्री ऋषभ अजित ।

श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन।
सुमति, पदम, सुपारस, मन-रंजन।
चन्द्र प्रभूजी ने सेवो।

सुविधिनाथ, शीतल गुण गाऊं ।
श्री श्रेयांस, वासपूज्य, जी ने ध्याऊं ।
विमल, सुनिर्मल देवो । १ ।

अनन्त, धरम, श्री शान्ति जिनेश्वर ।
कुन्थुनाथ अति ही अखलेसर ।
वन्दू श्री अर नाथो ।
मल्लीनाथ मुनिसुव्रत, स्वामी ।
नमि, नेमीं, पारस, हितकामी ।
मिलियो मुगति नो साथो । २ ।

चौवीसवां श्री वीर जिनेश्वर ।
पर उपगारी प्रभु श्री परमेश्वर ।
पहुँचा पद निरवाणो ।
ए चौवीसां रा नित गुण गावे ।
दुख दारिद्र ज्यांरा दूर पलावे ।
वरते क्रोड़ कल्याणो । ३ ।

पुन जोगे मानव भव लाधो ।
चौबीसे जिनवरजी आराधो ।
लावों लेवोजी तुम लावो ।
ए चौबीस भजो सिर नामी ।
मोटा प्रभु साहिव अन्तर्यामी ।
श्री मुक्ति तणां दातारो । ४ ।

। श्री जिन आयाजी हो ।

श्री जिन आयाजी हो, प्रभुजी पधार्या जी हो ।
ऐ सोरठ देश मझार, हे द्वारमती नगरी भली । टेर ।

श्री जिन वन्द्या जी हो, प्रभुजी ने वन्द्याजी हो ।
है कुंवर गजसुखमाल, हे अमिय समाने वाणी मैं सुनी । १ ।

माई मैं तो वन्द्याजी हो, अमां मैं तो वन्द्याजी हो ।
हे तारण तिरण री जहाज, हे अमिय सामने वाणी मैं सुनी । २ ।

माई मैं को जाण्यो जी हो, अमां मैं तो जाण्यो जी हो ।
हे यो संसार असार, हे स्वारथियो जग में सहू । ३ ।

बच्चा तूं तो भोलो जी रे, जाया तूं तो भोलो जी रे ।
है संयम खाण्डे री धार, है बाइस परीषह सेहणा दोयला ।४।

माता मारो कालज हो, अमां मारो कालज हो ।
यो नहीं गिणे वार तिवार, ऐ क्या जाणू अमां किण विध आवसी ।५।

अनुमती दीनी जी हो, आज्ञा दीनी जी हो ।
है लियो संयम भार, लेकर काउसग्ग वन में रया । ६ ।

जठे सोमिल ब्राह्मण हो, जठे सोमिल ब्राह्मण हो ।
है दीठा गजसुखमाल, हे कोप कियो छे मुनिवर ऊपरे । ७ ।

वैर विशेक लियो, पूरव वैर जी हो ।
हें बांधी माटी री पाल, ऐ खेर राखो खीरा मस्तक मेलीया ।८।

मुनि समता आणी जी हो, जद समता आणी जी हो।
हे ध्यायो निर्मल ध्यान, ऐ कर्म निकाचित पिछला क्षय किया।९।

पाम्या पाम्या जी हो, पाम्या पाम्या जी हो।
पाम्या केवल ज्ञान, हे कर्म खपाई मुगते गया। १०।

ऐ गुण गाया जी हो, ऐ गुण गाया जी हो।
ऐ सरवर नगर मंझार, बेकर जोड़ी ने रतनो भणे। ११।

(४१९)

। श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।

श्री नेमीश्वर संभव स्वाम, सुविधि धर्म शान्ति अभिराम।
अनन्त सुव्रत नमिनाथ सुजाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण। १।

अजितनाथ चन्द्रा प्रभु धीर, आदिश्वर सुपार्श्व गंभीर।
विमलनाथ विमल जग जाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।२।

मल्लिनाथ जिन मंगल रूप, धनुष पच्चीस सुन्दर स्वरूप।
श्री अरनाथ नमूं वर्द्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।३।

सुमति पद्म प्रभु अवतंस, वासु पूज्य शीतल श्रेयांस।
कुंथु पार्श्व अभिनन्दन भाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण।४।

इण परे जिनवर संभारिये, दुःख दारिन्द्र विघ्न निवारिये।
पच्चीसे पैंसठ परमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण। ५।

इम भणता दुःख नावे कदा, जो निज पासें राखो सदा।

धरिये पंच तणूं मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।६।

श्री जिनवर नामे वांछित मिले, मन वांछित सहु आशा फले।
धर्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।७।

(४२०)

। श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो।

श्री महावीर स्वामी की, सदा जय हो सदा जय हो।
पतित पावन जिनेश्वर की, सदा जय हो सदा जय हो। टेर।

तुम्हीं हो देव देवन के, तुम्हीं हो पीर पैगम्बर।
तुम्हीं ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु, सदा जय हो सदा जय हो। १।

तुम्हारे ज्ञान खजाने की, महिमा बहुत भारी है।
लुटाने से बढ़े हरदम, सदा जय हो सदा जय हो। २।

तुम्हारे नाम महिमा से, जागती वीरता भारी।
हटाते कर्म लश्कर को, सदा जय हो सदा जय हो। ३।

तुम्हारी ध्यान मुद्रा से, अलौकिक शान्ति झरती है।
सिंह भी गोद पर सोते, सदा जय हो सदा जय हो। ४।

तुम्हारा संघ सदा जय हो, मुनि मोतीलाल सदा जय हो।
जवाहरलाल पूज्य वर की, सदा जय हो सदा जय हो। ५।

(४२१)

। श्री मुनि सुव्रत साहिबा।

(तर्ज : चेतरे-चेतरे मानवी-ए देशी)

आदि धर्म की कोधी हो, भरत क्षेत्र अवसर्पणी काल में।
प्रभु जुगल्या धर्म निवार।
पहिला नरवर मुनिवर हो, तीर्थंकर जिन हुवा केवली।
प्रभु तीरथ थाप्या चार। श्री। २।

मां "मरुदेवी" थारी हो, गज होदे मुक्ति पधारिया,
तुम जनम्या ही प्रमाण,
पिता नाभि महाराजा हो, भवदेव तणो करी नर थया,
प्रभु पाम्या पद निर्वाण। श्री। ३।

भरतादिक सौ नंदन हो, वे पुत्री "ब्राह्मी" "सुन्दरी",
प्रभु ए थारा अंग जात।
सघला केवल पाया हो, समाया अविचल जोत में,
कांई त्रिभुवन में विख्यात। श्री! ४।

इत्यादिक वहु तार्या हो, जिन कुल में प्रभु तुम ऊपना,
कांई आगम में अधिकार।
और असंख्या तार्या हो, ऊद्धार्या सेवक आपरा,
प्रभु शरणा ही आधार। श्री। ५।

अशरण कहिजे हो, प्रभु विरद विचारो साहिवा,
कांई अहो गरीव-निवाज।
शरण तुम्हारी आयो हो, हुँ चाकर जिन चरणां तणो,
म्हारी सुणिये अरज आवाज। श्री। ६।

तू करुणाकर ठाकुर हो, प्रभु धर्म दिवाकर जग गुरु,
कांई भव-दुःख दुष्कृत टाल।

। दिवसचरिम ।

दिवसचरिमम् पच्चक्खामि, चउव्विहम् पि आहारम्-असणम्, पाणम्, खाइमम्, साइमम् । अन्नत्थणाभोगेणम् सहसागारेणम्, महत्तरागारेणम्, सव्वसमाहिवत्तियागारेणम् वोसिरामि।

। अभिग्रह ।

अभिग्गह पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारम्-असणम् पाणम्, खाइमम्, साइमम् । अन्नत्थणाभोगेणम्, सहसागारेणम्, महत्तरागारेणम्, सव्वसमाहिवत्तियागारेणम् वोसिरामि ।

। निर्विकृतिक (नीवी) ।

विगइयओ पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणम्, सहसागारेणम्, लेवालेवेणम् गिहत्थसंसिट्ठेणम्, उक्खित्तविवेगेणम्, पडुच्चमक्खिएणम्, परिट्ठावणियागारेणं। महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।

। प्रत्याख्यान पारने का पाठ ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियम्.......... पच्चक्खाण कय त पच्चक्खाणम् सम्म काएणं, फासियम्, पालियम्, तीरिय, किट्टियं, सोहियम्, आराहियम् जं च न आराहियम् तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

। दया के पच्चक्खाण ।

द्रव्य से हिंसाआदि पांच आश्रव के, क्षेत्र से लोक प्रमाण क्षेत्र में, काल से सूर्योदय तक, भाव से एक करण एक योग × से पच्चक्खाण, न करेमि कायसा तस्स भंते। पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।